मौलाना मो० मंज़ूर नोमानी

इस्लाम क्या है?

अलफ़ुरक़ान बुक डिपो
नज़ीराबाद, लखनऊ-226018

इस्लाम क्या है? मौलाना मो० मंज़ूर नोमानी

इस्लाम क्या है ?

लेखक

मौलाना मुहम्मद मंज़ूर नोमानी

प्रकाशक

अलफ़ुरक़ान बुक डिपो

114/31, नज़ीराबाद, लखनऊ

पिन : 226 018.

प्रकाशक
अलफ़ुरक़ान बुक डिपो
114/31, नज़ीराबाद,
लखनऊ - 226 018.

एडिशन– 2022
Rs. 140/-

मुद्रक :
काकोरी आफसेट प्रेस
बी० एन० वर्मा रोड,
लखनऊ। 0522.4240926

विषय सूची

दो शब्द

"इस्लाम क्या है ?" जिस का यह हिन्दी प्रकाशन आप के हाथ में है, हिन्दुस्तान के विश्व प्रसिद्ध नामी विद्वान, प्रसिद्ध इस्लामी मासिक पत्रिका 'अलफ़ुरक़ान' के बानी व सरपरस्त हज़रत मौलाना मुहम्मद मन्ज़ूर नोमानी की रचना है । जिसको सन् १९४९ में उन्होंने उर्दू भाषा में लिखा था ।

उन्होंने यह किताब मुसलमानों में इस्लाम की तालीम को आम करने, और इस्लाम के साथ मुसलमानों के सम्बन्ध को गहरा और मज़बूत करने के उद्देश्य से लिखी है । इस छोटी सी किताब में पूरे दीन का ख़ुलासा आ गया है । दीन की ज़रूरी जानकारी ही के लिये नहीं बल्कि सच्चा और मिसाली मुसलमान बनने के लिये भी इस का मुतालिआ (अध्ययन) और इस पर अमल इन्शाअल्लाह काफ़ी है ।

अल्लाह तआला ने अपनी दया से इसको एक ख़ास मक़बूलियत (स्वीकृति) अता फ़रमाई है जो हमारे इस युग में धार्मिक पुस्तकों को बहुत कम ही प्राप्त होती है । पिछले ४२ वर्षों में इसके ६० से अधिक प्रकाशन शाय हो चुके हैं, केवल हमारे इदारे ही से इसकी एक लाख से अधिक प्रतियां निकल चुकी हैं । देश और विदेश की अनेक भाषाओं जैसे गुजराती, कन्ड़ी, बंगाली, अंग्रेज़ी, फ्रान्सीसी, ईरानी, बरमी और कई अन्य भाषाओं में भी इस के अनुवाद बड़ी संख्या में छप चुके हैं ।

हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी में भी इसका पहला एडीशन सन् १९५७ में मजलिस तहक़ीक़ात व नशरियात इस्लाम लखनऊ ने प्रकाशित (शाय) किया था । जिस का अनुवाद सूफ़ी सय्यद अबदुर्रब साहब (मरहूम) ने किया था । इस का यही रूपान्तर अब तक छपता रहा, परन्तु इस के हिन्दी रूपान्तर को वह मक़बूलियत (लोकप्रियता) नहीं मिली जो उर्दू को प्राप्त रही है । अगरचे अब मुसलमानों में भी उर्दू के मुक़ाबले में हिन्दी पढ़ने वालों की मात्रा कहीं अधिक है । इसकी वजह यह बताई गई कि इसका अनुवाद बहुत कठिन हिन्दी में हो गया है जबकि उर्दू किताब की ज़ुबान बहुत आसान है, मामूली पढ़े लिखे भी इसको आसानी से समझ लेते हैं ।

अब हम इसका यह नया एडीशन आसान तरजुमे के साथ ज़रा बड़े साइज़ पर शाय कर रहे हैं ।

आशा है कि मामूली पढ़ा लिखा व्यक्ति भी, चाहे मुसलमान हो या हिन्दू, इस को आसानी से पढ़ सकेगा और उसको इस्लाम और उसकी तालीम के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करने में कोई कठिनाई न होगी ।

हमारे देश के मौजूदा फ़िरक़ेवाराना माहौल का असली इलाज यही है कि इस देश के सभी वासी एक दूसरे के धर्म और तहज़ीब के बारे में सीधी जानकारी हासिल करें । हमारा विचार है कि इस्लाम के बारे में सीधी और सच्ची जानकारी के लिये यह किताब बहुत ही मुफ़ीद साबित होगी । इसलिये हम उन सब लोगों से जिन को इस मक़सद से दिलचस्पी हो यह दरख़्वास्त (निवेदन) करते हैं कि वह इस किताब को ज़्यादा से ज़्यादा फैलाने में हमारी मदद करें । इस मक़सद से जो लोग या जो इदारे इस किताब को ज़्यादा मात्रा में ख़रीदेंगे हम उन को ख़ास रियायत देंगे, जिसकी तफ़सील हम से ख़त लिखकर पूछी जा सकती है ।

दुआ है कि अल्लाह तआला हमारी इस छोटी सी कोशिश को क़ुबूल फ़रमाये और इसको अपने ज़्यादा से ज़्यादा बन्दों की हिदायत और उनके सुधार का ज़रिया बना दे ।

अन्त में यह आजिज़ इस किताब के सब पढ़नेवालों से अपने लिये और अपने सब साथियों के लिये, जिन्होंने इस किताब के नये एडीशन की तैयारी में किसी प्रकार की भी सहायता की है, दुनिया और आख़िरत में भलाई की दुआ की दरख़्वास्त करता है ।

मुहम्मद हस्सान नोमानी
१९ रमज़ानुल मुबारक
सन् १४११ हिजरी
लखनऊ

शुक्रे नेमत

बिसमिल्ला-हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह तआला ने अपने इस आजिज़ बन्दे पर जो बेशुमार व बेहिसाब एहसानात फ़रमाये हैं उनमें से एक इस छोटी सी किताब "इस्लाम क्या है" ? की तालीफ़ भी है ।

सन् १९४७ ई० के इन्क़िलाब के बाद बड़े ज़ोर और शिद्दत के साथ यह ख़्वाहिश पैदा हुई कि इस वक़्त का सब से अहम और सबसे ज़्यादा ज़रूरी दीनी काम यह है कि मुसलमानों में इस्लाम की जानकारी को आम करने और इस्लाम के साथ उनके तअल्लुक़ को गहरा और मज़बूत करने की हर मुमकिन (सम्भव) कोशिश की जाय ।

इस सिलसिले में एक ऐसी किताब लिखने की ज़रूरत भी महसूस हुई जिसमें इस्लाम की तमाम ज़रूरी तालीमात (शिक्षाएं) आ जायें और जिसका तरीक़ा कुछ दावत देने वाला और कुछ तालीम देने वाला हो, और जिसकी ज़ुबान साफ़ और आसान हो, और उसकी मोटाई भी ज़्यादा न हो । इसी ज़रूरत को पूरा करने के लिए यह किताब लिखी गई ।

इस किताब के लिखते वक़्त ख़ास तौर से नज़र के सामने कम पढ़े लिखे या बेपढ़े लिखे आम मुसलमान ही थे और उन्ही की हालत और ज़हनियत का इसमें ज़्यादा ख़याल रखा गया था, लेकिन जब किताब छपकर अलग अलग तबक़ों में पहुंची, तो मालुम हुआ कि अल्लाह तआला के ख़ास फ़ज़्ल व करम से मुसलमानों के क़रीब क़रीब सब ही तबक़ों के लिये यह किताब बराबर मुफ़ीद है ।

इस सिलसिले में इस घटना के ज़िक्र से मुझे बहुत ख़ुशी है कि अल्लाह के कुछ बन्दों ने इस किताब को पढ़कर इसकी इशाअत को एक दीनी ख़िदमत और तब्लीग़ी मेहनत समझते हुए मुसलमानों में इसको फैलाने की सिर्फ़ अल्लाह के लिए कोशिश की । यहां तक कि इसके लिये उन्होंने दौरे भी किये । इन मुख़ालिसीन के इस अल्लाह के लिए मदद का यह आजिज़ बन्दा (लेखक) शुक्रिया भी अदा नहीं कर सकता, उन्होंने जिसके लिए यह सब कुछ किया, वही उनको अपने इस बन्दे की तरफ़ से भी इसका बदला देगा ।

इसी तरह बहुत से मदरसों में यह किताब बग़ैर किसी कोशिश के कोर्स में भी दाख़िल कर ली गई है, फिर अलग अलग ज़ुबानों में इसका तरजुमा भी हुआ, और गुजराती तरजुमा तो (इस नाचीज़ लेखक की इजाज़त से) कई जगह से और कई बार छप चुका है। और सबसे ज़्यादा अजीब व ग़रीब और बहुत ख़ुश करने वाली बात यह है कि बहुत से हिन्दू भाइयों ने इसको पढ़कर इसके हिन्दी एडीशन के लिये बार बार तक़ाज़ा किया।

बम्बई के एक सफ़र में एक उर्दू जानने वाले हिन्दू फ़ौजी अफ़सर ने यह किताब मेरे एक सफ़र के साथी से लेकर पढ़नी शुरू की और ऐसे शौक़ और चाव से पढ़ी कि क़रीब क़रीब पूरी किताब पढ़ डाली, और जब उनको मेरे उन साथी से यह मालूम हुआ कि मैं इस किताब का लेखक हूं तो उन्होंने मुझसे कहा कि इस्लाम से हम हिन्दुओं की सही जानकारी के लिए इस किताब का हिन्दी एडीशन छापना आपका फ़र्ज़ है। उन्होंने कहा कि मैंने इस्लामी शिक्षा की अच्छाइयों को आज ही इस किताब से जाना है, और मेरे दिल पर इसका बहुत असर पड़ा है।

असल में इस किताब की यह मक़बूलियत और असर सिर्फ़ अल्लाह तआला का फ़ज़्ल है, न इसमें लेखक की क़ाबलियत को दख़ल है और न किताब की किसी अच्छाई को।

यहां पहुंचकर एक और घटना को भी ज़ाहिर करने को जी चाहता है कि जिन दिनों मैं यह किताब लिख रहा था, मैं ख़ुद भी इसकी मक़बूलियत के लिये पाबन्दी से दुआ करता था, और अपने बुज़ुर्गों से भी मैंने इसके लिये ख़ास तौर से दरख़्वास्त की थी, मुझे यक़ीन है कि इस किताब की यह तासीर और यह मक़बूलियत अल्लाह के उन बन्दों की दुआओं ही का नतीजा है।

मोहम्मद मंज़ूर नोमानी (अफ़ल्लाहु अन्हु)
लखनऊ।

मुक़द्दमा

अल्लाह व रसूल के वफ़ादारों और दीन के दर्दमन्दों से लेखक की गुज़ारिश

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अगर फ़र्ज़ कीजिये अल्लाह तआला थोड़ी देर के लिये हमारी इस दुनिया में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फिर से भेज दें, और आप (सल्लाहु अलैहि वसल्लम) मुसलमान कहलाने वाली मौजूदा उम्मत की ज़िन्दगी और उसके तौर तरीक़ों को देखें तो आपके दिल पर क्या गुज़रेगी ? और अल्लाह के जिन बन्दों को अब भी आपके लाये हुए दीन से कुछ लगाव है और जिनके दिल दीन के दर्द व फ़िक्र से ख़ाली नहीं हो गये हैं उनको आपका पैग़ाम और हुक्म क्या होगा ?

इस लेखक को इसमें ज़रा भी शक नहीं है कि मुसलमान कहलाने वाली क़ौम की अकसरियत की मौजूदा ग़ैर-इस्लामी ज़िन्दगी और हद से बढ़ी हुई ग़फ़लत व नाफ़रमानी को देखकर आपको उससे बहुत ज़्यादा रूहानी और दिली तकलीफ़ होगी जितनी तायफ़ के शरीर काफ़िरों के पत्थरों से और उहद में ज़ालिम मुशरिकों के ख़ूनी हमलों से हुई थी। और दीन से इख़लास व मुहब्बत का तअल्लुक़ और उसका दर्द व फ़िक्र रखने वाले मुसलमानों को आपका पैग़ाम यही होगा कि मेरी बिगड़ी हुई उम्मत (क़ौम) की दीनी हालत की दुरुस्ती के लिए और उसमें ईमानी रूह और इस्लामी ज़िन्दगी फिर से पैदा करने के लिये जो कुछ तुम इस वक़्त कर सकते हो उसमें कमी न करो। इस मजबूर बन्दे (लेखक) की इस बात को अगर आपका दिल क़ुबूल करता है तो इसी वक़्त फ़ैसला कर लीजिये और अपने जी में तै कर लीजिये कि आइन्दा से इस काम को आप अपनी ज़िन्दगी का हिस्सा बना लेंगे। यह आजिज़ बन्दा (लेखक) अपने दिल के पूरे यक़ीन

के साथ अर्ज़ करता है कि इस वक़्त अल्लाह तआला की ख़ुशी हासिल करने और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूहे पाक को ख़ुश व मुतमइन करने और आपकी दुआयें लेने का यह बिल्कुल ख़ास ज़रीआ है ।

यह छोटी सी किताब -- जो इस वक़्त आपके हाथ में है

यह भी इसी दीनी इसलाही कोशिश के सिलसिले की एक कड़ी है । यह ख़ास तौर से इसी वास्ते लिखी गई है कि मामूली पढ़े लिखे मर्द और औरतें भी इसको ख़ुद पढ़कर या दूसरों से पढ़वाकर और मस्जिदों और मजमओं में आम मुसलमानों को उसके मज़मून सुनाकर अपने में और दूसरों में इमानी रूह और इस्लामी ज़िन्दगी पैदा करने की कोशिश अपनी सलाहियत (योग्यता) और हैसियत (सामर्थ्य) के मुताबिक़ कर सकें, और अल्लाह तआला को बेहद ख़ुश करने वाले और नबी की रूह को बहुत ज़्यादा ख़ुश करने वाले इस काम में अपनी ताक़त के मुताबिक़ हिस्सा लें ।

अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से इस छोटी सी किताब में पूरे दीन का निचोड़ आ गया है और क़ुरआन व हदीस की वह सब शिक्षायें बीस पाठों में जमा कर दी गई हैं जिनसे वाक़िफ़ (अवगत) होकर और जिनपर अमल करके एक आम आदमी न सिर्फ़ अच्छा मुसलमान बल्कि इनशाअल्लाह पूरा मोमिन और अल्लाह का वली बन सकता है । मुसलमानों के अलावा यह किताब उन ग़ैर-मुस्लिमों को भी बेझिझक दी जा सकती है जो इस्लाम को समझने और इस्लाम की शिक्षाओं को जानने का शौक़ रखते हों ।

ग़रीब मुअल्लिफ़ (लेखक) का काम बस इतना ही था कि अल्लाह की मदद व तौफ़ीक़ से उसने यह किताब मुरत्तब कर दी और "कुतुबख़ाना अलफ़ुरक़ान" के काम करने वालों ने (अल्लाह उन्हें अच्छा बदला दे) अपनी इस्तिताअत (सामर्थ्य) की हद तक इसको अच्छे रूप में छापने की ज़िम्मेदारी ली, अब इससे ऊँचे पैमाने पर वह इसलाही काम लेना जिसके लिये यह लिखी गई है, आप सब हज़रात के फैसले और मदद पर निर्भर है ।

अगर इस लेखक के पास माली वसायल होते तो हिन्दुस्तान के हालात का तो ख़ास तौर से तक़ाज़ा था कि लाखों की तादाद में यह किताब छपवाई जाती

और हिन्दुस्तान में रहने वाले हर पढ़े लिखे मुसलमान के पास एक किताब पहुंचा दी जाती । लेकिन अल्लाह का मामला हमेशा से कुछ ऐसा है कि इस क़िस्म की तमन्नाओं को रखने वालों को ज़रीये नहीं दिये जाते और बिला शुबह इसमें भी अल्लाह तआला की बड़ी हिकमतें हैं ।

बहरहाल यह बन्दा तो अपनी इस तमन्ना को पूरा करने से बेबस है, अलबत्ता जिन ईमान वालों और वालियों की नज़र से यह किताब गुज़रे, अगर वह अल्लाह की ख़ुशी और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूह की ख़ुशी और आख़िरत का बे इन्तिहा सवाब हासिल करने की नियत से यह इरादा कर लें कि हम ज़्यादा से ज़्यादा मुसलमानों तक यह किताब या उसके मज़ामीन पहुंचायेंगे तो इनशाअल्लाह बड़ी हद तक असल मक़सद हासिल हो सकता है ।

जैसा कि अभी मैंने इशारा किया, कि हिन्दुस्तान के इस नये दौर में मुसलमानों के और उनकी आने वाली पीढ़ियों के इस्लाम से लगे रहने का तमाम दारोमदार बज़ाहिर अब इसी पर है कि दीन की एहमियत का एहसास व सलीक़ा रखने वाला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हर उम्मती आम मुसलमानों में दीनी रूह और इस्लामी ज़िन्दगी पैदा करने की कोशिश को अपना निजी फ़र्ज़ समझ ले, और इस्लाम की तालीम और दीन के पयाम को एक **एक मुसलमान तक** पहुंचाना अपना वज़ीफ़ा बना ले, इस वक़्त यह किताब इसी ख़ास ज़रूरत के एहसास के तहत लिखी गई है । काश ! अल्लाह के बन्दे इसकी एहमियत को समझें ।

وَاللّٰهُ الْمُوَفِّقُ وَهُوَ الْمُسْتَعَانُ

वल्लाहुल मूफ़िक़ु व हुवल मुस्तआन

दो ज़रूरी बातें :-

(१) शुरू के कुछ पाठों में हदीसों का हवाला देने की पाबन्दी की गई थी फिर बाद में ज़रूरत नहीं समझी, क्योंकि सब हदीसें मिशकात शरीफ़ ही से ली गईं हैं । बहरहाल जिन हदीसों के हवाले का ज़िक्र नहीं किया गया है वह सब मिश्कात

शरीफ़ ही की हैं ।

(२) इस किताब में हदीसों के तरजुमे में तो ज़्यादातर और कहीं कहीं क़ुरआन की आयतों के तरजुमे में भी मैंने पढ़ने वालों की आसानी के लिये मतलब का हासिल (निचोड़) लिख दिया है और लफ़्ज़ी तरजुमे की पाबन्दी नहीं की है ।

१०, रमज़ानुल मुबारक
सन् १३६८ हिजरी - लखनऊ

आजिज़ व आसी
मोहम्मद मंज़ूर नोमानी
(अफ़ल्लाहु अन्हु)

हर मुसलमान के लिये इस्लामी तालीम हासिल करने की ज़रूरत और दीन सीखने की फ़ज़ीलत

भाइयो ! इतनी बात तो आप सभी जानते होंगे कि इस्लाम किसी क़ौम और ज़ात- ब्रादरी का नाम नहीं है कि उस में पैदा होने वाला हर आदमी आप से आप मुसलमान हो और मुसलमान बनने के लिये उसको कुछ न करना पड़े । जिस तरह शैख़ या सय्यद ख़ानदान में जन्म लेने वाला हर बच्चा आपसे आप शैख़ या सय्यद हो जाता है और उसको शैख़ या सय्यद बनने के लिये कुछ करना नहीं पड़ता, बल्कि इस्लाम नाम है उस दीन (धर्म) का और उस तरीक़े पर ज़िन्दगी गुज़ारने का जो अल्लाह के सच्चे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह तआला की तरफ़ से लाये थे और जो क़ुरआन शरीफ़ में और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हदीसों में बताया गया है । इसलिये जो कोई इस दीन को अपनाये और इस तरीक़े पर चले वही असली मुसलमान है और जो लोग न इस दीन को जानते हैं और न इस पर चलते हैं वह असली मुसलमान नहीं हैं तो मालुम हुआ कि असली मुसलमान बनने के लिये दो बातों की ज़रूरत है ।

१. यह कि हम इस्लाम धर्म को जानें और कम से कम उसकी ज़रूरी और बुनियादी बातों का हम को इल्म (ज्ञान) हो ।
२. यह कि हम इनको मानें और इनके अनुसार चलने का फ़ैसला करें । इसी का नाम इस्लाम है और मुसलमान होने का यही मतलब है । और इस्लाम का इल्म हासिल करना (यानी दीन की ज़रूरी बातों का जानना) मुसलमान होने की सबसे पहली शर्त है, इसीलिये हदीस शरीफ़ में आया है:

طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ

त-ल--बुल इल्मि फ़रीज़तुन अला कुल्लि मुस्लिमिन

(इब्न-ए-माजा व बैहक़ी)

दीन का इल्म हासिल करने की कोशिश करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ (अनिवार्य) है ।

और यह बात हमेशा याद रखने की है कि दीन में जो चीज़ फ़र्ज़ है उसका करना इबादत (उपासना) है । इसलिये दीन सीखना और दीन की बातें जानने की कोशिश करना भी इबादत है और अल्लाह के यहां इसका बहुत बड़ा सवाब है और रसूलल्लाह

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इसकी बड़ी बड़ी फ़ज़ीलतें(श्रेष्ठतायें) बयान की हैं ।

एक हदीस में है कि:-

''जो आदमी दीन सीखने के लिये घर से निकले वह जब तक अपने घर **लौट कर न आये अल्लाह के रास्ते में है''** । (तिरमिज़ी)

एक और हदीस में है कि:-

''जो आदमी दीन की तलब (चेष्टा) में और दीनी बातें सीखने के लिये किसी रास्ते पर चलेगा तो अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत का रास्ता आसान कर देगा'' । (मुस्लिम)

एक और हदीस में है कि:-

''दीन की बातें जानने की चाहत और उसको हासिल करने की कोशिश करना पिछले गुनाहों का कफ़्फ़ारह हैं (यानी इससे आदमी के पिछले गुनाह माफ़ हो जाते हैं)'' (तिरमिज़ी)

ख़ुलासा यह है कि दीन का सीखना और इस्लाम की ज़रूरी बातों को जानने की कोशिश करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है । चाहे वह मालदार हो या ग़रीब, जवान हो या बूढ़ा, पढ़ा हो या अनपढ़, मर्द हो या औरत, और इसके लिये जो मेहनत करनी पड़ती है अल्लाह तआला के यहां इसका बहुत बड़ा बदला और सवाब (प्रतिफल) **मिलने वाला है । इसलिये हम सब को ठान लेना** चाहिये कि हम दीन सीखने की **और इस्लाम की ज़रूरी-२ बातों को जानने** की पूरी कोशिश करेंगे ।

जो मुसलमान भाई ज़्यादा उम्र (आयु) होने की वजह से या काम-काज में लगे होने के कारण इस्लामी मदरसे (पाठशाला) में दाख़िल होकर दीन का इल्म हासिल नहीं कर सकते, उनके लिये दीन सीखने और दीन की ज़रूरी बातें जानने का आसान तरीक़ा यह है कि वह पढ़े-लिखे हैं तो दीन की सही किताबें देखा करें और जो पढ़े-लिखे नहीं हैं या बहुत कम पढ़े हैं वह अच्छे पढ़े लिखों से ऐसी किताबें पढ़वाकर सुना करें । अगर घरों में, बैठकों में और मस्जिदों में ऐसी किताबें पढ़ने और सुनने का चलन हो जाये तो हर तबक़े (श्रेणी) के मुसलमानों में दीन का इल्म आम हो सकता है ।

यह छोटी सी किताब सिर्फ़ इसी वजह से और इसी मक़सद से लिखी गई है ।इस **में दीन** की सब ज़रूरी ज़रूरी बातें और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वह हिदायतें (निर्देश) जो हर मुसलमान को जाननी चाहियें बहुत आसान ज़बान (भाषा) में लिखी गई हैं ।

आओ इन बातों को ख़ुद भी सीखें, दूसरों को भी सिखलायें और बतलायें और

दुनिया में इन इस्लामी बातों को फैलाने की कोशिश को अपने जीवन का मक़सद (उद्देश्य) बनायें ।

हदीस शरीफ़ में है कि:-

''जो आदमी दीन सीखने और जानने की इसलिये कोशिश करे कि उसके द्वारा वह इस्लाम को ज़िन्दा करे (यानी दूसरों में इसको फैलाये और लोगों को इसके मुताबिक़ चलाये) और इसी बीच में वह मर जाये तो आख़िरत में वह पैग़म्बरों के इतना क़रीब होगा कि उसके और पैग़म्बरों के बीच केवल एक दर्जे का फ़र्क़ होगा'' । (दारमी)

अल्लाह तआला हम सबकी मदद करे कि हम ख़ुद दीन सीखें, दूसरों को सिखायें, ख़ुद दीन पर चलें और अल्लाह के दूसरे बन्दों को उसपर चलाने की कोशिश करें ।
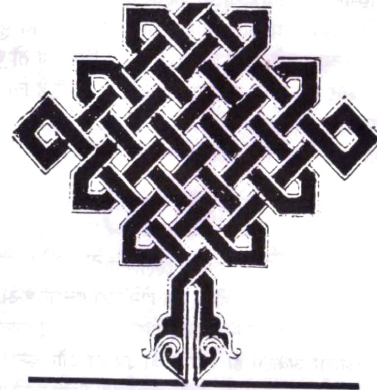
पहला सबक़

कलिमए तय्यिबा

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللّٰهِ

ला-इला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

(अल्लाह के सिवा कोई इबादत (पूजा) और बन्दगी के लायक़ नहीं और मुहम्मद(स०) उसके रसूल हैं)

भाइयो ! यही कलिमा इस्लाम का दरवाज़ा और दीन व ईमान की जड़ बुनियाद है । इसको क़ुबूल करके और ऐतेक़ाद (विश्वास) के साथ पढ़कर ज़िन्दगी भर का काफ़िर (अविश्वासी) और मुशरिक (बहुदेव-वादी) भी मोमिन (ईमान वाला) और मुसलमान और निजात का हक़दार हो जाता है मगर शर्त यह है कि इस कलिमे में अल्लाह तआला की तौहीद (ऐकेश्वरवाद) और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (दूतता) का जो इक़रार है उसको उसने समझकर माना और क़ुबूल किया हो । अगर कोई व्यक्ति तौहीद और रिसालत को बिल्कुल भी न समझा हो और बिना मतलब समझे उसने यह कलिमा पढ़ लिया हो तो वह अल्लाह की नज़र में मोमिन और मुसलमान न होगा । इस लिये ज़रूरी है कि हम इस कलिमा का मतलब समझें ।

इस कलिमा के दो हिस्से हैं । पहला हिस्सा है:-

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ

"ला इला ह इल्लल्लाहु"

इसमें अल्लाह तआला की तौहीद (एक होने) का इक़रार है और इसका मतलब यह है कि अल्लाह तआला के सिवा कोई ऐसा नहीं है जो इबादत के लायक़ हो । बस अल्लाह तआला अकेला ही ऐसा है जो इबादत और बन्दगी के लायक़ है । क्योंकि वही हमारा पालने वाला और रोज़ी देने वाला है । वही मारने वाला और जिलाने वाला है । बीमारी और सेहत, अमीरी और ग़रीबी और हर तरह का बनाव-बिगाड़ और फ़ायदा व नुक़सान सिर्फ़ उसी के क़ब्ज़े में है और उसके सिवा आसमान व ज़मीन में जो हस्तियां (जीव) हैं चाहे आदमी हों या फ़रिश्ते सब उसके बन्दे और उसके पैदा किये हुये हैं । उसकी ख़ुदाई में कोई उसका शरीक व साझी नहीं है और न उसके

आदेशों में उलट - पलट का किसी को हक़ है । और न उसके कामों में कोई दख़ल दे सकता है । इसलिये वही और केवल वही इस लायक़ है कि उसकी इबादत की जाये और उसी से लौ लगायी जाये । मुसीबतों तथा कठिनाइयों और अपनी सभी ज़रूरतों में गिड़गिड़ा-२ कर उसी से दुआ की जाये और मांगा जाये । और वह ही हक़ीक़त में मालिक और सारी दुनिया का बादशाह है और सब हाकिमों-बादशाहों से ऊंचा और बड़ा बादशाह है । इसलिये ज़रूरी है कि उसके हर हुक्म को माना जाय और पूरी वफ़ादारी के साथ उसके हुक्मों पर चला जाय, उसके हर हुक्म के सामने किसी दूसरे का कोई हुक्म कभी भी न माना जाये । चाहे वह कोई हो, चाहे वह अपना बाप हो या अपने समय का हाकिम (राजाधिकारी) या ब्रादरी का चौधरी हो या काई प्यारा दोस्त हो या अपने दिल की चाहत हो, इसलिये जब हमने मान लिया और जान लिया कि केवल अल्लाह ही इबादत के लायक़ है और हम केवल उसी के बन्दे हैं तो चाहिये कि हमारा अमल (कर्म) भी उसी के मुताबिक़ हो और संसार के लोग हमें देखकर समझ लिया करें कि यह केवल अल्लाह के बन्दे हैं जो अल्लाह के हुक्मों पर चलते हैं और अल्लाह के लिये जीते और मरते हैं । ख़ुलासा यह है कि ला इला ह इल्लल्लाह हमारा इक़रार और ऐलान हो । ला इला ह इल्लल्लाह हमारा यक़ीन (विश्वास) और हमारा ईमान हो । ला इला ह इल्लल्लाह हमारा अमल और हमारी शान हो ।

भाइयो ! यह ला इला ह इल्लल्लाह दीन की बुनियाद की पहली ईंट और सब पैग़म्बरों का सबसे ज़रूरी और पहला सबक़ है और दीन की सभी बातों में इसका दर्जा सबसे ऊंचा है । हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मशहूर हदीस है । आपने फ़रमाया:-

"ईमान के सत्तर से भी ऊपर दर्जे हैं और उनमें सबसे ऊंचा और बड़ा ला इला ह इल्लल्लाह का मानना है" । (बुख़ारी व मुस्लिम)

इसीलिये ज़िक्रों में भी सबसे अच्छा और ऊंचा ला इला ह इल्लल्लाह का ज़िक्र है । एक दूसरी हदीस में है,

"कि सब ज़िक्रों में सबसे अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) और आला (उच्चतर) ज़िक्र ला इला ह इल्लल्लाह है" । (इब्न-ए- माजा व नसाई)

एक हदीस में आया है कि अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के एक सवाल के जवाब में फ़रमाया कि:-

"ऐ मूसा ! अगर सातों आसमान और सातों ज़मीनें और जो कुछ इनमें है एक पलड़े में रख दिये जायें और ला इला ह इल्लल्लाहु दूसरे पलड़े में, तो ला इला ह इल्लल्लाहु का पलड़ा ही भारी रहेगा" (शरहुस्सुन्नह)

भाईयो ! ला इला ह इल्लल्लाहु में यह फ़ज़ीलत और भारीपन इसी लिये है कि इसमें अल्लाह तआला के एक होने का इक़रार है । अर्थात केवल उसी की इबादत और बन्दगी करने और उसी के हुक्म पर चलने और उसी को अपना मक़सूद (लक्ष्य) व मतलूब (प्रयोजन) बनाने और उसी से लौ लगाने का फ़ैसला और वचन है और यही तो ईमान की जान है । इसी लिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुसलमानों को हुक्म है कि वे इस कलिमे को बार बार पढ़कर अपना ईमान ताज़ा किया करें । बहुत मशहूर हदीस है कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि:-

"लोगो अपने ईमान को ताज़ा करते रहा करो"

कुछ सहाबा (हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम के साथी) ने पूछा कि:-

'ऐ अल्लाह के रसूल ! हम किस तरह अपने ईमानों को ताज़ा किया करें ?

आपने फ़रमाया कि ला इलाह इल्लल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ा करो" (मुसनद ए- अहमद, जमउल फ़वाइद)

ला इला ह इल्लल्लाह के पढ़ने से ईमान के ताज़ा होने की यही वजह है कि इसमें अल्लाह तआला की तौहीद अर्थात सिर्फ़ उसी की इबादत और सबसे ज़्यादा उसी पर मर मिटने और उसी से प्रेम करने और उसी का कहना मानने का वचन और इक़रार है । और जैसा कि ऊपर कहा गया, यही तो ईमान की जान है । इसलिये हम जितना भी समझ के और ध्यान के साथ इस कलिमे को पढ़ेंगें उतना ही हमारा ईमान ताज़ा और हमारा वचन पक्का होगा और खुदा ने चाहा तो फिर ला इलाह इल्लल्लाह हमारा अमल और हमारा हाल हो जायेगा । अत: भाइयो ! तय कर लो कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म और कहने के मुताबिक़ हम इस कलिमे को ध्यान के साथ सच्चे दिल से ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ा करेंगें ताकि हमारा ईमान ताज़ा होता रहे और हमारा पूरा जीवन ला इला ह इल्लल्लाह के सांचे में ढल जाये ।

यहां तक कलिमए तय्यिबा के सिर्फ़ पहले हिस्से का बयान हुआ ।

हमारे कलिमे का दूसरा हिस्सा है

مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللّٰهِ

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

इसमें हज़रत मुहम्मद सल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ुदा का रसूल होने का इक़रार और ऐलान है । हुज़ूर (स०) के रसूल होने का मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने आपको संसार के सुधार के लिये भेजा था और आपने जो कुछ बताया और जो

ख़बरें दीं वह सब बिल्कुल सही और सच हैं । जैसे क़ुरआन का खुदा की तरफ़ से होना, फरिश्तों का होना, क़यामत का आना, क़यामत के बाद मुर्दों का फिर से ज़िन्दा किया जाना और अपने कर्म के मुताबिक़ जन्नत या दोज़ख़ में जाना आदि ।

सारांश यह है कि आप (स०) के रसूल होने का मतलब यही है कि आपने जो बातें इस तरह की दुनिया को बताई हैं वह सब ख़ुदा की तरफ़ से बताई हैं और वह सब बिल्कुल सच और सही हैं । जिन पर शक आदि नहीं किया जा सकता और इसी तरह जो हुक्म व निर्देश दिये वह सब असिल में ख़ुदा के हुक्म व निर्देश हैं जो आप पर उतारे गये थे । इसी से आपने यह समझ लिया होगा कि किसी रसूल को मानने से आप से आप यह ज़रूरी हो जाता है कि उसके हर हुक्म और निर्देश को माना जाये, क्योंकि अल्लाह तआला किसी को अपना रसूल इसीलिये बनाता है कि उसके ज़रिये अपने बन्दों को वह हुक्म भेजे जिनपर वह बन्दों को चलाना चाहता है ।

क़ुरआन शरीफ़ में फरमाया गया है कि:-

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللّٰهِ

(वमा अरसलना मिर्रसूलिन इल्ला लियुता अ बिइज़्न निल्लाह)

और हमने हर रसूल को इसी लिये भेजा कि हमारे हुक्म से उसका कहना माना जाये और उसके हुक्मों पर चला जाये ।

ख़ुलासा यह है कि रसूल पर ईमान लाने और उसको रसूल मानने का यही मतलब है कि उसकी हर बात को बिल्कुल सच माना जाये और उसकी तालीम (शिक्षा) व हिदायत (मार्गदर्शन) को ख़ुदा की तालीम व हिदायत समझा जाये और उसके हुक्मों पर चलने का फ़ैसला कर लिया जाये । इस लिये अगर कोई व्यक्ति कलिमा तो पढ़ता हो मगर अपने बारे में उसने यह तय न किया हो कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बताई हुई हर बात को बिल्कुल सच मानूंगा और उनके हुक्मों पर चलूंगा तो वह आदमी असिल में मोमिन और मुसलमान ही नही है और शायद अपने मुसलमान होने का मतलब ही नहीं समझा है । खुली हुई बात है कि जब हमने कलिमा पढ़के हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ुदा का सच्चा रसूल मान लिया तो हमारे लिये ज़रूरी हो गया कि हम उनके हुक्मों पर चलें और उनकी सब बातें मानें और उनकी लाई हुई शरीयत पर चलें ।

लिमा शरीफ़ असल में एक एहद **(प्रतिज्ञा)** और इक़रार है : -

कलिमे शरीफ़ के दोनों हिस्से (१) ला इला ह इल्लल्लाह (२) मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह का जो मतलब ऊपर बयान किया गया है उससे आपने समझ लिया होगा कि असिल में यह कलिमा एक इक़रार और ऐहद (प्रतिज्ञा) है इस बात का कि मैं सिर्फ़ अल्लाह तआला को सच्चा ख़ुदा और इबादत के लायक़ मालिक मानता हूं और दुनिया व आख़िरत की हर चीज़ को उसी के क़ब्ज़े और बस में समझता हूं इस लिये मैं उसकी और सिर्फ़ उसीकी इबादत और बन्दगी करूंगा और बन्दे(दास) को जिस तरह अपने मालिक के हुक्मों पर चलना चाहिये उसी तरह उसके हुक्मों पर चलूंगा । हर चीज़ से ज़्यादा मैं उससे मोहब्बत रखूंगा । और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मैं ख़ुदा का सच्चा रसूल मानता हूं । अब मैं एक उम्मती (अनुयायी) की तरह उनकी आज्ञा पालन और पैरवी करूंगा और उनकी लाई हुई शरीयत पर चलता रहूंगा । असल में इसी ऐहद और इक़रार का नाम ईमान है और तौहीद व रिसालत की गवाही देने का भी यही मक़सद और मतलब है ।

कलिमा पढ़ने वाले हर मुसलमान को चाहिये कि वह अपने को इस ऐहद और गवाही में बंधा हुआ समझे । उसकी ज़िन्दगी इसी उसूल के मुताबिक़ गुज़रे ताकि वह अल्लाह की नज़र में एक सच्चा मोमिन व मुस्लिम हो और निजात (मुक्ति) व जन्नत का हक़दार बन सके ।

ऐसे ख़ुश-नसीबों के लिये बड़ी बिशारतें (शुभ-सूचनायें) दी गई हैं जो कलिमे शरीफ़ के दोनों हिस्सों को सच्चे दिल से क़ुबूल करें और दिल, ज़ुबान व अमल से इसकी गवाही दें । हज़रत अनस (र०)से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुआज़ (र०) से फ़रमाया कि:-

"जो कोई सच्चे दिल से ला इला ह इल्लल्लाहु मुहम्मर्रसूलुल्लाह की गवाही दे तो अल्लाह तआला ने दोज़ख़ की आग उसपर हराम कर दी है" ।

भाईयो ! इस कलिमे की हक़ीक़त और इसके भारीपन को अच्छी तरह समझ के दिल व ज़बान से इसकी गवाही दो और फ़ैसला करलो कि अपनी ज़िन्दगी इस गवाही के मुताबिक़ गुज़ारेंगें, ताकि हमारी गवाही झूठी न ठहरे, क्योंकि इस गवाही ही पर हमारे ईमान व इस्लाम और हमारी निजात का दारो- मदार है इसलिये चाहिये कि:-

लाइला ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह हमारा पक्का ऐतेक़ाद (विश्वास) और ईमान हो । ला इला ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह हमारा इक़रार और ऐलान हो, ला इला ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह हमारी ज़िन्दगी का उसूल और पूरी दुनिया के लिये हमारा पैग़ाम हो ।

दूसरा सबक़

नमाज़

नमाज़ की एहमियत और उसकी तासीर: -

अल्लाह और रसूल पर ईमान लाने और तौहीद व रिसालत की गवाही देने के बाद सबसे पहला और सबसे बड़ा फ़र्ज इस्लाम में नमाज़ है । नमाज़ अल्लाह तआला की ख़ास इबादत (उपासना) है जो दिन में पांच बार पढ़ना ज़रूरी है। क़ुरआन शरीफ़ की पचासों आयतों में और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सैकड़ों हदीसों में नमाज़ पर बहुत ज़ोर दिया गया है और उसको दीन का सुतून [स्तम्भ] और दीन की बुनियाद कहा गया है ।

नमाज़ की यह ख़ास तासीर [प्रभाव] है कि अगर वह ठीक तरीक़े से पढ़ी जाये और यह समझते हुये कि अल्लाह तआला मौजूद है और देख रहा है । पूरे ध्यान और मन से पढ़ी जाये तो उससे आदमी का दिल पाक साफ़ हो जाता है उसकी ज़िन्दगी सुधर जाती है, बुराईयां उससे छूट जाती हैं, नेकी व सच्चाई की मोहब्बत और ख़ुदा का डर उसके दिल में पैदा हो जाता है, इसीलिये इस्लाम में दूसरे सब फ़र्ज़ों से ज़्यादा इसके लिये हुक्म व ताकीद है । और इसलिये रसूलुल्लाह [स०] का दस्तूर [नियम] था कि जब कोई आपके पास आकर इस्लाम क़ुबूल करता तो आप तौहीद की तालीम [शिक्षा] के बाद उससे पहला ऐहद [वचन] नमाज़ का ही लिया करते थे । ख़ुलासा यह है कि कलिमे के बाद नमाज़ ही इस्लाम की बुनियाद है ।

**नमाज़ न पढ़ना और नमाज़ न पढ़ने वाले,
रसूलुल्लाह [स०] की नज़र में: -**

हदीसों से मालूम होता है कि रसूलुल्लाह [स०] नमाज़ न पढ़ने को कुफ़्र की बात और काफ़िरों का तरीक़ा बताते थे और फ़रमाते थे कि "जो व्यक्ति नमाज़ न पढ़े उसका दीन में कोई हिस्सा नहीं" ।

जैसा कि सही मुस्लिम की एक हदीस में है कि हुज़ूर [स०] ने फ़रमाया :-

"बन्दे और कुफ़्र के **बीच में नमाज़ छोड़** देने का ही फ़ासला है" ।

मतलब यह है कि बन्दा अगर नमाज़ छोड़ देगा तो कुफ़्र से मिल जायेगा और उसका यह अमल [कार्य] काफ़िरों जैसा होगा । एक दूसरी हदीस में आया है कि:-

"**इस्लाम में उसका** कुछ भी हिस्सा नहीं जो नमाज़ न पढ़ता हो"

[दुर्रे मन्सूर मुस्नदे बज़्ज़ार के हवाले से]

नमाज़ पढ़ना कितनी बड़ी दौलत और कैसी ख़ुशक़िस्मती है और नमाज़ छोड़ना कितनी बड़ी तबाही और कैसी बदबख़्ती [दुर्भाग्यशीलता] है, इसका अन्दाज़ा करने के लिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह एक हदीस और सुनिये । एक दिन रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ के पढ़ने के विषय पर ज़ोर देते हुये फ़रमाया कि :-

" जो कोई नमाज़ को अच्छी तरह और पाबन्दी से पढ़ेगा, तो वह उसके लिये क़यामत में नूर [रौशनी] और उसके लिये [ईमान और इस्लाम का] सुबूत होगी और निजात [मुक्ति] दिलाने का ज़रिया [साधन] बनेगी और जो कोई उसको पूरे ध्यान और पाबन्दी से नहीं पढ़ेगा तो न तो वह उसके लिये रौशनी होगी और न सुबूत बनेगी और न वह उसको अज़ाब [दण्ड] से बचायेगी और वह शख़्स क़यामत में क़ारून, फ़िर-औन, हामान और उबय्य बिन ख़ल्फ़ के साथ होगा" । [मुसनद - ए - अहमद]

भाईयो ! हम में से हर एक को सोचना चाहिये कि अगर हमने अच्छी तरह पाबन्दी से नमाज़ पढ़ने की आदत न डाली तो फिर हमारा अंजाम क्या होने वाला है ।

नमाज़ न पढ़ने वालों की क़यामत के मैदान में रुसवाई: -

नमाज़ न पढ़ने वालों को क़यामत के दिन जो सबसे बड़ी रूसवाई उठाना पड़ेगी उसको क़ुरआन शरीफ़ की एक आयत [वाक्य] में इस तरह बयान किया गया है ।

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٤٢﴾ خَاشِعَةً
أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۖ وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ وَهُمْ سَالِمُونَ ﴿٤٣﴾

यौ म यकशिफ़ु अनसाक़िन व युदऔ न इलस्सुजूदि फ़ला यसततीऊ न खाशिअतन अबसारूहुम तर्हक़ुहुम ज़िल्लह वक़द कानू युदऔ न इलस्सुजूदि वहुम सालिमून [सूरए क़लम]

इस आयत का मतलब यह है कि क़यामत के दिन जबकि बहुत सख़्त घड़ी होगी और संसार के आरम्भ से अन्त तक दुनिया में आने वाले सब लोग क़यामत के मैदान में इकट्ठा होंगे तो अल्लाह तआला की एक ख़ास तजल्ली (रोशनी) प्रकट होगी और उस समय पुकारा जायेगा कि सब लोग अल्लाह के सामने सजदे में गिर जायें, तो जो ख़ुशनसीब ईमान रखने वाले दुनिया में नमाज़ें पढ़ते थे, और अल्लाह को सजदे किया करते थे, वह तो तुरन्त सजदे में चले जायेंगे लेकिन जो लोग तन्दरुस्त और हट्टे-कट्टे होते हुये नमाज़ें नहीं पढ़ते थे उनकी कमरें उस समय तख़्ते की तरह कड़ी कर दी जायेंगी और वह काफ़िरों के साथ खड़े रह जायेंगे सजदा न कर सकेंगे और उन पर बहुत बड़ी ज़िल्लत व रुसवाई [अपमान] का अज़ाब छा जायेगा, उनकी निगाहें नीची होंगी और वह आंख उठाकर कुछ देख न सकेंगे, दोज़ख़ के अज़ाब से पहले ही यह अज़ाब उनको क़यामत के मैदान में झेलना होगा । अल्लाह तआला हम सबको इस अज़ाब से बचाये ।

हक़ीक़त में नमाज़ न पढ़ने वाला व्यक्ति एक तरह से ख़ुदा का बाग़ी है इसलिये उसको जितना भी ज़लील किया जाय और जितना भी अज़ाब दिया जाये वह उसके लायक़ है । उम्मत के कुछ इमामों के नज़दीक तो नमाज़ छोड़ने वाले लोग दीन से निकल जाने वाले हैं और दीन छोड़ने वालों की तरह क़त्ल किये जाने के क़ाबिल हैं ।

भाईयो ! हम सबको अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि बिना नमाज़ के मुसलमान होने का दावा बे-बुनियाद है । नमाज़ पढ़ना ही वह ख़ास इस्लामी अमल है जो अल्लाह **तआला से हमारा सम्बन्ध** जोड़ता है और हमको उसकी रहमत (दया) का मुस्तहिक़ **बनाता है** ।

नमाज़ की बरकतें: -

जो बन्दा दिन में पांच वक़्त अल्लाह के सामने हाथ बांधकर खड़ा होता है, उसकी हम्द व सना [प्रशंसा व विनय] करता है, उसके सामने झुकता है, और सजदे में गिरता है, दुआयें करता है तो वह अल्लाह तआला की ख़ास रहमत और प्रेम का मुस्तहिक़ (पात्र) हो जाता है और इन नमाज़ों से उसके गुनाह माफ़ होते हैं, उसके दिल में नूरानियत पैदा होती है, उसका जीवन मैल कुचैल से पाक साफ़ हो जाता है । एक हदीस में है कि :- रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार बड़ी अच्छी मिसाल (उदाहरण) देकर फ़रमाया:-

"बताओ अगर तुममें से किसी के दरवाज़े पर नहर बह रही हो जिसमें वह

हर दिन में पांच बार नहाता हो तो क्या उसके शरीर पर कुछ भी मैल रहेगा'' लोगों ने जवाब दिया, ''हुज़ूर (स०) कुछ भी नहीं रहेगा'' आपने फ़रमाया, ''बस पांचों नमाज़ों की मिसाल ऐसी ही है ।अल्लाह तआला उनकी बरकत से गुनाहों, ग़लतियों को मिटा देता है'' । [बुखारी व मुस्लिम]

जमाअत की ताकीद और फ़ज़ीलत:-

रसूलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों से यह भी पता चलता है कि नमाज़ की असली फ़ज़ीलत [श्रेष्ठता] और बरकत हासिल होने के लिये जमाअत से नमाज़ पढ़ना भी ज़रूरी है, और इसके लिये इतनी कड़ी ताकीद है कि जो लोग सुस्ती या लापारवाही से जमाअत में शरीक नहीं होते उनके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार फ़रमाया था कि:-

''मेरा जी चाहता है कि मैं उनके घरों में आग लगवा दूं'' [सही मुस्लिम]

बस इसी एक हदीस से अनुमान लगाया जा सकता है कि जमाअत का छोड़ना अल्लाह और रसूल को कितना नापसन्द है ।

और सही हदीस में आया है कि:-

''जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने का सवाब अकेले पढ़ने से सत्ताईस गुना अधिक होता है''[1] [बुख़ारी व मुस्लिम]

पाबन्दी के साथ जमाअत [सामूहिक रूप] से नमाज़ पढ़ने में आख़िरत के सवाब के अलावा और भी बड़े-बड़े फ़ायदे हैं जैसे :

१. जमाअत की पाबन्दी से आदमी को समय की पाबंदी करने की आदत पड़ती है ।

२. दिन-रात में पांच बार मुहल्ले के सब मुसलमान भाई एक जगह इकट्ठे हो जाते हैं जिससे बड़े-बड़े फ़ायदे उठाये जा सकते हैं । ३. जमाअत की पाबंदी करने से नमाज़ की पूरी पाबंदी हो जाती है और जो लोग जमाअत की पाबंदी नहीं करते ज़्यादातर देखा गया है उनकी नमाज़ें छूट जाती हैं । ४. और एक बहुत बड़ा फ़ायदा यह है कि जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने वाले हर आदमी की नमाज़ पूरी जमाअत की नमाज़ का हिस्सा बन जाती है जिसमें अल्लाह के ऐसे नेक और प्यारे बन्दे भी होते हैं जिनकी नमाज़ें बड़ी अच्छी, ख़ुशु व ख़ुज़ु [लीनता तथा धुन-ध्यान] वाली होती हैं और अल्लाह

---

१. ध्यान रहे कि जमाअत के बारे में यह ताकीद और फ़ज़ीलत (उत्तमता) केवल पुरुषों के लिये है । हदीस शरीफ़ में साफ़ मौजूद है कि औरतों को अपने घर में नमाज़ पढ़ने का सवाब मस्जिद में पढ़ने से ज़्यादा मिलता है ।

तआला की शान-ए-करीमी [दयालुता] से यही उम्मीद है कि जब वह जमाअत के कुछ लोगों की नमाज़ें क़ुबूल फ़रमाएगा तो उन्हीं के साथ पढ़ने वाले दूसरे लोगों की नमाज़ें भी कुबूल कर लेगा चाहे उनकी नमाज़ें उस दर्जे की न हों । अतः हम सब को सोचना चाहिये कि बिना किसी बड़ी मजबूरी के जमाअत छोड़ देना कितने बड़े सवाब से और कितनी बरकतों से अपने को महरूम [वंचित] कर देना है ।

ख़ुशु व ख़ुज़ु की एहमियत:-

ख़ुशु व ख़ुज़ु के साथ नमाज़ पढ़ने का मतलब यह है कि यह समझते हुये कि अल्लाह तआला मौजूद है और देख रहा है, नमाज़ इस तरह पढ़ी जाये कि दिल उसकी मुहब्बत से भरा हुआ हो और उसके डर तथा उसकी बड़ाई से सहमा हुआ हो जैसे कोई मुजरिम [अपराधी] किसी बड़े से बड़े अधिकारी और बादशाह के सामने खड़ा होता है । नमाज़ पढ़ने वाला जब नमाज़ में खड़ा हो तो ध्यान करे कि मैं अपने अल्लाह के सामने हाज़िर हूं और उसकी ताज़ीम [प्रतिष्ठा] में खड़ा हूं । रूकू करे तो समझे कि मैं उसी के सामने झुक रहा हूं और इसी प्रकार जब सजदा करे तो ख़्याल करे कि मैं उसकी सेवा में सर टेके हुये हूं और उसके सामने अपनी ज़िल्लत और कमज़ोरी (तुच्छता व असमर्थता) प्रकट कर रहा हूं और बहुत अच्छा तो यह है कि खड़े होने की हालत में और रूकू व सजदे में जो कुछ पढ़े उसको समझ-समझकर पढ़े । वास्तव में नमाज़ का असली मज़ा तब ही आता है जबकि जो कुछ उसमें पढ़ा जाये उसका मतलब समझते हुये पढ़ा जाये । (नमाज़ में जो कुछ पढ़ा जाता है उसके मतलब याद कर लेना बड़ा आसान है)

नमाज़ में ख़ुशु-ख़ुज़ु और अल्लाह की तरफ़ दिल का झुकाओ असल में नमाज़ की रूह और जान है और अल्लाह के जो बन्दे ऐसी नमाज़ पढ़ें उनकी निजात और कामयाबी यक़ीनी है । क़ुरआन पाक में है कि :-

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ

क़द अफ़ लहल मूमिनू नललज़ी न हुम फ़ी सलातिहिम ख़ाशिऊन

सफ़ल वह ईमान वाले हैं जो अपनी नमाज़ें ख़ुशु [लीनता] के साथ पढ़ते हैं ।

और एक हदीस शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:-

पांच नमाज़ें अल्लाह तआला ने फ़र्ज़ [अनिवार्य] की हैं जिसने अच्छी तरह इनके लिये वुज़ू किया और ठीक समय पर इनको पढ़ा और रूकू व सजदा

जैसे करना चाहिये वैसे ही किया और बहुत ध्यान के साथ उनको अदा किया तो ऐसे व्यक्ति के लिये अल्लाह का वचन है कि वह उसको माफ़ कर देगा और जिसने ऐसा न किया ता उसके लिये अल्लाह का कोई वायदा नहीं है, चाहेगा तो उसको माफ़ कर देगा और चाहेगा तो सज़ा देगा ।

[मुस्नद- ए- अहमद व सुनन-ए- अबू दाऊद]

अत: अगर हम चाहते हैं कि आख़िरत के अज़ाब से बचें और अल्लाह तआला हम को बख़्श दे तो हमको चाहिये कि इस हदीस शरीफ़ के मुताबिक़ पांचों पहर की नमाज़ अच्छे से अच्छे ढंग से पढ़ा करें ।

नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा: -

जब नमाज़ का समय आये तो हमें चाहिये कि पहले अच्छी तरह वुज़ू करें और यह समझें कि अल्लाह तआला के दरबार में हाज़िर होने के लिये और उसकी इबादत करने के लिये इस तरह पाक होना ज़रूरी है । अल्लाह तआला का यह उपकार है कि उसने वुज़ू में भी हमारे लिये बड़ी रहमतें और बरकतें रखी हैं । हदीस शरीफ़ में है कि वुज़ू में शरीर के जो अंग और हिस्से धोये जाते हैं, उन अंगों द्वारा होने वाले पाप वुज़ू ही की बरकत से माफ़ हो जाते हैं,और इन गुनाहों का नापाक असर वुज़ू के पानी से धुल जाता है ।

वुज़ू के बाद जब हम नमाज़ के लिये खड़े होने लगें तो चाहिये कि दिल में अच्छी तरह यह ध्यान जमायें कि हम गुनाहगार बन्दे अपने उस मालिक और माबूद [पूज्य] के सामने खड़े हो रहे हैं जो हमारे खुले-छुपे सब हाल जानता है और क़यामत के दिन हमको उसके सामने हाज़िर होना है । फ़िर जिस समय की नमाज़ पढ़नी हो खास उसी को ध्यान में रखकर नियमानुसार कानों तक हाथ उठाकर दिल व ज़बान से कहना चाहिये :

اللّٰهُ أَكْبَر

----अल्लाहु अकबर ---- [अल्लाह बहुत बड़ा है]

फिर हाथ बांधकर अल्लाह के सामने हाज़िर होने का पूरा ध्यान करके पढ़ना चाहिये

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ
وَلَا إِلٰهَ غَيْرُكَ

सुबहा न क अल्लाहुम म वबि हमदि क वतबा रकसमु क वतआला जद्दु क वलाइला ह ग़ैरू क ।

ऐ मेरे अल्लाह ! पाक है तू, और तेरे ही लिये है हर तारीफ़ [प्रशंसा] और बरकत वाला है तेरा नाम और ऊंची है तेरी शान और तेरे अलावा कोई माबूद [पूज्य] नहीं ।

أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम

[मैं अल्लाह की पनाह (शरण) लेता हूं शैतान मरदूद से]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस-मिल्लाह-हिर-रहमानिर्रहीम

[अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान, बहुत रहमत वाला है]

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ
إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝ اٰمِين

अल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ लमीन । अर्रहमानिर्रहीम । मालिकि यौमिद्दीन । इय्या क नाबुदु वइय्या क नस्तईन । इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम । सिरतल्लज़ी न अनअम त अलैहिम । ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम वलज़्ज़ाल्लीन । आमीन ।

सारी तारीफ़ें अल्लाह के लिये हैं जो सब संसारों का पालने वाला है, बड़ी रहमत [दया] वाला है और बहुत मेहरबान है, बदले के दिन का मालिक है । हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझसे ही मदद मांगते हैं ऐ अल्लाह ! हमको सीधे रस्ते पर चला, उन अच्छे बन्दों के रास्ते पर जिनपर तूने फ़ज़्ल (उपकार) किया, न उनपर तेरा ग़ज़ब (प्रकोप) व गुस्सा हुआ और न वह (सीधे रास्ते से) भटके । ऐ अल्लाह मेरी यह दुआ क़ुबूल करले ।

इसके बाद कोई सूरत (क़ुरआन का अध्याय) या किसी सूरत का कुछ हिस्सा पढ़े । हम यहां क़ुरआन शरीफ़ की छोटी-छोटी चार सूरतें अर्थ के साथ लिखते हैं ।

وَالْعَصْرِ ۝ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۝ إِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝

वलअस्रि इन्नल इन्सा न लफ़ी ख़ुसरिन इल्ललज़ी न आ मनू व अमिलुस्सालिहाति व तवासौ बिल्हक़्क़ि व तवासौ बिस्सब्र

क़सम है ज़माने की सारे इन्सान घाटे में हैं (और उनका अन्जाम बहुत बुरा होने वाला है) केवल उनको छोड़कर जो ईमान लाये और उन्होंने अच्छे अमल [कार्य] किये और एक दूसरे को हक़ और सब्र [धैर्य] की वसीयत की ।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۞ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۞ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۞

कुल हुवल्लाहु अहद । अल्लाहुस्समद । लम यलिद वलम यूलद । वलम यकुल्लहु कुफ़ुवन अहद ।

कहो अल्लाह एक है । अल्लाह बे-नियाज़ (अनाश्रित) है । वह किसी का मोहताज नहीं सब उसके मोहताज हैं न उसके कोई संतान है और न वह किसी की संतान है । और न कोई उसके बराबर है ।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۞ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۞ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۞ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۞ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۞

कुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़ । मिनशर्रि मा खलक़ । व मिन शर्रि ग़ासिक़िन इज़ा वक़ब । व मिन शर्रिन नफ़्फ़ासाति फ़िल उक़द । व मिन शर्रि हासिदिन इज़ा हसद ।

कहो मैं सुबह सवेरे की रौशनी के रब की पनाह लेता हूं । उसकी पैदा की हुई हर चीज़ की बुराई से, और अंधेरे की बुराई से जब वह छा जाये, और गांठों में फूंकने वालियों की बुराई से (अर्थात : टोने टोटके करने वाली औरतों की बुराई से) और हसद (ईर्ष्या) करने वाले की बुराई से जब वह हसद करे ।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۞ مَلِكِ النَّاسِ ۞ اِلٰهِ النَّاسِ ۞ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۞ الَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۞ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۞

कुल अऊज़ु बिरब्बिन नास । मलिकिन नास । इलाहिन नास । मिन शर्रिल वस्वासिल ख़न्नासिल लज़ी युवसविसु फ़ि सुदूरिन नास । मिनल जिन्नति वन नास ।

कहो मैं पनाह लेता हूं सब आदमियों के रब की । सब के बादशाह और सबके माबूद (पूज्य) की । बुरा विचार डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से जो आदमियों के दिल में बुरा विचार डालता है चाहे वह जिनों

में से हो या आदमियों में से ।

ख़ुलासा यह है कि अलहम्द शरीफ़ के बाद क़ुरआन शरीफ़ की कोई सूरत या उसका कुछ हिस्सा (बड़ी एक आयत या छोटी तीन आयतें) पढ़ना चाहिये । हर नमाज़ में इतनी क़िरअत करना अर्थात इतना क़ुरआन पढ़ना ज़रूरी है ।

जब यह क़िरअत कर चुके तो अल्लाह तआला की ख़ुदाई और उसकी बड़ाई का ध्यान करते हुये दिल और ज़बान से अल्लाहु अकबर कहता हुआ रूकू में चला जाये और कम से कम तीन बार कहे:

سُبْحَانَ رَبِّیَ الْعَظِیْمِ

सुबहा न रब्बियल अज़ीम

पाक है मेरा परवरदिगार जो बड़ी शान वाला है ।

जिस समय रूकू में अल्लाह तआला की बड़ाई और पाकी का यह कलमा [वाक्य] ज़बान से कह रहा हो उस समय दिल में भी उसकी पाकी और बड़ाई का पूरा पूरा ध्यान होना चाहिये । उसके बाद रूकू से सर उठाये और कहे:

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ

समिअल्लाहु लिमन हमिदह

अल्लाह ने उस बन्दे की सुनी जिसने उसकी तारीफ़ (प्रशंसा) की ।

उसके बाद कहे:-

رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ

रब्बना लकल हम्द

ऐ हमारे मालिक और पालनहार सब तारीफ़ तेरे ही लिये है ।

उसके बाद फिर दिल व ज़बान से अल्लाहु अकबर कहे और अपने मौला (प्रभु) के सामने सजदे में गिर जाये और एक के बाद एक लगातार दो सजदे करे और इन दोनों सजदों में अल्लाह तआला का पूरा ध्यान करके और यह समझकर कि वह सामने मौजूद है और देख रहा है और उसको अपना मुख़ातब (श्रोता) बनाके ज़बान व दिल से कम से कम तीन बार कहे:

سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی

सुबहा न रब्बियल आला

पाक है मेरा परवरदिगार जो बहुत ऊंची शान वाला है ।

सजदे में जिस समय यह कलमा ज़बान पर हो उस वक्त दिल में अपने छोटे और कमतर [तुच्छ] होने का और अल्लाह तआला की पाकी [पवित्रता] और बहुत बड़े होने का पूरा ध्यान होना चाहिये । यह विचार और ध्यान जितना अधिक और जितना गहरा होगा नमाज़ उतनी ही अच्छी और ज़्यादा क़ीमती होगी क्योंकि यही नमाज़ की जान है ।

यह केवल एक रकअत के बारे में बताया गया । फिर जितनी रकअत पढ़नी हो इसी तरह पढ़नी चाहिये हां यह ध्यान अवश्य रखना चाहिये कि- ''सुबहा न क अल्लाहुम म'' केवल पहली ही रकअत में पढ़ा जाता है और सूरह फातिहा [अलहम्द] के बाद जो क़िरअत की जाती है फर्ज़ नमाज़ों में वह केवल पहली दो रकअतों में की जाती है । नमाज़ के आखिर में और बीच में जब बैठते हैं तो-- ''अत्तहियात'' पढ़ते हैं जो एक तरह से नमाज़ का खुलासा [सारांश] और निचोड़ है और वह यह है :-

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ
وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ
اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अत्तहियातु लिलाहि वस्सल वातु वत्तयियबातु वस्सलामु अलै क अयूयुहन्नबि यु व रहमतुल्लाहि व ब रकातुहू । अस्सलामु अलैना वअला इबादिल्लाहिस्सालिहीन अश हदु अल्लाइला ह इल्लल्लाहु वअश हदु अन न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह ।

अदब [शिष्टाचार] व ताज़ीम [महिमा] और तारीफ़ [प्रशंसा] के सब कलिमे [शब्द] सिर्फ़ अल्लाह के लिये हैं । सलाम हो तुम पर ऐ नबी और अल्लाह की रहमत व बरकतें । सलाम हो हम पर और अल्लाह के सब नेक बंदों पर । मैं गवाही देता हूं कि कोई इबादत के लायक़ नहीं सिवा अल्लाह के और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद [स०] उसके बन्दे और रसूल हैं ।

तीन रकअत और चार रकअत वाली नमाज़ों में जब दूसरी रकअत पर बैठते हैं तो केवल यह ''अत्तहियात'' ही पढ़ी जाती है । और अन्तिम रकअत पर बैठते हैं तो ''अत्तहियात'' के बाद ''दुरूद शरीफ़'' और एक दुआ भी पढ़ते हैं । हम इन दोनों को यहां लिखते हैं ।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ
اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ
اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्लाहुम म सल्ले अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै त अला इब्राही म व अला आले इब्राहि म इन्न क हमीदुम मजीद । अल्लाहुम म बारिक अला मुहम्मदिन व अला आले मुहम्मदिन कमा बारक त अला इब्राही म व अला आलि इब्राही म इन्न क हमीदुम मजीद ।

ऐ अल्लाह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और उनकी आल (संतान) और उनके पीछे चलने वालों पर ख़ास रहमत (दया) कर जैसे तूने इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उनकी आल पर रहमत की । तू बड़ी तारीफ़ वाला और बड़ाई वाला है । ऐ अल्लाह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और उनकी आल पर बरकतें उतार जैसे तूने हज़रत इब्राहीम पर और उनकी आल पर बरकतें उतारीं । तू बड़ी तारीफ़ों वाला और बड़ाई वाला है ।

यह दुरूद शरीफ़ असिल में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपकी आल (संतान, घरवालों और आपसे ख़ास धार्मिक सम्बन्ध रखने वालों) के लिये रहमत और बरकत की दुआ है । हमको दीन की नेमतें और नमाज़ की दौलत चूंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही के द्वारा मिली है इसलिये अल्लाह ने इस उपकार के धन्यवाद के तौर पर हमारे ज़िम्मे यह ठहराया है कि जब नमाज़ पढ़ें तो उसके आख़िर में हुज़ूर (स०) के लिये और आपकी आल के लिये रहमत व बरकत की दुआ करें अत: हमें चाहिये कि हर नमाज़ के आख़िर में अत्तहियात के बाद हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस एहसान (उपकार) को याद करके दिल से उन पर यह दुरूद शरीफ़ पढ़ें और उनके लिये रहमत और बरकत की दुआ मांगें ।

दुरूद शरीफ़ के बाद अपने लिये यह दुआ करें और इसके बाद सलाम फेर दें:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَّلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ فَاغْفِرْ لِيْ
مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِيْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ

अल्लाहुम म इन्नी ज़लमतू नफ़सी ज़ुलमन कसीरौं व इन्नहु ला यग़फ़िरूज्जुनू ब इल्ला अन त फ़ग़ फ़िरली मग़फ़ि रतम मिन इन्दि क वर हमनी इन्न क अन्तलग़फ़ूर्रहीम ।

ऐ मेरे अल्लाह ! मैंने अपनी जान पर बड़ा ज़ुल्म किया (और हुक्मों को मानने तथा तेरी इबादत में मुझ से बड़ा क़ुसूर हुआ) और तेरे सिवा कोई गुनाहों को माफ़ करने वाला नहीं है।(बस तू मुझे अपने फ़ज़्ल(दया)से माफ़

कर दे और मुझपर रहम फ़रमा । तू बख़्शने वाला और बड़ा मेहरबान है ।

इस दुआ में अपने गुनाहों और अपराधों को मानकर अल्लाह तआला से माफ़ करने और रहम करने की गुज़ारिश (प्रार्थना) की गयी है । हक़ीक़त में बन्दे के लिये यही बेहतर है कि वह नमाज़ जैसी इबादत करके भी अपने क़ुसूर (दोष) को माने और अपने को गुनाहगार व अपराधी समझे और अल्लाह की रहमत ही को अपना सहारा समझे और इबादत की वजह से उसके अन्दर कोई घमण्ड पैदा न हो क्योंकि अल्लाह तआला की इबादत का हक़ हमसे किसी तरह भी अदा नहीं हो सकता ।

इस सबक़ में नमाज़ के बारे में जो कुछ बयान करना था वह सब बयान किया जा चुका । आख़िर में हम फिर कहते हैं कि नमाज़ वह कीमिया (पारस) जैसा असर रखने वाली इबादत है कि अगर इसको ध्यान के साथ समझ-समझकर और ख़ुशू व ख़ुज़ू के साथ अदा किया जाये (जैसा कि ऊपर हमने बताया) तो वह आदमी को आमाल व अख़लाक़ (कर्म व चरित्र) में फ़रिश्ता बना सकती है । तो भाईयो ! नमाज़ की एहमियत और उसकी क़ीमत को समझो ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी उम्मत (मानने वालों के) नमाज़ पर जमे रहने की इतनी फ़िक्र थी कि बिल्कुल आख़िरी वक़्त में जब कि आप (स०) इस दुनिया से जा रहे थे और ज़बान से कुछ कहना भी कठिन था, उस वक़्त भी आप (स०) ने अपनी उम्मत को नमाज़ पर जमे रहने और नमाज़ को क़ायम रखने की बड़ी ताकीद के साथ वसीयत फ़रमाई थी । जो मुसलमान आज नमाज़ नहीं पढ़ते और नमाज़ को क़ायम करने और रिवाज देने की कोशिश नहीं करते वह ख़ुदा के लिये सोचें कि क़यामत में वह किस तरह हुज़ूर के सामने जा सकेंगे । और किस तरह हुज़ूर (स०) से आँख मिला सकेंगे जबकि वह आप (स०) की आख़िरी वसीयत को भी पैरों तले रौंद रहे हैं । आओ हम सब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के शब्दों में यह दुआ करें ।

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلٰوةِ وَمِن ذُرِّيَّتِي رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ
رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ

रब्बिज अल्नी मुक़ीमस्सलाति व मिन ज़ुर्री यती रब्बना व तक़ब्बल दुआ रब्बनग़ फ़िरली वलिवा लिदय्या वलिल मोमिनी न यौ म यक़ूमुल हिसाब ।

ऐ परवरदिगार मुझको और मेरी नस्ल (संतान) को नमाज़ क़ायम करने वाला बना दे । ऐ मेरे रब मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमा । ऐ मेरे परवरदिगार मुझको और मेरे मां बाप को और सब ईमान वालों को क़यामत के दिन माफ़ फ़रमादे ।

तीसरा सबक़

ज़कात

इस्लाम की बुनियादी तालीमात (प्राथमिक शिक्षाओं) में ईमान और नमाज़ के बाद ज़कात का दर्जा है क्योंकि यह इस्लाम का तीसरा रूक्न (स्तम्भ) है । ज़कात का मतलब यह है कि जिस मुसलमान के पास एक निर्धारित मात्रा में माल व दौलत हो वह हर साल हिसाब लगाकर अपने उस माल का चालीसवां हिस्सा ग़रीबों पर या नेकी की दूसरी बातों पर ख़र्च किया करे जो ज़कात के ख़र्च के लिये अल्लाह और उसके रसूल ने मुक़र्रर (निर्धारित) की हैं[1] ।

ज़कात की फ़र्ज़ियत व अहमियत:-

क़ुरआन शरीफ़ में जगह जगह नमाज़ के साथ साथ ज़कात की ताकीद की गई है । अगर आप क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते होंगे तो उसमें बीसों जगह पढ़ा होगा:-

أَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَآتُوا الزَّكٰوةَ

अक़ी मुस्सला त व आतुज़्ज़का त
नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दिया करो ।

और कई जगह मुसलमानों की विशेषता यह बताई गयी है कि:-

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكٰوةَ

अल्लज़ी न युक़ीमूनस्सला त व यूतूनज़्ज़का त
वह नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं ।

इससे मालूम हुआ कि जो लोग नमाज़ नहीं पढ़ते और ज़कात नहीं देते वह सच्चे मुसलमान नहीं हैं क्योंकि इस्लाम की जो बातें और जो सिफ़तें (लक्षण)

1. ज़कात के मसाइल व अहकाम और यह कि वह कहां ख़र्च की जाये यह सब जानने के लिये फ़िक़ह (मसले-मसाइल) की किताबें देखी जायें या इसके लिये आलिमों (विद्वानों) से मिला जाये ।

असली मुसलमानों में होनी चाहियें वह उनमें नहीं हैं । तो मालूम हुआ कि नमाज़ न पढ़ना और ज़कात न देना क़ुरआन शरीफ़ के बयान के मुताबिक़ मुसलमानों की सिफ़त (विशेषता) नहीं है बल्कि काफ़िरों और मुशरिकों की सिफ़त है । नमाज़ के बारे में तो सूरए रूम की आयत में फ़रमाया गया है कि:-

أَقِيمُوا الصَّلَوٰةَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ

अक़ीमुस्सला त वला तकूनू मिनल मुश्रिकीन [अर्रूम - रूकु ४]
नमाज़ क़ायम करो और (नमाज़ छोड़कर) मुश्रिकों में से न हो जाओ ।

और ज़कात न देने को मुश्रिकों व काफ़िरों की सिफ़त सूरए फ़ुस्सिलत की इस आयत में बताया गया है:-

وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِينَ ۝ الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَوٰةَ وَهُم بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ

व वैलुल्लिल मुश्रिकीनल्लज़ी न ला यूतूनज़्ज़का त वहुम बिल आख़ि रति हुम काफ़िरून (फ़ुस्सिलत रूकू-१)

उन मुश्रिकों के लिये बड़ी ख़राबी है और उनका अंजाम बहुत बुरा होने वाला है जो ज़कात **अदा** नहीं करते और वह आख़िरत **का** इनकार करने वाले और काफ़िर हैं ।

ज़कात न देने का दर्दनाक अज़ाब:-

ज़कात न देने वालों का जो बुरा अंत क़यामत में होने वाला है और जो सज़ा उनको मिलने वाली है वह इतनी कड़ी है कि उसके सुनने से ही रौंगटे खड़े हो जाते हैं और दिल कांपने लगते हैं ।

وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ يَوْمَ يُحْمَىٰ عَلَيْهَا فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوَىٰ بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ هَٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِأَنفُسِكُمْ فَذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَكْنِزُونَ

वल्लज़ी न यकनिज़ूनज़्ज़ ह ब वल फ़िज़्ज़ त वला युन फ़िक़ु नहा फ़ी सबी लिल्लाहि फ़ बश्शिर हुम बि अज़ाबिन अलीम । यौ म युहमा अलैहा फ़ी नारि जहन्न म फ़तुकवा बिहा जिबा

हुहुम व जुनूबुहुम व ज़ुहुरुहुम हाज़ा मा कनज़तुम लि अनफ़ुसिकुम फ़ज़ूक़ू मा कुन्तुम तक निज़ून (सूरए तौबह रूकू-५)

और जो लोग सोना चांदी (माल दौलत) जोड़कर रखते हैं और उसको ख़ुदा के रास्ते में खर्च नहीं करते (अर्थात उन पर जो ज़कात फ़र्ज़ है उसको अदा नहीं करते) ऐ रसूल तुम उनको दर्दनाक अज़ाब की ख़बर सुना दो, जिस दिन कि तपाया जायगा उनकी इस दौलत को दोज़ख़ की आग में फिर दाग़े जायेंगे उससे उनके माथे उनकी करवटें और पीठें [और कहा जायेगा] यह है वह माल जिसको तुमने जोड़ा था अपने लिये तो मज़ा चखो अपनी जोड़ी हुई दौलत का ।

इस आयत की कुछ तफ़सील हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक हदीस में भी फरमाई है । उस हदीस का मतलब यह है कि:-

जिस व्यक्ति के पास सोना चांदी (धन और दौलत) हो और वह उस माल का हक़ अदा न करे (अर्थात ज़कात आदि न दे) तो क़यामत के दिन उसके लिये आग की तख़तियां तैयार की जायेंगी । फिर उनको दोज़ख़ की आग में और अधिक तपाकर उनसे इस व्यक्ति के माथे को, करवट को और पीठ को दाग़ा जायगा और इसी प्रकार बार बार उन तख़तियों को दोज़ख़ की आग पर तपाकर उस व्यक्ति को दाग़ा जाता रहेगा और क़यामत के दिन की पूरी मुददत में इस अज़ाब (दण्ड) का सिलसिला (क्रम) जारी रहेगा और यह मुद्दत पचास हज़ार साल की होगी (तो इस तरह पचास हज़ार साल तक उसको यह सख़्त और दर्दनाक **अज़ाब दिया जाता रहेगा)** ।

कुछ हदीसों में ज़कात न देने वालों के लिये ऊपर लिखे अज़ाब (दण्ड) के अलावा और दूसरे प्रकार के कड़े अज़ाब का भी ज़िक्र (वर्णन) आया है

अल्लाह तआला हम सबको अपने अज़ाब से बचाये ।

अल्लाह तआला ने जिन लोगों को धनी और मालदार बनाया है वह अगर ज़कात न दें और अल्लाह के आदेश के अनुसार उसके रास्ते में ख़र्च न करें तो बिला शुबह [निसंदेह] वह अपने ऊपर बड़ा ही ज़ुल्म करने वाले और उपकार को भुलाने वाले हैं इसलिये उनको जो भी कड़ी से कड़ी सजा दी जाये वह बिल्कुल सही और उचित है ।

ज़कात न देना ज़ुल्म और अल्लाह के उपकारों का इन्कार है:-

फिर यह भी सोचना चाहिये कि ज़कात और सदक़ात से दर असल अपने ही ग़रीब भाईयों की सेवा होती है, जो ज़कात न निकालना चाहे वास्तव में अपने उन ग़रीब, मजबूर और असमर्थ भाईयों पर ज़ुल्म (अत्याचार) करता है और उनका हक़ मारता है।

भाईयो ! ज़रा सोचो हमारे आपके पास जो कुछ माल और दौलत है वह सब अल्लाह तआला का ही दिया हुआ है और हम ख़ुद भी उसी के बन्दे और उसी के पैदा किये हुये हैं तो अगर वह हमसे हमारा सारा धन भी मांगे बल्कि जान देने को भी कहे तो हमारा फ़र्ज़ है कि हम बिना कारण पूछे सब कुछ दे दें। यह तो उसका बड़ा करम (कृपा) है कि उसने अपने दिये हुये माल में से केवल चालीसवां हिस्सा ही निकालने का आदेश दिया है।

ज़कात का सवाब:-

फिर अल्लाह तआला का बहुत बड़ा करम व एहसान है कि उसने ज़कात और सदक़ा देने का बड़ा सवाब रखा है जबकि ज़कात या सदक़ा देने वाला जो कुछ देता है, अल्लाह तआला ही के दिये हुये माल में से देता है इसलिये यदि अल्लाह तआला उसपर कोई सवाब न देता तो बिल्कुल सही और ठीक था मगर यह उसकी कृपा ही कृपा है कि उसके दिये हुये माल में से हम जो कुछ उसके हुक्म से ज़कात या सदक़े के तौर पर उसके रास्ते में ख़र्च करते हैं तो वह उससे बहुत ख़ुश होता है और उसपर बड़े-बड़े सवाबों का वादा फ़रमाता है क़ुरआन मजीद ही में है कि:-

مَثَلُ الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ
فِي كُلِّ سُنبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ۗ وَاللَّهُ يُضَاعِفُ لِمَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝
الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَا أَنفَقُوا مَنًّا وَ
لَا أَذًى لَّهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

म स लुल्लज़ी न युनफ़िक़ू न अमवा लहुम फ़ी सबीलिल्लाहि
क म सलि हब्बतिन अम्ब तत सब अ सनाबि ल फ़ी कुल्लि

सुमबु लतिन मिअतु हब्बह । वल्लाहु युज़ाइफ़ु लिमैंयशाउ
वल्लाहु वासिउन अलीम । अल्लज़ी न युनफ़िक़ू न अमवा
लहुम फ़ी सबीलिल्लाहि सुम्म ला युतबिऊ न मा अनफ़क़ू मन्नौं
वला अज़ललहुम अजरूहुम इन द रब्बिहिम वला खौफ़ुन अलैहिम
वला हुम यहज़नून - [सू र ए बक़रह रूकू-३६]

जो लोग अल्लाह के रास्ते में अपना माल ख़र्च करते हैं उनके इस ख़र्च करने की मिसाल उस दाने की सी है जिससे पौधा उगे और उसमें सात बालें निकलें हर बाल में सौ दाने हों। और अल्लाह बढ़ाता है जिसके लिये चाहे, वह बड़ी वुसअत (अधिकता) वाला है और सब कुछ जानता है। जो लोग अपना माल ख़ुदा के रास्ते में ख़र्च करते हैं फिर न वह अपना एहसान जताते हैं और न ही दुख पहुंचाते हैं उनके लिये उनके रब के पास बड़ा सवाब है और उन्हें (क़यामत में) न कोई डर होगा और न वह दुखी होंगे।

इस आयत में ज़कात देने वालों और ख़ुदा की राह में ख़र्च करने वालों के लिये अल्लाह तआला की तरफ़ से तीन वादे फ़रमाये गये हैं।

१. यह कि जितना वह ख़र्च करते हैं अल्लाह तआला उनको इसके बदले सैकड़ों गुना ज़्यादा देगा।
२. यह कि उनको आख़िरत में बहुत बड़ा बदला और सवाब मिलेगा और बड़ी-बड़ी नेमतें मिलेंगी।
३. यह कि क़यामत के दिन उनको कोई डर और कोई रंज या ग़म न होगा। सुबहानल्लाह (अल्लाह बे-ऐब-और पाक है)।

भाइयो ! सहाबए किराम (रसूल स० के साथियों) को अल्लाह तआला के वादों पर पूरा यक़ीन था इसलिये उनका हाल यह था कि जब ख़ुदा के रास्ते में सदक़ा (दान) करने की फज़ीलत व बड़ाई की और सवाब की आयतें हुज़ूर पर उतरीं और उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उसको सुना तो उनमें जो ग़रीब थे और जिनके पास सदक़ा करने के लिये पैसा भी नहीं था वह भी सत्क़ा करने के इरादे से मज़दूरी करने के लिये घरों से निकल पड़े और अपनी पीठ पर बोझ लाद- लाद कर उन्होंने पैसे कमाये और ख़ुदा की राह में सदक़ा किया।[1]

---

१. रियाज़ुस्सालिहीन पृष्ठ २८ [बुख़ारी व मुस्लिम के हवाले से]

ज़कात की एहमियत (महत्व) और उसकी फ़ज़ीलत के बारे में यहां हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की केवल एक हदीस और लिखते हैं ! हदीस की मशहूर किताब अबू दाऊद शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया -

"तीन बातें हैं जिस व्यक्ति ने उनको अपना लिया उसने ईमान का मज़ा पा लिया । एक यह कि केवल अल्लाह की इबादत करे और दूसरे यह कि "ला इला ह इल्लल्लाह" पर उसका सच्चा ईमान और यक़ीन हो और तीसरे यह कि हर साल दिल की पूरी ख़ुशी के साथ अपने माल और अपनी दौलत (सम्पत्ति) की ज़कात अदा करे (तो जिसको यह तीन बातें प्राप्त हो जायें उसको ईमान का असली मज़ा और उसकी चाशनी मिल जायेगी") ।

अल्लाह तआला हम सबको ईमान का मज़ा और उसकी लज़्ज़त नसीब करे ।

ज़कात और सदक़े के दुनियवी फ़ायदे:-

ज़कात और सदक़े का जो सवाब और जो इनाम अल्लाह तआला की तरफ़ से आख़िरत में मिलेगा उसके अलावा इस दुनिया वाली जिन्दगी में भी उससे बड़े फ़ायदे हासिल होते हैं, जैसे यह कि ज़कात और सदक़ा अदा करने वाले मोमिन (इस्लाम के मानने वाले) का दिल ख़ुश और संतुष्ट रहता है । ग़रीबों को इससे हसद (डाह) नहीं होता, बल्कि वे उसका भला चाहते हैं उसके लिये दुआयें करते हैं और उसकी ओर मुहब्बत की नज़र से देखते हैं । आम लोगों की नज़र में उसका बड़ा सम्मान होता है और सब लोगों की सहानुभूति ऐसे व्यक्ति को प्राप्त होती है । अल्लाह तआला उसके धन में बड़ी बरकतें देता है । एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :-

"अल्लाह तआला का आदेश है ऐ आदम की औलाद(तू मेरे ग़रीब मोहताज बन्दों पर और भलाई के दूसरे भले कामों में)मेरा दिया हुआ माल खर्च किये जा मैं तुझको बराबर देता रहूंगा" ।

एक दूसरी हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:-

"मैं इस बात पर क़सम खा सकता हूं कि सदक़ा [दान] करने के कारण कोई व्यक्ति ग़रीब और मोहताज न होगा" ।

अल्लाह तआला हमको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इन इरशादात (उपदेशों) पर सच्चा और पक्का ईमान व यक़ीन नसीब करे और दिल की ख़ुशी और शौक़ के साथ अमल की तौफ़ीक़ दे ।

चौथा सबक़

रोज़ह

रोज़े की एहमियत और फ़र्ज़ियत:-

इस्लाम की बुनियादी तालीमात [शिक्षाओं] में ईमान, नमाज़ और ज़कात के बाद रोज़े का दर्जा है । क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया गया है ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ
مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ

या अय्यु हल्लज़ी न आ मनू कुति ब अलै कुमुस्सियामु कमा कुति ब अलल्लज़ी न मिन क़बलि कुम लअल्लकुम तत्तक़ून । [सूरए बक़रह रूकू २३]

ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े रखना फ़र्ज़ किया गया है जैसे कि तुम से पहली उम्मतों पर भी फ़र्ज़ किया गया था ताकि तुम में तक़्वे (अल्लाह से डरने) की सिफ़त (गुण) पैदा हो ।

इस्लाम में रमज़ान के पूरे महीने के रोज़े फ़र्ज़ हैं । और जो व्यक्ति बिना किसी वास्तविक कारण और बिना मजबूरी के एक रोज़ह भी छोड़ दे तो वह बहुत बड़ा पापी और गुनाहगार है । एक हदीस में है कि:

"जो व्यक्ति बिना किसी मजबूरी और बीमारी के रमज़ान का एक रोज़ह भी छोड़ दे वह अगर इसके बदले सारी उम्र भी रोज़े रखे तो भी उसका पूरा हक़ अदा न हो सकेगा ।

रोज़ों का सवाब :-

रोज़े में चूंकि इबादत (तपस्या) की नियत से खाने-पीने और कामुकता से अपने मन को रोका जाता है और अल्लाह के वास्ते अपनी इच्छाओं और लज़्ज़तों को क़ुरबान (त्याग) किया जाता है इस लिये अल्लाह ने उसका सवाब भी बहुत ज़्यादा और सबसे निराला रखा है । एक हदीस में है कि:-

"बन्दों के सारे अच्छे आमाल (कर्मों) के बदले का एक क़ानून बना हुआ है और हर अमल का सवाब उसी हिसाब से दिया जायगा परन्तु रोज़ह इस क़ानून से अलग है उसके बारे में अल्लाह तआला का इरशाद (कथन) है कि बन्दा रोज़े में मेरे लिये अपना खाना पीना और अपनी कामुकता को क़ुरबान करता है इसलिये रोज़े का बदला बन्दे को मैं खुद दूंगा"।

एक दूसरी हदीस में है कि:-

"जो व्यक्ति पूरे ईमान और यक़ीन के साथ और अल्लाह तआला की रज़ामन्दी हासिल करने के लिये और उससे सवाब लेने के लिये रमज़ान के रोज़े रखे तो उसके पहले सब गुनाह (पाप) माफ़ कर दिये जायेंगे"।

एक दूसरी हदीस में है कि:-

"रोज़ेदार के लिये फ़रहत (आनन्द) के दो ख़ास मौक़े हैं। एक ख़ास फ़रहत रोज़ा खोलने के समय इस संसार में ही मिलती है और दूसरी फ़रहत आख़िरत में अल्लाह के सामने हाज़िर होने और अल्लाह के दरबार में स्थान पाने के समय हासिल होगी"।

एक और हदीस में आया है कि:-

"रोज़ह दोज़ख़ की आग से बचाने वाली ढाल है और एक मज़बूत क़िला है (जो दोज़ख़ के अज़ाब से रोज़ेदार को सुरक्षित रखेगा)"।

एक और हदीस में आया है कि:-

"रोज़ेदार के लिये ख़ुद रोज़ह अल्लाह तआला से सिफ़ारिश करेगा कि मेरी वजह से इस बन्दे ने दिन को खाना पीना और मन की इच्छा को पूरा करना छोड़ दिया था (इसीलिये माफ़ कर दिया जाये और इसको पूरा बदला दिया जाये) तो अल्लाह तआला रोज़े की यह सिफ़ारिश क़ुबूल कर लेगा"।

एक हदीस में है कि:-

"रोज़ा रखने वाले के मुंह की बदबू (जो किसी-किसी समय पेट ख़ाली होने से पैदा हो जाती है) अल्लाह की नज़र में मुश्क (कस्तूरी) की ख़ुशबू से ज़्यादा अच्छी है"।

इन हदीसों में रोज़े की जो फ़ज़ीलतें (महिमा) बताई गई हैं इनके अलावा एक बड़ी विशेषता यह है कि रोज़ह इन्सानों को दूसरे जानवरों से अलग करता है--- जब दिल चाहा खा लिया, जब मन में आया पी लिया, जब कामुकता उठी अपने जोड़े से मज़ा हासिल कर लिया; यह विशेषता जानवरों की है और न कभी खाना, न कभी पीना, न कभी अपने जोड़े से लज़्ज़त हासिल करना, यह शान फ़रिश्तों की है। रोज़ह रख कर आदमी दूसरे हैवानों (जीवधारियों) से अलग और बड़ा होता है और फ़रिश्तों से उसको एक प्रकार की मुनासिबत (समता) हो जाती है।

रोज़ों का ख़ास फ़ायदा :-

रोज़े का एक ख़ास फ़ायदा यह है कि इससे आदमी में तक़वा (अल्लाह का डर) और परहेज़गारी (भक्ति तथा संयम) की सिफ़त पैदा हो जाती है और अपने मन की इच्छाओं को क़ाबू में रखने की ताक़त आती है और अल्लाह के हुक्म के सामने मन की इच्छा और चाहत को दबाने की आदत पड़ती है और रूह (आत्मा) की तरक़्क़ी और उसका सुधार होता है, परन्तु यह सब बातें उसी समय हासिल हो सकती हैं जब रोज़ह रखने वाला ख़ुद भी इनके हासिल करने का इरादा रखे और रोज़े में उन सभी बातों का ध्यान रहे जो रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताई हैं यानी खाने-पीने के अलावा सब छोटे बड़े गुनाहों से भी बचे, न झूठ बोले न ग़ीबत करे न किसी से लड़े। ख़ुलासा यह है कि रोज़े की हालत में सभी खुले और छिपे गुनाहों से पूरी तरह बचे जैसा कि हदीसों में इस पर ज़ोर दिया गया है।

एक हदीस में है कि रसूलुल्ला सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :-

"जब तुम में से किसी के रोज़े का दिन हो तो चाहिये कि कोई गन्दी और बुरी बात उसकी ज़ुबान से न निकले और वह ग़ुल ग़प्पाड़ा भी न करे और अगर कोई आदमी उससे झगड़ा करे उसको गाली दे तो उससे केवल इतना कह दे कि मैं रोज़े से हूं (इसलिये तुम्हारी गालियों के उत्तर में भी मैं गाली नहीं दे सकता")

एक और हदीस में है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :-

"जो आदमी रोज़े में भी बुरी बातों का कहना और उनका करना न छोड़े तो अल्लाह को उसका खाना पीना छोड़ने की कोई ज़रूरत और कोई परवाह नहीं"।

एक और हदीस में है कि रसूलुल्ला सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:-

"कितने ही ऐसे रोज़ेदार होते हैं (जो रोज़े में बुरी बातों और बुरे कामों से नहीं बचते और उसकी वजह से) उनके रोज़े का हासिल (निष्कर्ष) -भूख -प्यास के सिवा कुछ भी नहीं होता"।

तो समझ लेना चाहिये कि रोज़े के असर से रूह में पाकीज़गी व तक़्वा और परहेज़गारी की सिफ़त और मन की इच्छाओं पर क़ाबू पाने की ताक़त तभी पैदा होगी जबकि खाने -पीने की तरह दूसरे सब छोटे-बड़े गुनाहों से बचा जाये और विशेषकर झूठ, ग़ीबत[1] और गाली गलौज आदि से ज़बान को बचाया जाये।

अगर इस प्रकार के रोज़े रखे जायें तो खुदा ने चाहा तो वह सब फ़ायदे हासिल हो सकते हैं जिनका बयान ऊपर किया गया है और ऐसे रोज़े आदमी में फ़रिश्तों की सिफ़त पैदा कर सकते हैं ।

अल्लाह तआला हम सबकी मदद करे कि रोज़े की हक़ीक़त (वास्तविकता) और उसकी क़ीमत को समझें और इसके द्वारा तक़्वे और परहेज़गारी की सिफ़त पैदा करें ।

रोज़े की एहमियत व फ़ज़ीलत और उसके प्रभाव के बारे में यहां बहुत मुखतसर [संक्षिप्त] बयान किया गया है इस बारे में तफ़सील के लिये------उर्दू में मेरी किताब "बरकात - ए- रमज़ान पढ़ी जाये ।

(१. पीठ पीछे किसी को ऐसी बात कहना कि अगर उसके सामने कही जाये तो बुरी लगे ।)

पांचवा सबक़

हज

हज की फ़रज़ियत :-

इस्लाम के अरकान [स्तम्भों] में से आख़री रुक्न हज है । क़ुरआन शरफ़ि में हज के फ़र्ज़ होने का एलान करते हुये फ़रमाया गया है। :-

वَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا ۚ وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِينَ

व लिल्लाहि अलन्नासि हिज्जुल बैति मनिस्तता अ इलैहि सबीला ।
व मन म फ़ र फ़इन्नल्ला ह ग़नियुन अनिल आ लमीन ।
(आले इमरान रूकू - १०)

और अल्लाह के वास्ते बैतुल्लाह (काबा शरीफ़) का हज करना फ़र्ज़ है उन लोगों पर जो वहां तक पहुंचने की इस्तताअत [सामर्थ्य] रखते हों और जो न मानें तो अल्लाह बे- परवाह है सब दुनिया से ।

इस आयत में हज के फ़र्ज़ होने का एलान भी किया गया है और साथ ही यह भी बताया गया है कि हज सिर्फ़ उन लोगों पर फ़र्ज़ है, जो वहां पहुंचने की इस्तताअत रखते हों और आयत के आख़री हिस्से में इस तरफ़ भी इशारा है कि जिन लोगों को अल्लाह ने हज करने की ताक़त और हैसियत दी हो और वह नाशुक्री से हज न करें (जैसे कि आजकल के बहुत से मालदार नहीं करते) तो अल्लाह तआला सबसे बे-नियाज़ और बे-परवाह है, इसलिये उनके हज न करने से उसका तो कुछ नहीं बिगड़ेगा बल्कि इस नाशुक्री और इस नेमत को ठुकरा देने के कारण वे ख़ुद ही उसकी रहमत और दया से महरूम (वंचित) हो जायेंगे और उनका अन्जाम (ख़ुदा न करे) बहुत बुरा होगा ।

रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक हदीस में है कि :-

"जिस किसी को अल्लाह ने इतना दिया हो कि वह हज कर सके लेकिन फिर भी वह हज न करे तो कोई परवाह नहीं है कि चाहे वह यहूदी होकर मरे या नसरानी (ईसाई) होकर" ।

भाइयो ! अगर हमारे दिलों में ईमान और इस्लाम की कुछ भी क़दर व क़ीमत (महत्व) हो और अल्लाह व रसूल से कुछ भी ताल्लुक़ हो तो इस हदीस के जानने के बाद हम में से किसी ऐसे इन्सान को हज से महरूम न रहना चाहिये जो वहां पहुंच सकता हो ।

हज की फ़ज़ीलतें और बरकतें :-

बहुत सी हदीसों में हज की और हज करने वालों की बहुत सी फ़ज़ीलतें (बड़ाईयां) बयान की गई हैं । हम यहां केवल दो तीन हदीसें लिखते हैं । एक हदीस में है कि:-

"हज और उमरे के लिये जाने वाले लोग अल्लाह तआला के ख़ास मेहमान हैं । वह अल्लाह से दुआ करें तो अल्लाह तआला उनकी दुआ क़ुबूल करता है और माफ़ी मांगें तो वह उनको माफ़ कर देता है" (मिश्कात शरीफ़)

एक दूसरी हदीस में है कि:-

"जो व्यक्ति हज करे और उसमें कोई बेहूदा और गुनाह की बात न करे और अल्लाह की नाफ़रमानी न करे तो वह गुनाहों से ऐसा पाक और साफ़ होकर लौटेगा जैसा कि वह अपने जन्म के समय बिल्कुल बे-गुनाह था" ।

एक और हदीस में है कि:-

"हज्जे मबरूर (अर्थात वह हज जो ख़ुलूस के साथ और बिल्कुल ठीक-ठीक अदा किया गया हो और उसमें कोई बुराई और ख़राबी न हुई हो तो उस) का बदला सिर्फ़ जन्नत ही जन्नत है" । (मिशकात शरीफ़)

हज की नक़द लज़्ज़तें :-

हज की बरकत से गुनाहों की माफ़ी और जन्नत की नेमतें जो मिलती हैं वह तो इनशा अल्लाह पूरी तरह से आख़िरत में मिलेंगी लेकिन अल्लाह तआला के घर काबे शरीफ़ को देखकर और मक्के की उन ख़ास जगहों पर पहुंचकर जहां हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल (अलैहिंमुस्सलाम) की और हमारे नबी व रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की यादगारें अब तक मौजूद हैं, ईमान वालों को जो लज़्ज़त और दौलत हासिल होती है वह भी तो

दुनिया में जन्नत ही की नेमत है । फिर मदीन-ए- तय्यिबा में रौज़-ए-पाक (क़ब्र मुबारक) की ज़्यारत और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद शरीफ़ में नमाज़ें पढ़ना और सीधे हुज़ूर ही से मुख़ातिब होकर सलात व सलाम भेजना मदीने की गलियों में और वहां के जंगलों में चलना फिरना, वहां की हवा में सांस लेना और वहां की मुक़द्दस ज़मीन (पवित्र भूमि) में और हवा में बसी हुई ख़ुशबू से दिमाग़ का मुअत्तर (सुगन्धित) होना और हुज़ूर को याद करके शौक़ और मुहब्बत में ख़ुश होना, कभी हंसना और कभी रो पड़ना यह वह लज़्ज़तें हैं जो हज करने वालों को मक्के और मदीने पहुंचकर नक़द प्राप्त होती हैं । शर्त यह है कि अल्लाह इस क़ाबिल बना दे कि इन लज़्ज़तों को बन्दा समझ सके और इनसे मज़ा ले सके । आओ हम सब दुआ करें कि अल्लाह तआला केवल अपने फ़ज़्ल व करम (दयालुता व कृपा) से यह दौलत और लज़्ज़तें हमको नसीब करे ।

इस्लाम की पांच बुनियादें :-

इस्लाम की जिन पांच बुनियादी तालीमात (शिक्षाओं) का यहां तक बयान हुआ यानी कलिमा, नमाज़, ज़कात, रोज़ह, हज, यह पांच चीज़ें अरकान-ए-इस्लाम (इस्लाम के स्तम्भ) कही जाती हैं ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मशहूर हदीस है, आपने फ़रमाया कि:-

"इस्लाम की बुनियाद इन पांच चीज़ों पर रूकी हुई है [१] ला इलाह इल्लल्लाहु, मुहम्मदुर्र रसूलुल्लाहि" की गवाही देना [२] नमाज़ क़ायम करना [३] ज़कात देना [४] रमज़ान के रोज़े रखना और [५] बैतुल्लाह का हज करना उनके लिये जो वहां तक पहुंच सकते हों"[सही बुख़ारी व मुस्लिम]

इन पांच चीजों के इस्लाम के सुतून और इस्लाम की बुनियाद होने का मतलब यह है कि यह इस्लाम के बुनियादी फ़रायज़ (कर्त्तव्य) हैं और इन पर ठीक तरह से चलने से इस्लाम के बाक़ी हुक्मों पर चलने की भी सलाहियत (योग्यता) पैदा हो जाती है । यहां हमने इन अरकान (स्तम्भों) की सिर्फ़ एहमियत और फ़ज़ीलत बयान की है इनके पूरे तफ़सीली मसाइल फ़िक़ह की किताबों में देखे जायें या आलिमों से पूछे जायें ।

छठा सबक़

तक़वा और परहेज़गारी

(ख़ुदा का डर और पवित्र जीवन)

तक़्वा और परहेज़गारी (संयम) की तालीम भी इस्लाम की बुनियादी तालीमात में से है ।

तक़्वे का मतलब यह है कि अल्लाह की पकड़ और उसके अज़ाब से डरते हुये और आख़िरत (मरने के बाद आने वाले जीवन) पर यक़ीन रखते हुये सब बुरे कामों और बुरी बातों से बचा जाये और अल्लाह तआला के हुक्मों पर चला जाये अर्थात जो चीज़ें अल्लाह तआला ने हम पर फ़र्ज़ की है और अपने जिन बन्दों के जो अधिकार हमारे ऊपर ज़रूरी किये हैं उनको हम अदा करें और जिन कामों और जिन बातों को हराम और नाजायज़ कर दिया है उनसे बचें और उनके पास भी न जायें और उसके अज़ाब से डरते रहें । क़ुरआन और हदीस में बहुत ताकीद के साथ और बार- बार इस तक़्वे की शिक्षा दी गयी है । हम केवल कुछ आयतें और हदीसें यहां दर्ज करते हैं ।

सू र ए आले इमरान में फ़रमाया गया है :-

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُم مُّسْلِمُونَ

या अय्युहल्लज़ी न आ मनुत्तक़ुल्ला ह हक़्क़ तुक़ा तिही वला तमूतुन न इल्ला व अन्तुम मुसलिमून [सू रए आले इमरान रूकू - ११]

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरना चाहिये (और आख़िरी सांस तक ख़ुदा से डरते और उसकी फ़रमाबरदारी करते रहो) यहां तक कि इसी फ़रमाबरदारी की हालत में तुम को मौत आये ।

और सू रए तग़ाबुन में फ़रमाया :-

فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوا وَأَطِيعُوا

फ़त्तक़ुल्ला ह मस ततातुम वसमऊ व अतीऊ (तग़ाबुन रूकू-२)

अल्लाह से डरो और तक़वा इख़्तियार करो जितना तुम से हो सके और उसके सारे हुक्मों को सुनो और मानो ।

और सू रए हश्र में फ़रमाया गया है :-

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ

या अय्युहल्लज़ी न आमनुत तक़ुल्ला ह वल तन्ज़ुर नफ़्सुम मा क़द्दमत लि ग़दिन वत्तक़ुल्ला ह इन्नला ह ख़बीरुम बिमा ता मलून [सू र हश्र रूकू ३]

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो और हर आदमी को चाहिये कि वह देखे और ध्यान देकर सोचे कि उसने कल के लिये (अर्थात आख़िरत के लिये) क्या अमल किये हैं और देखो अल्लाह से डरते रहो क्योंकि जो कुछ भी तुम करते हो उसके बारे में अल्लाह तआला पूरी तरह जानकारी रखता है ।

क़ुरआन शरीफ़ से मालूम होता है कि जो लोग अल्लाह तआला से डरें और तक़वा और परहेज़गारी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारें दुनिया में भी उनपर अल्लाह तआला का ख़ास फ़ज़्ल व करम होता है और अल्लाह तआला उनकी बड़ी मदद करता है ।

وَمَن يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَل لَّهُ مَخْرَجًا ۝ وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ

व मंय्यत्त क़िल्ला ह यजअल लहू मख़ रजवं वयरज़ुक़हु मिन हैसु ला यहतसिब [सू रए अत्तलाक़ रूकू-१]

और जो लोग डरें अल्लाह से (और तक़्वे वाली ज़िन्दगी बितायें तो अल्लाह उनके लिये कठिनाईयों से निकलने का रास्ता पैदा कर देता है और उनको ऐसे साधनों से रोज़ी देता है जिसका उनको गुमान भी नहीं होता ।

क़ुरआन शरीफ़ ही से यह भी मालूम होता है कि जिन लोगों में तक़्वा होता है वह अल्लाह के वली (मित्र) होते हैं । और फिर उनको किसी दूसरी चीज़ का डर और रंज (शोक) बिल्कुल नहीं होता । फ़रमाया गया है कि:-

أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ

अला इन्न औलिया अल्लाहि ला ख़ौफ़ुन अलैहिम वलाहुम यह ज़नून । **अल्लज़ी न आमनू व कानू** यत्तक़ून । लहुमूल बुश्रा फ़िल हयातिद्दुनिया वफ़िल आख़िरह । (सू रए यूनुस रूकू-७)

याद रखना चाहिये कि जो अल्लाह के वली होते हैं उन्हें कोई डर और ग़म नहीं होता । **यह वह लोग** होते हैं जो सच्चे मोमिन और मुत्तक़ी (तक़वा रखने वाले) हों, उनके वास्ते ख़ुशख़बरी है दुनिया की ज़िन्दगी में भी और आख़िरत में भी ।

इन मुत्तक़ियों और परहेज़गारों को जो नेमतें आख़िरत में मिलने वाली हैं उनका कुछ बयान इस आयत में किया गया है ।

قُلْ أَؤُنَبِّئُكُم بِخَيْرٍ مِّن ذَٰلِكُمْ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَأَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ

कुल अउ नब्बिउकुम बिख़ैरिम मिन ज़ालिकुम लिल लज़ी नत्तक़ौ इन द रब्बिहिम जन्नातुन तजरी मिन तहतिहल अनहारु ख़लिदी न फ़ीहा व अज़वाज़ुम मुतह ह र तुं वरिज़्वानुम मिनल्लाहि वल्लाहु बसीरुम बिल इबाद । (सू रए आले इमरान रूकू २)

(ऐ रसूल, इन लोगों से) आप कहिये क्या मैं तुम्हें वह चीज़ बताऊं जो तुम्हारी इस दुनिया की तमाम पसन्दीदा चीज़ों और लज़्ज़तों से बहुत ज़्यादा अच्छी है (सुनो) उन लोगों के लिये जो अल्लाह से डरें और तक़वे वाली ज़िन्दगी अपनायें उनके मालिक के पास जन्नत के ऐसे बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं उनमें वह हमेशा हमेशा रहेंगे और (वहां उनके लिये) ऐसी पत्नियां हैं जो बिल्कुल पाक, साफ़ और स्वच्छ हैं (और उनके लिये) अल्लाह की रज़ामन्दी और ख़ुशनूदी है और अल्लाह तआला ख़ूब देखता है अपने सब बन्दों को (सबका खुला और छिपा हाल उसकी नज़र में है)

इस संबंध में सू र ए स्वाद की यह आयत और सुन लीजिये ।

وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَآبٍ ﴿٤٩﴾ جَنَّاتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْأَبْوَابُ ﴿٥٠﴾ مُتَّكِئِينَ فِيهَا

يَدْعُونَ فِيهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ ﴿٥١﴾ وَعِندَهُمْ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ أَتْرَابٌ ﴿٥٢﴾ هَٰذَا
مَا تُوعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٥٣﴾ إِنَّ هَٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ مِن نَّفَادٍ ﴿٥٤﴾

वइन न लिलमुत्तक़ी न लहुस न मआब जन्नाति अदनिम मुफ़त त हू तल लहुमुल अबवाब मुत्तकिई न फ़ीहा यदऊ न फ़ीहा बिफ़ाकि हतिन कसी रतिवं व शराब । वइन द हुम क़ासिरातुत तर्फ़ि अ तराब । हाज़ा मा तुअद् न लियौमिल हिसाब । इन्न हाज़ा लरिज़्क़ुना मा लहू मिन नफ़ाद । [सू र ए स्वाद रूकू ४]

और अल्लाह से डरने वाले बन्दों के लिये बहुत ही अच्छा ठिकाना है । बाग़ हैं सदा बहार हमेशा रहने के लिये । खुले हुये हैं उनके लिये दरवाज़े । बैठे हैं उनमें तकिया लगाये । मंगाते हैं (सेवकों से) मेवे और शरबत । और उनके पास औरतें हैं नीची निगाह वाली । सब एक उम्र की । यह है वह इनाम जिसका वादा किया जा रहा है तुमसे हिसाब के दिन के लिये । बेशक यह है हमारी रोज़ी जो कभी ख़त्म नहीं होगी ।

और क़ुरआन मजीद ही में मुत्तक़ी (डरने वाले) बन्दों को यह ख़ुशख़बरी भी सुनाई गयी है कि अपने मालिक परवरदिगार का ख़ास क़ुर्ब (समीपता) उनको हासिल होगा । सूरए क़मर की आख़री आयत है ।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ﴿٥٤﴾ فِي مَقْعَدِ صِدْقٍ عِندَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ

इन्नल मुत्तक़ी न फ़ी जन्नातिवं व न ह रिन फ़ी मक़अदि सिदक़िन इन द मलीकिम मुक़्तदिर । (सू रए क़मर रूकू -३)

डरने वाले बन्दे (आख़िरत में) जन्नत के बाग़ों और नहरों में रहेंगे । एक अच्छे स्थान में एक ऐसे हक़ीक़ी मालिक के क़रीब जो पूरा इक़्तिदार (सम्पूर्ण अधिकार) रखता है

क़ुरआन मजीद में यह भी एलान किया गया है कि अल्लाह तआला के वहां इज़्ज़त और शराफ़त तक़्वे पर निर्भर है ।

إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ

इन न अक र म कुम इन दल्लाहि अतक़ाकुम । **[सू रए हुजरात २]**

तुम में सब से ज़्यादा इज़्ज़त वाला अल्लाह के नज़दीक वह है जो तक़वे में बड़ा है ।

इसी तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी एक हदीस में फ़रमाया है:-

"मुझसे बहुत क़रीब और मुझे अधिक प्यारे वही लोग हैं जिनमें तक़वे की सिफ़त (गुण) है । चाहे वह किसी भी क़ौम व जाति के हों । और किसी भी देश में रहते हों" ।

तक़वा (यानी ख़ुदा का डर और आख़िरत की चिन्ता) सारी नेकियों की जड़ है । जिस व्यक्ति में जितना तक़वा होगा उसमें उतनी ही नेकियां और अच्छाईयां इकट्ठा होंगी और उतना ही वह बुरे कामों और बुरी बातों से दूर होगा । हदीस शरीफ़ में है कि:-

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सहाबी ने आपकी सेवा में कहा कि हज़रत मैंने आपके बहुत से इरशादात (कथन) और बहुत से आदेश सुने हैं और मुझे डर है कि यह सारी बातें मुझे याद न रह सकें इसलिये आप कोई ऐसी जामे (सम्पूर्ण) नसीहत दें जो मेरे लिये काफ़ी हो । आपने फ़रमाया कि- "अपने इल्म और अपनी जानकारी की हद तक ख़ुदा से डरते रहो । और इसी डर और फ़िक्र और तक़्वे के साथ ज़िन्दगी गुज़ारो" ।

यानी अगर यही एक बात तुमने याद रखी और इसी के अनुसार अमल किये हों तो बस यही तुम्हारे सफ़ल होने के लिये काफ़ी है ।

एक दूसरी हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:-

"जिसको डर होगा वह सवेरे चल पड़ेगा और जो सवेरे चल पड़ेगा वह ठिकाने पर वक़्त पर पहुंच जायेगा" ।

तो ख़ुश नसीब और सफ़ल वही लोग हैं जो अल्लाह से डरें और आख़िरत की फ़िक्र रखें । ख़ुदा के ख़ौफ़ से और उसके अज़ाब के डर से अगर एक आंसू भी आंख से निकले तो अल्लाह तआला के यहां उसकी बड़ी क़दर है । हदीस शरीफ़ में है कि:-

"अल्लाह तआला को आदमी की दो बूंदों और उसके दो निशानों (चिन्हों) से ज़्यादा कोई चीज़ प्यारी नहीं है । दो बूंदे जो अल्लाह को बहुत प्यारी हैं उनमें से एक तो आंसू की वह बूंद है जो अल्लाह के डर से किसी आंख से निकली हो और दूसरी ख़ून की वह बूंद है जो ख़ुदा

की राह में किसी के जिस्म से बही हो, और जो दो निशान अल्लाह को बहुत पसन्द हैं उनमें एक तो वह निशान है जो ख़ुदा की राह में कसी को लगा हो(यानी जिहाद में घाव लगा हो और उसका निशान रह गया हो) और दूसरा वह निशान है जो अल्लाह के फ़र्ज़ किये हुये कामों को करने से पड़ गया हो (जैसा कि नमाज़ियों के माथों और घुटनों में निशान पड़ जाते हैं)"

एक दूसरी हदीस में है कि :-

"ऐसा आदमी कभी दोज़ख़ में नहीं जा सकता जो अल्लाह के डर से रोता हो" ।

ख़ुलासा यह है कि ख़ुदा का सच्चा डर और आख़िरत की फ़िक्र अगर किसी को मिल जाय तो बड़ी बात है और उस डर और चिन्ता से आदमी की ज़िन्दगी सोना बन जाती है ।

भाईयो ! ख़ूब समझ लो कि इस कुछ दिनों वाली दुनिया में जो ख़ुदा से डरता रहेगा मरने के बाद आख़िरत की ज़िन्दगी में उसको कोई डर और ग़म न होगा और वह अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से हमेशा ख़ुश रहेगा और बड़े चैन से रहेगा और जो यहां ख़ुदा से न डरेगा और आख़िरत की चिन्ता न करेगा और दुनिया ही की लज़्ज़तों (स्वादों) में मस्त रहेगा वह आख़िरत में बड़े दुख पायेगा और हज़ारों वर्ष ख़ून के आंसू रोयेगा ।

तक़वा यानी ख़ुदा का डर और आख़िरत की फ़िक्र पैदा होने का सबसे बड़ा ज़रिया और अधिक प्रभावशाली साधन अल्लाह के उन नेक बन्दों की सोहबत (संगत) है जो ख़ुदा से डरते हों और उसके हुक्मों पर चलते हों । दूसरा ज़रिया दीन की अच्छी किताबों का पढ़ना और सुनना है और तीसरा ज़रिया यह है कि अकेले में बैठ-बैठ कर अपनी मौत का ध्यान जमाये और मरने के बाद अल्लाह की तरफ़ से नेकियों पर जो सवाब और गुनाहों पर जो अज़ाब मिलने वाला है उसको याद करे और उसका ध्यान जमाये और अपनी हालत पर विचार करे और सोचे कि क़ब्र में मेरी क्या हालत होगी और क़यामत में जब सब बन्दे उठाये जायेंगे तो उस समय मेरी क्या दशा होगी और जब ख़ुदा के सामने पेशी होगी और मेरा आमालनामा मेरे सामने खोला जायेगा तो मैं क्या जबाब दूंगा और कहाँ मुंह छिपाऊंगा । जो व्यक्ति इन तरीक़ों को अपनायेगा ख़ुदा ने चाहा तो उसको तक़वा नसीब हो जायेगा । अल्लाह तआला हम सबको नसीब करे ।

सातवां सबक़

मामलात में सच्चाई व ईमानदारी और पाक कमाई तथा दूसरे बन्दों के हुक़ूक़ की अहमियत ।

मामलात (आपस के व्यवहारों) में सच्चाई और ईमानदारी की तालीम भी इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं में से है ।

क़ुरआन शरीफ़ से और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों से मालूम होता है कि असली मुसलमान वही है जो अपने मामलात में और अपने कामों तथा धन्धों में सच्चा और ईमानदार हो, वादे का सच्चा और अहद (प्रण) का पक्का हो । यानी धोखा और छल न देता हो और अमानत में ख़यानत (बेईमानी) न करता हो, किसी का हक़ न मारता हो, नाप तोल में कमी न करता हो, झूठे मुक़दमें न लड़ता हो और न झूठी गवाही देता हो । सूद ब्याज और रिश्वत जैसी हराम की कमाईयों से बचता हो और जिसमें यह बुराईयां मौजूद हों क़ुरआन और हदीस से पता चलता है कि वह असली मुसलमान और खरा मोमिन नहीं है बल्कि एक तरह का मुनाफ़िक़ (पाखण्डी) है, और सख़्त नाफ़रमान है । अल्लाह तआला हम सबको इन बुरी बातों से बचाये । इस बारे में क़ुरआन व हदीस में जो सख़्त ताकीदें आई हैं उनमें से थोड़ी सी हम यहां प्रस्तुत करते हैं । क़ुरआन शरीफ़ की छोटी सी आयत है ।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَأْكُلُوٓا۟ أَمْوَٰلَكُم بَيْنَكُم بِٱلْبَٰطِلِ

या अययुहल्लज़ी न आम नू । ला ताकुलू अमवा लकुम बै नकुम बिल बातिलि । (सू रए बक़रह रूकू-२३)

ऐ ईमान वालो तुम किसी ग़लत और नाजायज ढंग से दूसरों का माल न खाओ ।

इस आयत ने कमाई के उन सब तरीक़ों को मुसलमानों के लिये हराम कर दिया है जो अशुद्ध और ग़लत हैं जैसे धोखे फ़रेब की तिजारत, अमानत में ख़यानत. जुवा, सट्टा और सूद, ब्याज, रिश्वत, घूस आदि । फिर दूसरी आयतों में अलग-अलग तफ़सील भी की गई है जैसे जो दुकानदार और सौदागर नाप तौल में

धोखेबाज़ी और बे-ईमानी करते हैं उनके बारे में ख़ास तौर से फ़रमाया गया है ।

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ ۝ ٱلَّذِينَ إِذَا ٱكْتَالُوا۟ عَلَى ٱلنَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ۝ وَإِذَا كَالُوهُمْ أَو وَّزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ۝ أَلَا يَظُنُّ أُو۟لَٰٓئِكَ أَنَّهُم مَّبْعُوثُونَ ۝ لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ يَوْمَ يَقُومُ ٱلنَّاسُ لِرَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ۝

वैलुल लिल मुतफ़ फ़िफ़ी नल्लज़ी. न इज़क्तालू अलन्नासि यस्तौफ़ून । वइज़ा कालूहुम अव व ज़ नूहुम युख़सिरून । अला यज़ुन्नु उलाइ क अन्नहुम मबऊसू न लियौमिन अज़ीम । यौ म यक़ूमुन्नासु लिरब्बिल आ लमीन । [सू रए ततफ़ीफ़]

उन कम देने वालों के लिये बड़ी तबाही (और बड़ा अज़ाब है) जो दूसरे लोगों से जब नाप कर लेते हैं तो पूरा लेते हैं और जब ख़ुद दूसरों के लिये नापते या तोलते हैं तो कम देते हैं । क्या उनको यह ख़्याल नहीं है कि वह एक बहुत बड़े दिन उठाये जायेंगे जिस दिन कि सारे लोग जज़ा और सज़ा (प्रतिफल और दण्ड) के लिये सारे संसार के रब (पालन हार) के सामने हाज़िर होंगे ।

दूसरों के हक़ और दूसरों की अमानतें अदा करने के लिये ख़ास तौर पर हुक्म दिया गया है ।

إِنَّ ٱللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَن تُؤَدُّوا۟ ٱلْأَمَٰنَٰتِ إِلَىٰٓ أَهْلِهَا

इन नल्ला ह यामुरुकुम अन तुअद्दुल अमानाति इला अहलिहा । (सूरतुन्निसा रूकू-८)

अल्लाह तआला तुमको यह हुक्म देता है कि जिन लोगों की जो अमानतें (और हक़) तुम पर हों उनको ठीक-ठीक अदा करो ।

और क़ुरआन शरीफ़ ही में दो जगह[1] असली मुसलमानों की यह सिफ़त (गुण) और उनकी यह पहचान बताई गई है कि :-

---

1. एक सू रए मोमिनून में और दूसरे सू रए मआरिज में ।)

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ○

वल्लज़ी न हुम लिअमानाति हिम व अहदि हिम राऊन
वह जो अमानतों के अदा करने वाले और वादों का पास रखने वाले हैं।

और हदीस शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने अधिकतर भाषणों तथा ख़ुतबों में फ़रमाया करते थे कि :-

"याद रखो जिसमें अमानत की सिफ़त (गुण) नहीं उसमें ईमान भी नहीं और जिसको अपने वचन तथा वादे का पास नहीं उसका दीन (धर्म) में कुछ हिस्सा नहीं"।

एक हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया:-

"मुनाफ़िक़ की तीन पहचानें हैं -- झूठ बोलना, अमानत में ख़यानत करना और वादा पूरा न करना"

तिजारत (व्यापार) और सौदा बेचने में धोखा फ़रेब करने वालों के बारे में आपने फ़रमाया :-

"जो धोखे बाज़ी करे वह हममें से नहीं और मक्र व फ़रेब (छल तथा कपट) दोज़ख़ में ले जाने वाली चीज़ है"

यह बात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस वक़्त फ़रमाई जबकि एक बार मदीने के बाज़ार में आपने एक व्यक्ति को देखा कि बेचने के लिये उसने ग़ल्ले का ढेर लगा रखा है लेकिन ऊपर सूखा अनाज डाल रखा है और भीतर कुछ गीलापन है इसपर हुज़ूर (स०) ने यह इरशाद फ़रमाया कि :-

"ऐसे धोखेबाज़ हमारी जमाअत (संघ) से अलग हैं"।

इसलिये जो दुकानदार ग्राहकों को माल का अच्छा नमूना दिखायें और जो ऐब (अवगुण) हो उसको ज़ाहिर न करें तो हुज़ूर की इस हदीस के अनुसार वह सच्चे मुसलमानों में से नहीं हैं और ख़ुदा न करे वह दोज़ख़ में जाने वाले हैं। एक और हदीस में है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :-

"जो कोई ऐसी चीज़ किसी के हाथ बेचे जिस में कोई ख़राबी हो और ग्राहक पर वह इसको प्रकट न करे तो ऐसा व्यक्ति हमेशा अल्लाह के ग़ज़ब (क्रोध) में गिरफ्तार रहेगा और (एक दूसरी रिवायत में है कि) हमेशा अल्लाह के फ़रिश्ते उस पर लानत करते रहेंगे"।

सारांश यह है कि इस्लामी तालीम के मुताबिक़ व्यापार और कारोबार में हर तरह की धोखेबाज़ी और जाल हराम और लानती काम है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसा करने वालों से अपने ताल्लुक़ (सम्बन्ध) ख़त्म करने

का ऐलान फ़रमाया और उनको अपनी जमाअत से अलग बताया है।

इसी तरह सूद व्याज और रिश्वत का लेन देन भी (चाहे दोनों तरफ़ की रज़ामन्दी से हो) बिल्कुल हराम है और उनके लेने देने वालों पर हदीसों में साफ़ साफ़ लानत आई है। सूद व्याज के बारे में तो मशहूर हदीस है कि हुज़ूर सलल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :-

"अल्लाह की लानत (शाप) हो सूद के लेने वाले पर देने वाले पर और सूदी दस्तावेज़ लिखने वाले पर और उसके गवाहों पर"।

और इसी तरह रिश्वत (घूस) के बारे में हदीस शरीफ़ में है कि :-

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लानत फ़रमाई है रिश्वत के लेने वाले पर और देने वाले पर"

एक हदीस में यहां तक है कि :-

"जिस व्यक्ति ने किसी आदमी के लिये किसी मामले में जायज़ (उचित) सिफ़ारिश की फिर उस आदमी ने उस सिफ़ारिश करने वाले को कोई तोहफ़ा (उपहार) दिया और उसने यह तोहफ़ा क़ुबूल कर लिया तो यह भी उसने बड़ा गुनाह किया (यानी यह भी एक प्रकार की रिश्वत और एक तरह का सूद हुआ)"

बहर हाल रिशवत और सूद का लेन देन और तिजारत में धोका देना और बेईमानी करना इस्लाम में सब एक जैसा हराम है और इन सब से बढ़कर हराम यह है कि झूठी गवाही और झूठी मुक़दमेबाज़ी से या ज़ोर ज़बर्दस्ती से किसी दुसरे की चीज़ पर नाजायज़ ढंग से क़ब्ज़ा कर लिया जाये। एक हदीस में है कि :-

"जिस शख़्स ने किसी की ज़मीन के कुछ भी हिस्से पर नाजायज़ क़ब्ज़ा कर लिया तो क़यामत के दिन उसको यह अज़ाब दिया जायेगा कि ज़मीन के उस टुकड़े के साथ उसको ज़मीन में धंसा दिया जायेगा यहां तक कि सबसे नीचे के हिस्से तक धंसता चला जायेगा"

एक और हदीस में है कि :-

"जिस शख़्स ने (शासक के सामने) झूठी क़सम खाकर किसी मुसलमान की किसी चीज़ को नाजायज़ ढंग से हासिल कर लिया तो अल्लाह ने उसके लिये दोज़ख़ की आग वाजिब (अनिवार्य) कर दी है और जन्नत उसके लिये हराम कर दी है। यह सुनकर किसी ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल ! चाहे वह छोटी सी चीज़ हो। आपने फ़रमाया कि हां, चाहे वह पीलू के जंगली पेड़ की टहनी ही क्यों न हो"

एक और हदीस में है कि रसूल (स०) ने एक मुक़दमेबाज़ को आगाह (सचेत) करते हुये फ़रमाया :-

"देखो जो शख़्स झूठी क़सम खाकर किसी दूसरे का कोई भी माल नाजायज़ ढंग से हासिल करेगा वह क़यामत में अल्लाह के सामने कोढ़ी होकर पेश होगा"।

एक और हदीस में है कि :-

"जिस किसी ने किसी ऐसी चीज़ पर दावा किया जो असल में उसकी नहीं है तो वह हममें से नहीं है और उसे चाहिये कि दोज़ख़ में अपनी जगह बना ले"।

और झूठी गवाही के बारे में एक हदीस में है कि :-

"हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक दिन सुबह की नमाज़ पढ़कर खड़े हो गये और अपने एक ख़ास अन्दाज़ में तीन बार फ़रमाया कि झूठी गवाही शिर्क (ख़ुदा के लिये साझी ठहराना) के बराबर कर दी गई है"।

हराम माल की नापाकी और नहूसत :-

माल हासिल करने के जिन नाजायज़ और हराम ज़रियों (माध्यमों) को ऊपर बयान किया गया है उनसे जो भी माल हासिल होगा वह हराम और नाजायज़ होगा और जो शख़्स उसका इस्तेमाल अपने खाने पहनने में करेगा उसके बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान है कि उसकी नमाज़ें क़ुबूल न होंगी, दुआयें क़ुबूल न होंगी यहां तक कि अगर वह उस माल से कोई अच्छा काम करेगा वह भी अल्लाह की ख़ास रहमतों से मेहरूम (वंचित) रहेगा। एक हदीस में है कि :-

"जो शख़्स (किसी नाजायज़ ढंग से) कोई हराम माल हासिल करेगा और उस माल से सदक़ा (दान) करेगा तो उसका यह सदक़ा क़ुबूल न होगा और उसमें से जो कुछ (अपनी आवश्यकताओं) में ख़र्च करेगा उसमें बरकत न होगी और अगर उसको छोड़कर मरेगा तो वह उसके लिये दोज़ख़ की पूंजी होगी, यक़ीन करो कि अल्लाह बुराई को बुराई से नहीं मिटाता (यानी हराम माल का सदक़ा गुनाहों की माफ़ी का ज़रिया नहीं बन सकता) बल्कि अल्लाह बुराई को नेकी से मिटाता है। कोई नापाकी दूसरी नापाकी को ख़त्म करके उसको पाक नहीं कर सकती"।

एक और हदीस में है कि रसूल स० ने फ़रमाया कि :-

"अल्लाह तआला ख़ुद पाक है और वह पाक और हलाल (नियमानुसार कमाए हुए) माल ही को क़ुबूल करता है। इस हदीस के आख़िरी हिस्से में अल्लाह के पाक रसूल ने एक ऐसे शख़्स का ज़िक्र किया जो बड़ा लम्बा सफ़र करके (किसी ख़ास बरकत वाली जगह दुआ करने के लिये) इस हालत में आये कि उसके बाल बिखरे हुये हों और सिर से पांव तक वह धूल में अटा हुआ हो और आसमान की तरफ़ वह दोनों हाथ उठाकर रो रो कर दुआ करे और कहे, ऐ मेरे पालने वाले! ऐ मेरे परवरदिगार। लेकिन उसका खाना पीना हराम माल से हो और उसके कपड़े भी हराम के हों और हराम माल ही से उसकी परवरिश (पालन-पोषण) भी हुई हो तो इस हालत में उसकी यह दुआ कैसे क़ुबूल होगी"।

मतलब यह है कि जब खाना पहनना सब हराम माल से हो तो दुआ की क़ुबूलियत का कोई हक़ नहीं रहता। एक दूसरी हदीस में है कि रसूल (स०) ने फ़रमाया :-

"यदि कोई एक कपड़ा दस दिरहम में ख़रीदे और उन दस दिरहम में से एक दिरहम हराम ढंग से आया हो तो जब तक वह कपड़ा उसके शरीर पर होगा उस शख़्स की कोई नमाज़ भी अल्लाह के दरबार में क़ुबूल न होगी"।

एक और हदीस में है कि :-

"जो शरीर हराम धन से पला हो वह जन्नत में न जा सकेगा"।

भाईयो! हमारे दिल में ज़र्रा बराबर भी ईमान है तो अल्लाह के पाक रसूल के इन इरशादात (कथनों) को सुनकर हमको तय कर लेना चाहिये कि हमको दुनिया में चाहे जितनी ग़रीबी और चाहे जितनी तकलीफ़ से ज़िन्दगी गुज़ारनी पड़े लेकिन हम कभी किसी नाजायज ढंग से कोई पैसा कमाने की कोशिश नहीं करेंगे और सिर्फ़ पाक और हलाल कमाई ही पर क़नाअत करेंगे।

पाक कमाई और कारोबार में ईमानदारी :-

इस्लाम में जिस तरह कमाई के नाजायज़ तरीक़ों को हराम और उनसे हासिल होने वाले माल को नापाक और ख़बीस (भ्रष्ट) बताया गया है उसी प्रकार हलाल (नियमानुसार) तरीक़ों से रोज़ी हासिल करने और ईमानदारी के साथ व्यापार और कारोबार करने की बड़ी फ़ज़ीलत बताई गई है।

एक और हदीस में है कि :-

"हलाल कमाई की खोज भी दीन के फ़राइज़ (अनिवार्य कर्त्तव्यों) के बाद एक फ़रीज़ा है" ।

एक दूसरी हदीस में अपनी मेहनत से रोज़ी कमाने की फ़ज़ीलत बयान करते हुए रसूल (स०) ने इरशाद फ़रमाया :-

"किसी ने अपनी रोज़ी इससे बेहतर तरीक़े से हासिल नहीं की कि उसने ख़ुद अपने हाथों व बाज़ुओं से उसके लिये काम किया हो, और अल्लाह के नबी दाऊद (उन पर अल्लाह का सलाम हो) का यही तरीक़ा था कि वह अपने हाथ से कुछ काम करके अपनी रोज़ी हासिल करते थे" ।

एक हदीस में है कि :-

"सच्चाई और ईमानदारी के साथ कारोबार करने वाला व्यापारी (क़यामत में) नबियों, सिद्दीक़ों (सच्चों) और शहीदों के साथ होगा" ।

मामलात में नरमी और रहमदिली :-

माली मामलात (आर्थिक व्यवहार) और कारोबार में जिस तरह सच्चाई और ईमानदारी पर इस्लाम में बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया गया है और उसको ऊंचे दर्जे की नेकी और अल्लाह के क़ुर्ब (समीपता) का ज़रिया माना गया है इसी तरह इसकी भी बड़ी तरग़ीब (प्रेरणा) दी गयी है और बड़ी फ़ज़ीलत बयान की गई है कि मामलात और आपस के लेन देन में नर्मी का ढंग अपनाया जाये और सख़्ती से काम न लिया जाये । एक हदीस में आया है कि :-

"अल्लाह की रहमत हो उस बन्दे पर जो बेचने और ख़रीदने में और दूसरों से अपना हक़ वसूल करने में नर्म हो" ।

एक दूसरी हदीस में है कि :-

"जो शख़्स किसी ग़रीब बन्दे को (उधार चुकाने में) वक़्त दे दे या (पूरा या उसका कुछ हिस्सा) माफ़ कर दे तो अल्लाह तआला उसको क़यामत के दिन की कठिनाईयों से छुटकारा दे देगा । एक दूसरी रिवायत में है कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला उसको अपनी रहमत के साये (छाया) में जगह देगा" ।

हुज़ूर (स०) के इन इरशादात का सम्बन्ध तो व्यापारियों और उन मालदारों से है जिनसे ग़रीब लोग अपनी ज़रूरतों में उधार ले लेते हैं लेकिन जो लोग किसी से उधार लें तो उनको स्वयं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

इस बात की बड़ी ताकीद फ़रमाते थे कि जहां तक हो सके वह जल्दी से जल्दी उधार चुकाने की कोशिश करें और ऐसा न हो कि वह उधार चुकाने से पहले ही दुनिया से चले जायें और उनके ऊपर किसी का हक़ बाक़ी रह जाये । इस बारे में आप जितना ज़ोर देते थे उसका अन्दाज़ा हुज़ूर (स०) के इन इरशादात से हो सकता है । एक हदीस में है कि :-

"यदि कोई शख़्स अल्लाह की राह में शहीद हो जाये तो उसकी शहादत के तुफ़ैल (माध्यम से) उसके सब गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे लेकिन यदि किसी का उधार उसके ऊपर बाक़ी है तो उसके इस उधार का बोझ उसकी शहादत भी न उतार सकेगी" ।

एक और हदीस में है कि :-

"उस परवरदिगार की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है अगर कोई शख़्स ख़ुदा की राह में शहीद हो फिर ज़िन्दा किया जाये और फिर शहीद हो और फिर ज़िन्दा किया जाये और फिर शहीद हो और उसके ज़िम्मे किसी का उधार बाक़ी हो तो (उस उधार का फ़ैसला हुए बिना) वह शहीद भी जन्नत में न जा सकेगा"

माली मामलात और दूसरे बन्दों के हुक़ूक़ की अहमियत का अन्दाज़ा करने के लिये सिर्फ़ यही दो हदीसें काफ़ी हैं । अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे कि हम भी इनकी अहमियत और बारीकी को समझें और हमेशा इसकी कोशिश करते रहें कि किसी बन्दे का कोई हक़ हमारी गरदन पर न रह जाय ।

आठवां सबक़

आपस के बर्ताव और एक दूसरे के हुक़ूक़ व आदाब के बारे में इस्लाम के आदेश ।

मआश्रित के आदाब (सामाजिक शिष्टाचार) और हुक़ूक़ (अधिकार) की तालीम भी इस्लाम की ख़ास तालीमात में से है और एक मुसलमान सच्चा और पक्का मुसलमान तब ही हो सकता है जब कि वह इस्लाम के सामाजिक आदेशों का भी पूरी तरह से पालन करे । सामाजिक आदेशों से हमारा मतलब आपस के बर्ताव (व्यवहार) के वह तरीक़े हैं जो इस्लाम ने सिखाये हैं जैसे यह कि औलाद (सन्तान) का व्यवहार माता पिता के साथ कैसा हो और माता पिता का बर्ताव औलाद के साथ किस तरह का हो । एक भाई दूसरे भाई के साथ किस तरह पेश आये, बहिनों के साथ किस तरह का सुलूक किया जाये, पति पत्नी किस तरह रहें और बड़े छोटों के साथ कैसा बरताव करें । पड़ोसियों के साथ हमारा रवय्या (बर्ताव) कैसा हो । अमीर ग़रीब के साथ किस तरह का सुलूक करें और ग़रीब अमीर के साथ कैसा रवय्या रखें । मालिक का सम्बन्ध नौकर के साथ और नौकर का बर्ताव मालिक के साथ कैसा हो ? सारांश यह है कि इस दुनिया वाली ज़िन्दगी में कई तरह के तबक़ों (श्रेणियों) के जिन छोटे बड़े लोगों से हमारा वास्ता पड़ता है उनके साथ बर्ताव और रहन-सहन के बारे में इस्लाम ने हमको जो पूरी तरह से मुकम्मल और रोशन हिदायतें (आदेश) दी हैं वह मआशिरत के अहकाम (सामाजिक आदेश) व आदाब हैं और इस सबक़ में हम उन्हीं का कुछ बयान करना चाहते हैं ।

मां बाप के हुक़ूक़ और उनका अदबः-

इस दुनिया में आदमी का सबसे पहला और सबसे बड़ा तअल्लुक़ माँ बाप से ही है । इसलाम ने अल्लाह के हक़ के बाद सबसे बड़ा हक़ मां बाप ही का बतलाया है । क़ुरआन शरीफ़ में है:-

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ
الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا
قَوْلًا كَرِيْمًا ۝ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ
ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ۝

व क़ज़ा रब्बु क अल्ला ताबुदू इल्ला इय्याहु व बिल वालिदैनि एहसाना । इम्मा यबलुग़न न इन दकल कि ब र अ ह दुहुमा औ किलाहुमा फ़ला तक़ुल्लहुमा उफ़्फ़िंव वलातनहर हुमा व क़ुल्लहुमा क़ौलन करीमा । वख़्फ़िज़ लहुमा जनाहज़्ज़ुल्लि मिनर्रह मति व क़ुर रब्बिर हमहुमा कमा रब्बयानी सग़ीरा ।

[सू एए बनी इसराईल, रूकू-३]

"और तेरे रब ने अटल हुक्म दिया है कि उसके सिवा तुम किसी की इबादत और बन्दगी न करो और मां बाप के साथ अच्छाई करो अगर इनमें से एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुंच जायें तो उनको ऊंह भी न कहो और उनको न झिड़को और उनसे अदब व तमीज़ और छोटे बनकर और ख़ाकसारी के साथ उनका कहना मानो और उनके लिये ख़ुदा से इस तरह दुआ करते रहो कि ऐ परवरदिगार तू इनपर रेहमत कर जैसे उन्होंने मुझको बचपन में प्यार व मुहब्बत से पाला पोसा ।"

क़ुरआन शरीफ़ ही की दूसरी आयत में मां बाप का हक़ बताते हुये यहां तक फ़रमाया गया है कि :-

"अगर मानलो किसी के मां बाप काफ़िर व मुश्रिक हों और वह औलाद पर भी कुफ़्र व शिर्क के लिये दबाव डालें तो औलाद को चाहिये कि उनके कहने से कुफ़्र व शिर्क तो न करे लेकिन दुनिया में उनके साथ अच्छा बरताव और उनकी ख़िदमत करती रहे"

आयत के शब्द यह हैं:-

وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰٓى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا
وَصَاحِبْهُمَا فِى الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا

"वइन जा हदा क अला अन तुश्रि क बी मा लै स ल क

बिही इल्मुन फ़ला तुतीहुमा व साहिबहुमा फ़िद्दुनिया मारूफ़ा
[सू रए लुक़मान रूकू-२]

क़ुरआन शरीफ़ के अलावा हदीसों में भी मां बाप की ख़िदमत करने और उनका कहना मानने पर बहुत ज़ोर दिया गया है और उनका कहना न मानने और उनको तकलीफ़ पहुंचाने को बड़ा गुनाह बताया गया है । एक हदीस में है कि :-

"मां बाप की खुशी में अल्लाह की रज़ामन्दी है और मां बाप की नाराज़ी में अल्लाह की नाराज़ी है"

एक दूसरी हदीस में है कि:-

"एक शख़्स ने हुज़ूर (स०) से पूछा कि औलाद पर मां बाप के क्या हुक़ूक़ हैं ? आप (स०) ने फ़रमाया :

"औलाद की जन्नत और दोज़ख़ मां बाप हैं" (यानी उनकी ख़िदमत करने से जन्नत मिल सकती है और उनका कहना न मानना और उनके साथ अच्छा बरताव न करना दोज़ख़ में ले जाने वाला है) ।

एक और हदीस में है आप (स०) ने फ़रमाया कि:-

"मां बाप की ख़िदमत और उनका कहना पूरा करने वाला लड़का या लड़की जितनी बार भी मुहब्बत और अज़मत (सम्मान) की नज़र से मां बाप की तरफ़ देखेगा तो अल्लाह तआला उसके हर देखने के बदले में एक मक़बूल हज का सवाब उसके लिये लिख देते हैं" लोगों ने हुज़ूर (स०) से सवाल किया कि हज़रत ! यदि वह रोज़ाना सौ बार देखें जब भी हर बार के देखने के बदले में उसको क्या एक मक़बूल हज का सवाब मिलेगा ? हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया हां ! अल्लाह बहुत बड़ा है और बहुत पाक है । (यानी यह कि उस के यहां कोई कमी नहीं वह जिस अमल पर जितना चाहे बदला दे सकता है)" ।

एक हदीस में है कि:-

"जन्नत मां बाप के पांव के नीचे है" ।

एक और हदीस में है कि हुज़ूर (स०) ने सहाबए किराम (महान सतसंगियों) को सबसे बड़े गुनाह यह बतलाये:-

"किसी को अल्लाह का शरीक (साझी) ठहराना, मां बाप का कहना न मानना और झूठी गवाही देना" ।

एक और हदीस में है कि हुज़ूर ने फ़रमाया :-

"तीन क़िस्म के आदमी हैं जिनकी तरफ़ अल्लाह तआला क़यामत के

दिन रहमत की नज़र से नहीं देखेगा । उनमें से एक क़िस्म वह लोग हैं जो मां बाप का कहना पूरा नहीं करते हैं" ।

औलाद के हुक़ूक़:-

इस्लाम ने जिस तरह औलाद पर मां बाप के हुक़ूक़ (अधिकार) मुक़र्रर किये हैं उसी तरह मां बाप पर औलाद के कुछ अधिकार रखे हैं । जहां तक कि उनको खिलाने पिलाने और पहनाने के हक़ की बात है उसके बयान करने की यहां ज़रूरत नहीं क्योंकि औलाद के इस हक़ का ध्यान हमको ख़ुद भी होता है । हां औलाद के जिस हक़ को अदा करने में हमसे आम तौर से चूक होती है वह उनकी दीनी और अख़लाक़ी (धार्मिक और चारित्रिक) देखभाल है । अल्लाह तआला ने हमारे ऊपर फ़र्ज़ किया है कि हम अपनी औलाद और अपने बाल बच्चों की देख-रेख इस तरह करें कि वह मरने के बाद जहन्नम में न जायें । क़ुरआन शरीफ़ में है कि:-

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا

या अय्यु हल्लज़ी न आ मनू क़ू अनफु स कुम व अहलीकुम नारा । (सू रए तहरीम रूकू २)

ऐ ईमान वालो ! अपने आपको और अपने बाल बच्चों को जहन्नम की आग से बचाओ ।

औलाद की अच्छी तरबियत (दीक्षा) और देख-रेख की बड़ाई रसूलुल्लाह (स०) ने एक हदीस में इस तरह बयान की है:-

"बाप की तरफ़ से औलाद के लिये इससे अच्छा कोई दूसरा अतीया (उपहार) नहीं है कि वह उनकी अच्छी तरबीयत करे" ।

कुछ लोगों को अपनी औलाद में लड़कों से ज़्यादा प्यार और लगाव होता है और बेचारी लड़कियों को वह बोझ समझते हैं और इसलिये उनकी देख रेख और पढ़ाई में कमी करते हैं । इस्लाम में लड़कियों की अच्छी तरबियत पर ख़ास तौर से ताकीद की गई है । एक हदीस में है आप (स०) ने फ़रमाया:-

"जिस शख़्स के बेटियां या बहनें हों और वह उनके साथ बहुत अच्छा बरताव करे और उनको अच्छी तरबियत दे और (उचित स्थान पर) उनकी शादी करे तो अल्लाह तआला उनको जन्नत देगा" ।

मियां-बीवी के हुक़ूक़:-

इन्सानों के आपसी सम्बन्ध में पति- पत्नी का ताल्लुक़ भी एक अहम ताल्लुक़ है और यूं कहना उचित है कि उन दोनों का चोली दामन का साथ है । इसलिये इस्लाम ने इसके बारे में बहुत साफ़ साफ़ हिदायतें दी हैं । इस बारे में इस्लाम की तालीम का ख़ुलासा यह है कि बीवी को चाहिये कि अपने मियां की पूरी ख़ैर ख़ुवाह (शुभचिन्तक) हो और उसके हुक्मों को माने और उसकी अमानत में किसी तरह की ख़यानत न करे । क़ुरआन शरीफ़ में है:-

فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ

फ़स्सालिहातु क़नितातुन हाफ़िज़ातुन लिल ग़ैबि (सू रए अन्निसा रूकू-६)

यह नेक औरतें फ़र्माबरदार (आज्ञाकारी) होती हैं और मियां के मौजूद न होने पर उनकी अमानत की हिफ़ाज़त करती हैं ।

और शौहरों को इस्लाम का हुक्म है कि वह बीवी के साथ पूंरी मुहब्बत करें और अपनी हैसियत (और सामर्थ्य) के मुताबिक़ अच्छा खिलायें और अच्छा पहनायें और उनको ख़ुश रखने में कमी न करें । क़ुरआन शरीफ़ में है कि :-

وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ

व आशिरूहुन न बिल मारूफ़ि (सूरतुन्निसा रूकू-३)

बीवियों के साथ अच्छा बरताव रखो

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ुरआन के इस आदेश के मुताबिक़ मुसलमान मर्दों और औरतों को आपस में अच्छे सुलूक की ओर एक दूसरे को ख़ुश रखने की बड़ी ताकीद फ़रमाया करते थे । इस सिलसिले की कुछ हदीसें यह हैं :

एक बार आपने औरतों को हिदायत देते हुये फ़रमाया:-

"जो शख़्स अपनी बीवी को अपने पास बुलाये और वह न आये और वह शख़्स रात को उससे नाराज़ रहे तो फ़रिश्ते सवेरे तक उस पर लानत करते हैं" ।

और इसके विरुद्ध एक दूसरी हदीस में हुज़ूर (स०) ने इरशाद फ़रमाया:-

"जो औरत इस हालत में मरे कि उसका शौहर उससे ख़ुश रहा हो तो वह जन्नत में आयेगी" ।

एक और हदीस में है हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया:-

"क़सम उसकी जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है कोई औरत अल्लाह का हक़ उस समय तक अदा नहीं कर सकती जब तक कि वह अपने शौहर का हक़ अदा ने कर दे" ।

और एक ख़ास मौक़े पर मुसलमानों के बहुत बड़े मजमें में ख़ास कर मर्दों को सुनाते हुये आपने फ़रमाया:-

"मैं तुमको औरतों के साथ अच्छे बरताव की ख़ास तौर से वसीयत करता हूं तुम मेरी इस वसीयत को याद रखना । देखो वह तुम्हारी मातेहत (अधीन) हैं और तुम्हारे बस में हैं" ।

एक और हदीस में है हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया:-

"तुम में अच्छे वह हैं जो अपनी बीवियों के लिये अच्छे हैं" ।

एक दूसरी रिवायत (हदीस) में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:-

"मुसलमानों में पूरे ईमान वाले वह हैं कि जिनके अख़लाक़ (स्वाभाव) अच्छे हों और अपनी घर वालियों के साथ जिनका बरताव नर्मी और मुहब्बत का हो" ।

दूसरे रिश्तेदारों के हुक़ूक़:-

मां, बाप, औलाद और मियां बीवी के ताल्लुक़ात के अलावा आदमी का **एक ख़ास** ताल्लुक़ अपने आम रिश्तेदारों के साथ भी होता है । इस्लाम ने इस ताल्लुक़ और रिश्ते नाते का भी बड़ा ख़्याल रखा है । और इसके अनुसार कुछ आपसी हुक़ूक़ बताये हैं । इसलिये क़ुरआन शरीफ़ में जगह-जगह ज़विल क़ुरबा (नाते दारों) के साथ अच्छे बरताव पर ज़ोर दिया गया है और इस्लाम में उस आदमी को बहुत बड़ा मुजरिम और महा पापी बताया गया है जो नातेदारी के हुक़ूक़ को पैरों से रौंदे ।

एक हदीस में है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:-

"क़राबत (नातेदारी)के हक़ को पैरों से रौंदने वाला और अपने बरताव में रिश्तों नातों का ख़्याल न रखने वाला जन्नत में नहीं जाएगा ।"

फिर इस सिलसिले में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक ख़ास तालीम और ताकीद यह है कि मान लो अगर तुम्हारा कोई नातेदार नातेदारी का हक़ अदा न करे तब भी तुम उसकी नातेदारी का हक़ अदा करते रहो । हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक हदीस में फ़रमाया कि:-

"तुम्हारा जो नातेदार तुमसे सम्बन्ध और नाता तोड़ने का बरताव करे और नातेदारी का हक़ अदा न करे तो तुम उससे ताल्लुक़ न तोड़ो। अपनी तरफ़ से तुम उसकी नातेदारी का हक़ अदा करते रहो"।

(صِلْ مَنْ قَطَعَكَ الخ) सिल मन क़ त अ क (अंत तक)

अर्थात जो तुमसे तोड़े तुम उससे जोड़ो।

बड़ों के छोटों पर और छोटों के बड़ों पर आम हुक़ूक़:-

इस्लाम ने मुआशिरत (सामजिक जीवन) के संबन्ध में एक आम और उसूली तालीम यह भी दी है कि हर छोटा अपने बड़ों की इज़्ज़त करे और उनके सामने अदब से रहे। और हर बड़े को चाहिये कि अपने छोटों से मुहब्बत और नर्मी का बरताव करे (चाहे उनमें आपस में कोई नातेदारी न हो) इस्लाम की नज़र में यह बात इतनी अहम (महत्वपूर्ण) है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक हदीस में ऐलान किया है कि:-

"जो बड़ा अपने छोटों पर शफ़क़त (नर्मी व प्यार) न करे और जो छोटा अपने बड़ों का अदब व लिहाज़ न करे वह हममें से नहीं है"।

एक और हदीस में है हुज़ूर (स०) ने इरशाद फ़रमाया:-

"जो जवान किसी बूढ़े बुज़ुर्ग की उसकी बड़ी उम्र की वजह से इज़्ज़त करेगा तो अल्लाह उसके लिये भी ऐसे लोग नियुक्त कर देगा जो उसके बुढ़ापे में उसकी इज़्ज़त करेंगे"।

पड़ोसी के हुक़ूक़:-

इन्सान का अपने नातेदारों के अलावा एक ताअल्लुक़ अपने पड़ोसियों के साथ होता है, इस्लाम ने इस सम्बन्ध को भी बड़ी अहमियत दी है और इसके लिये अलग और तफ़सील से हिदायतें दी हैं। क़ुरआन मजीद में जहां मां, बाप, मियां, बीवी और दूसरे नातेदारों के साथ अच्छे बरताव का हुक्म दिया गया है वहां पड़ोसियों के बारे में भी इसकी ताकीद की गई है।

इरशाद है कि:- وَالْجَارِ ذِى الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ

वल जारि ज़िल क़ुरबा वल जारिल जुनुबि वस्साहिबि बिल जम्बि

इस आयत में तीन तरह के पड़ोसियों का ज़िक्र है और इनमें से हर तरह

के पड़ोसियों के साथ अच्छे बरताव का हुक्म दिया गया है। "वल जारि ज़िल क़ुरबा" से वह पड़ोसी मुराद हैं जिनसे पड़ोस के अलावा कोई ख़ास नाता भी हो- और "वल जारिल जुनुबि" से वह पड़ोसी मुराद हैं जिनसे पड़ोस के अलावा कोई ख़ास नाता न हो सिर्फ़ पड़ोसी ही का संबंध हो जिसमें वह पड़ोसी भी सम्मिलित हैं जो मुसलमान न हों और "वस्साहिबि बिल जम्बि" से मुराद वह लोग हैं जिनका कहीं इत्तेफ़ाक़ से साथ हो गया हो जैसे सफ़र (यात्रा) के साथी या स्कूल के साथी, या साथ रहकर काम काज करने वाले, चाहे वह मुसलमान हों या ग़ैर मुस्लिम। इन तीनों तरह के पड़ोसियों और साथियों के साथ अच्छे बरताव का इस्लाम ने हमको हुक्म दिया है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस पर इतना ज़ोर दिया करते थे कि एक हदीस में है, आप (स०) ने फ़रमाया।

"जो शख़्स ख़ुदा और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो वह अपने पड़ोसी को कोई तकलीफ़ और दुख न पहुंचाये"

एक दूसरी हदीस में है कि हुज़ूर (स०) ने इरशाद फ़रमाया:-

"वह मुसलमान नहीं जो ख़ुद पेट भर खाये और बग़ल में रहने वाला पड़ोसी भूखा रहे"।

एक दूसरी हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार बड़े जलाल (गुस्से) के साथ फ़रमाया:-

"ख़ुदा की क़सम वह असली मोमिन (मुसलमान) नहीं, अल्लाह की क़सम वह पूरा मोमिन नहीं, वल्लाह वह पूरा मोमिन नहीं" पूछा गया कि हुज़ूर (स०)कौन पूरा मोमिन नहीं ? इरशाद फ़रमाया "जिसके पड़ौसी उसकी शरारतों से अमन में नहीं"

एक और हदीस में है कि हुज़ूर (स०) ने इरशाद फ़रमाया:-

"वह आदमी जन्नत में नहीं जायेगा जिसकी शरारतों से उसके पड़ोसी अमन में नहीं"।

एक और हदीस में है:-

"किसी सहाबी ने हुज़ूर (स०) से अर्ज़ किया कि हुज़ूर (स०) फ़लां (अमुक) औरत के बारे में कहा जाता है कि वह बड़ी नमाज़ें पढ़ती है, बहुत रोज़े रखती है और ख़ूब ख़ैरात (दान-पुन्न) करती है लेकिन अपनी ज़ुबान की तेज़ी से पड़ोसियों को तकलीफ़ भी पहुंचाती है ? हुज़ूर(स०) ने इरशाद फरमाया कि "वह दोज़ख़ में जायेगी"। फिर उन्हीं सहाबी ने निवेदन किया, या रसूलल्लाह ! और फ़लां औरत के

बारे में कहा जाता है कि वह नमाज़ रोज़ा और ख़ैरात तो बहुत नहीं करती (यानी नफ़िल नमाज़ें व नफ़िल रोज़े और नफ़िल सदक़े तो पहली औरत के मुक़ाबले में कम करती है) लेकिन पड़ोस वालों को अपनी ज़ुबान से कभी तकलीफ़ नहीं देती ?'' तो हुज़ूर (स०) ने इरशाद फ़रमाया कि ''वह जन्नत में जायेगी'' ।

भाईयो ! यह हैं इस्लाम में पड़ोसियों के हुक़ूक़ । अफ़सोस है कि आज हम इन अहकाम से कितने अन्जान हैं ।

कमज़ोरों और ज़रूरतमन्दों के हुक़ूक़:-

यहां तक जिन लोगों के हुक़ूक़ का बयान किया गया यह सब वह थे जिनसे आदमी का कोई ख़ास ताअल्लुक़ और रख-रखाव होता है चाहे नातेदारी हो या पड़ोस या संग साथ, लेकिन इस्लाम ने इनके अलावा हर तरह के कमज़ोर तबक़ों और हर तरह के ज़रूरतमन्दों के हुक़ूक़ भी मुक़र्रर किये हैं । जो लोग कुछ हैसियत और सामर्थ्य रखते हैं उन पर लाज़िम (अनिवार्य) किया है कि वह उनकी देख रेख रखें और उनकी सेवा किया करें और अपनी दौलत और कमाई में उनका भी हक़ और हिस्सा समझें । क़ुरआन शरीफ़ में बीसियों जगह इस पर ज़ोर दिया गया है और इसका हुक्म दिया गया है कि अनाथों, ग़रीबों, दीन-दुखियों और मुसाफ़िरों और दूसरे ज़रूरतमन्दों की सेवा और मदद की जाये । भूखों के खाने का और नंगों के कपड़ों का इन्तेज़ाम किया जाये आदि ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी इस पर बड़ा ज़ोर दिया है और इसके लिये बहुत ही तरग़ीब (प्रोत्साहन) दी है और इसकी बड़ी फ़ज़ीलतें बताई हैं, इस सिलसिले की कुछ हदीसें यह हैं ।

एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी दो उंगलियां बराबर करके फ़रमाया ।

''किसी यतीम बच्चे की परवरिश (पालन पोषण) करने वाला शख़्स जन्नत में मुझ से इतना क़रीब होगा जिस तरह यह दो उंगलियां मिली हुई हैं'' ।

एक दूसरी हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया:-

''बेवाओं (विधवाओं) ग़रीबों और मोहताजों की देख-रेख और मदद के लिये दौड़ -धूप करने वाला शख़्स ख़ुदा के रास्ते में मुजाहिद (तन-मन

की बाज़ी लगा देने वाले) के दर्जे पर है और सवाब में उस शख़्स के बराबर है जो हमेशा दिन को रोज़ा रखता हो और रात नफ़िल[1] नमाज़ों में काटता हो'' ।

एक और हदीस में है कि हुज़ूर (स०) ने मुसलमानों को हुक्म दिया:-

''जो भूखे हों उनके खाने का इन्तेज़ाम करो । बीमारों की देख-भाल करो, क़ैदियों को छुड़ाओ'' ।

एक और हदीस में है कि आपने लोगों को हिदायतें देते हुये फ़रमाया:-

''मुसीबत के मारों की मदद करो और भटके हुओं को रास्ता बताओ'' ।

इन हदीसों में आपने मुस्लिम और ग़ैर-मुस्लिम (अन्य धर्मों के मानने वालों) में कोई फ़र्क़ नहीं रखा बल्कि कुछ हदीसों में तो आपने जानवरों के साथ अच्छे बरताव पर बहुत ज़ोर दिया है और बेज़बान जानवरों पर तरस खाने और उनकी देख-रेख करने वालों को अल्लाह की रहमत की ख़ुशख़बरी सुनाई है । वास्तव में इस्लाम सारे संसार और सारी मख़लूक़ (जीवधारियों) के लिये रहमत है, और हमें सही रास्ता दिखाने वाले हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रहमतुन लिलआलमीन (सारे संसार वालों के लिये रहमत) हैं । लेकिन हम ख़ुद ही आपके अहकाम और पैग़ाम से दूर हो गये । क्या ही अच्छा हो कि हम भी सच्चे मुसलमान बनकर सारी दुनिया के लिये रहमत बन जायें ।

मुसलमान पर मुसलमान का हक़:-

नातेदारी और पड़ोस और आम इन्सानी हुक़ूक़ (सामान्य मानव अधिकारों) के अलावा हर मुसलमान पर दूसरे मुसलमान के कुछ हुक़ूक़ हैं । इस बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कुछ हदीसें यह हैं । हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया :-

''हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है उसके लिये यह ज़रूरी है कि न तो उसपर ख़ुद कोई ज़ुल्म और ज़बर्दस्ती करे और (अगर) कोई दूसरा उस पर ज़ुल्म (अत्याचार) करे तो यह उसको अकेला छोड़कर अलग न हो जाये (बल्कि हो सके तो उसकी मदद करे और उसका साथ दे) तुममें से जो कोई अपने भाई की ज़रूरत पूरी करने में लगा रहेगा तो अल्लाह तआला उसकी ज़रूरत पूरी करने में लगा रहेगा और

(१. वह नमाज़ जो पढ़ी जाये तो सवाब होता है और अगर न पढ़ी जाये तो उस पर कोई सज़ा नहीं मिलती ।)

जो मुसलमान किसी दूसरे मुसलमान की तकलीफ़ दूर करेगा तो अल्लाह तआला उसके बदले में क़यामत में उसको किसी तकलीफ़ से छुटकारा देगा और जो शख़्स किसी मुसलमान का ऐब ढांकेगा अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसके ऐब ढांकेगा''

एक और हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:-

''तुम आपस में दुश्मनी व बैर न रखो, हसद (डाह) न करो, ग़ीबतें[1] न करो और एक अल्लाह के बन्दे और भाई भाई बनकर रहो, और किसी मुसलमान के लिये हलाल (उचित) नहीं है कि वह अपने मुसलमान भाई से तीन दिन से ज़्यादा सलाम और बात-चीत छोड़ दे'' ।

एक और हदीस में है कि हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया:-

''मुसलमान का माल, उसकी जान और उसकी आबरू(मान-मर्यादा) मुसलमान पर बिल्कुल हराम[2] है'' ।

अब हम रहन-सहन के नियमों के और आपसी हुक़ूक़ के इस बयान को रसूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक हदीस पर ख़त्म करते हैं जो हर मुसलमान को थर्रा देने वाली है । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक दिन सहाबा से पूछा ।

''बताओ मुफ़्लिस और निर्धन कौन है''? सहाबा ने कहा हुज़ूर मुफ़्लिस वह है जिसके पास दिरहम और दीनार[3] न हों । आपने फ़रमाया ''नहीं, हममें मुफ़्लिस वह है जो क़यामत के दिन नमाज़, रोज़े और ज़कात का ज़ख़ीरा (भण्डार) लेकर आयेगा लेकिन दुनिया में उसने किसी को गाली दी होगी, किसी पर झूठा इल्ज़ाम लगाया होगा, किसी को मारा पीटा होगा, किसी का माल बिना हक़ (अनाधिकार) के खाया होगा । जब वह हिसाब के स्थान पर खड़ा किया जायेगा तो उसके मुद्दई लोग आयेंगे और जितना जिसका हक़ निकलेगा उसकी नेकियों में से उनको दिलवाया जायगा । यहां तक कि उसकी सब नेकियां ख़त्म हो जायेंगी तो फिर उनके (मुद्दईयों) के गुनाह उस पर लाद दिये जायेंगे और उसको जहन्नुम में डलवा दिया जायगा'' ।

---

१. पीठ पीछे ऐसी बात कहना कि मुंह पर कही जाये तो बुरा माने ।
२. हराम वह कार्य है जिसका करना बहुत बड़ा पाप है ।
३. दिरहम और दीनार सिक्के हैं ।

भाईयो ! इस हदीस पर विचार करो और सोचो कि दूसरों का हक़ मारना उनको बुरा भला कहना और उनकी ग़ीबतें करना अपने आपको किस बरबादी में डालना है ।

ख़ुदा के बन्दो ! अगर किसी का कोई हक़ तुमने मारा हो तो दुनिया ही में उसका हिसाब कर लो, या उसका बदला दे दो या माफ़ करालो, और आगे के लिये लापरवाही न करने का अहद (प्रण) कर लो, नहीं तो आख़िरत में इसका अन्जाम बहुत बुरा होने वाला है । हम सबको अल्लाह अपनी हिफ़ाज़त में रखे ।

नवां सबक़

अच्छे अख़लाक़ और उमदा सिफ़ात

अच्छे अख़लाक़ और सिफ़ात (चरित्र और गुण) की तालीम भी इस्लाम की बुनियादी तालीमात में से है और लोगों के अख़लाक़ का सुधार और उनकी रूहानी इस्लाह उन ख़ास कामों में से है जिनको पूरा करने के लिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नबी बनाकर भेजे गये थे । हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही का इरशाद है कि:-

"मैं अल्लाह की तरफ़ से इस लिये भेजा गया हूं कि अच्छे अख़लाक़ की तालीम दूं और उन्हें बहुत ऊंचे से ऊंचे दर्जे तक पहुंचाऊं" ।

अच्छे अखलाक़ की फ़ज़ीलत और उसकी अहमियत:-

इस्लाम में अच्छे अख़लाक़ की जो अहमियत (महत्व) और उसकी जो फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) है उसका कुछ अन्दाज़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निम्न लिखित हदीसों से किया जा सकता है । हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि:-

"तुममें सबसे अच्छे वो लोग हैं जिनके अख़लाक़ बहुत अच्छे हैं" ।

एक और हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:-

"क़यामत के दिन मेरी नज़र में सबसे ज़्यादा प्यारा वह शख़्स होगा जिसके अख़लाक़ सबसे अच्छे होंगे" ।

एक दूसरी हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:-

"क़यामत के दिन आमाल (कर्मों) के तराज़ू में सबसे ज़्यादा वज़न अच्छे अख़लाक़ का होगा" ।

एक और रिवायत में है कि हुज़ूर (स०) से पूछा गया कि वह कौन सा गुण है जो आदमी को जन्नत में ले जाता है ? आपने फ़रमाया कि:-

"अल्लाह का डर और अच्छा अख़लाक़"

एक और रिवायत में आया है कि रसूल (स०) ने फ़रमाया:-

"अच्छे अख़लाक़ वाले मोमिन को दिनों के रोज़ों और रातों में खड़े होने (यानी नफ़िल नमाज़ों) का सवाब मिलता है" ।

मतलब यह कि जिस अल्लाह के बन्दे को ईमान नसीब हो और वह अल्लाह के मुक़र्रर किये हुए फ़र्ज़ अदा करता हो और ज़्यादा नफ़िल रोज़े न रखता हो और न रात को बहुत ज़्यादा नफ़िल नमाज़ें पढ़ता हो लेकिन उसके अख़लाक़ अच्छे हों तो अल्लाह तआला उसको अच्छे अख़लाक़ की वजह से उन लोगों के बराबर सवाब देगा जो दिन को रोज़े रखने वाले और रात को नफ़िल नमाज़ें पढ़ने वाले हों ।

बुरे अख़लाक़ की नहूसत:-

जिस तरह हुज़ूर (स०) ने अच्छे अख़लाक़ की तारीफ़ की है और उनकी फ़ज़ीलतें बयान की हैं उसी तरह बुरे अख़लाक़ की नहूसत से भी आपने हमको ख़बरदार किया है । एक हदीस में है हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया :-

"बुरे अख़लाक़ वाला आदमी जन्नत में न जा सकेगा" ।

एक और रिवायत में है कि हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया:-

"कोई गुनाह अल्लाह की नज़र में बुरे अख़लाक़ से ज़्यादा बुरा नहीं"

कुछ महत्वपूर्ण और ज़रूरी अख़लाक़:-

यों तो क़ुरआन और हदीस में सारे अच्छे अखलाक़ की तालीम दी गई है और सारे बुरे अख़लाक़ और बुरी आदतों से बचने पर ज़ोर दिया गया है लेकिन यहां हम अख़लाक़ के बारे में इस्लाम की ज़रूरी और बुनियादी दर्जे की थोड़ी सी हिदायतों (निर्देशों) का ज़िक्र करते हैं जिनके बिना कोई शख़्स सच्चा मोमिन और मुसलमान नहीं हो सकता ।

सच बोलना :-

इस्लाम में सच्चाई को इतनी अहमियत दी गई है कि हर मुसलमान को हमेशा सच बोलने के अलावा इसका भी हुक्म दिया गया है कि वह हमेशा सच्चों के साथ और उनकी संगत में रहे । क़ुरआन मजीद में है कि :-

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَكُونُوا۟ مَعَ ٱلصَّٰدِقِينَ ۝

या अय्यहल्लज़ी न आ मनुत्तक़ुल्ला ह वकूनू मअस्सादिक़ीन ।
"ऐ ईमान वालो ! ख़ुदा से डरो और सिर्फ़ सच्चों के साथ रहो" ।

हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मौक़े पर सहाबा से फ़रमाया:-

"जो यह चाहे कि अल्लाह व रसूल से उसको प्यार हो जाये या अल्लाह और रसूल उससे प्यार करें, तो उसके लिये ज़रूरी है कि जब बात करे तो सच बोले" ।

एक और हदीस में है आपने फ़रमाया:-

"सच्चाई अपनाओ चाहे तुमको इसमें अपनी बर्बादी और मौत दिखाई दे क्योंकि असल में निजात (मुक्ति) और ज़िन्दगी सच्चाई ही में है। और झूट से बचो चाहे इसमें देखने में कामयाबी तथा निजात मालूम हो क्यों कि झूठ का अन्जाम (अन्त) बरबादी और नाकामी है।

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ने पूछा:-

"जन्नत में जाने वालों की क्या निशानी है?" आप (स०) ने फ़रमाया "सच बोलना" ।

इसी की अपेक्षा एक दूसरी हदीस में है कि आप (स०) ने फ़रमाया:-

"झूठ बोलना मुनाफ़िक[1] की ख़ास निशानियों में से है" ।

एक और हदीस में है कि किसी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा:-

"क्या मोमिन डरपोक हो सकता है" ? आपने फ़रमाया "हां हो सकता है" फिर पूछा गया क्या मोमिन कंजूस हो सकता है ? आपने फ़रमाया "हां हो सकता है" फिर पूछा गया क्या मोमिन झूठा हो सकता है ? आपने फ़रमाया "नहीं" (यानी झूठ की आदत ईमान के साथ इकट्ठा नहीं हो सकती) ।

अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ दे कि सदा के लिये हम सच्चाई को अपनालें। जो निजात दिलाने वाली है, जन्नत में पहुंचाने वाली, और अल्लाह व रसूल का प्यारा और प्रेमी बनाने वाली है, और हम झूठ से पूरी तरह से बचें क्यों कि झूठ का अन्जाम तबाही, बर्बादी और ख़ुदा व रसूल की लानत है और उनकी नाख़ुशी (अप्रसन्नता) है और जो मुनाफ़िक़ों की निशानी है।

(१. वह शख़्स जो दिखावे में तो मुसलमान हो लेकिन दिल से इस्लाम का दुश्मन हो ।)

वादा और अहद पूरा करना:-

यह भी असल में सच्चाई की एक ख़ास क़िस्म है कि जिस किसी से जो वादा किया जाये उसको पूरा किया जाये। क़ुरआन शरीफ़ और हदीस में खास तौर पर इसके लिये हुक्म है और इस पर ज़ोर दिया गया है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

وَأَوْفُوا۟ بِٱلْعَهْدِ ۖ إِنَّ ٱلْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔولًا

व औफ़ू बिल अहदि इन्नल अह द का न मस ऊला (बनी इसराइल रूकू-४)

और अपना हर वचन पूरा करो। निःसंदेह तुमसे क़यामत में हर वचन के बारे में पूछा जायेगा।

क़ुरआन शरीफ़ ही में एक दूसरे स्थान पर नेकियों व नेकों के बारे में कहा गया है:-

وَٱلْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَٰهَدُوا۟

वल मूफ़ू न बिअहदिहिम इज़ा आ हदू (बक़रह रूकू २२)

और अल्लाह तआला की नज़र में नेक वह लोग भी हैं जो अपने अहद को पूरा करें जबकि वह अहद करें

हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने ख़ुतबों में अकसर फ़रमाया करते थे:-

"जो अपने अहद का पक्का नहीं उसका दीन (धर्म) में कोई हिस्सा नहीं" ।

एक और हदीस में है हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया :-

"वचन को पूरा न करना मुनाफ़िक़ों की ख़ास निशानियों में से है" ।

यानी हुज़ूर सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम के इरशाद के मुताबिक़ अहद तोड़ना और वादा पूरा न करना ईमान के साथ इकट्ठा नहीं हो सकते। अल्लाह तआला इन बुरी आदतों से हम सबको बचाये ।

अमानतदारी:-

अमानतदारी भी असल में सच्चाई और सत्यनिष्ठा ही की एक ख़ास क़िस्म है। इसपर भी ख़ास तौर से ज़ोर दिया गया है। क़ुरआन शरीफ़ में है:-

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَن تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا

इन्नल्ला ह यामुरुकुम अन तुअद्दुल अमानाति इला अहलिहा
(सूर ए निसा रुकू ८)

अल्लाह तुमको हुक्म देता है कि अमानतें (धरोहर) उनके मालिकों को ठीक-ठीक अदा करो।

और क़ुरआन शरीफ़ में दो स्थानों पर सच्चे ईमान वालों की सिफ़ात (गुणों) के बयान में कहा गया है।

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ۝

वल्लज़ी न हुम लिअमानातिहिम व अहदिहिम राऊन (सूरए मूमिनून व सूरए मआरिज)

और वह लोग जो अमानतों की और अपने वचन की हिफ़ाज़त करते हैं (यानी अमानतें अदा करते हैं और अहद पूरा करते हैं)

रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अकसर अपने ख़ुतबों में फ़रमाया करते थे।

''लोगो जिसमें अमानत (सुरक्षित रखने) की सिफ़त नहीं उसमें मानो ईमान ही नहीं''।

एक हदीस में है हुज़ूर (स०) ने इरशाद फ़रमाया :-

''किसी के अच्छे और नेक होने का अन्दाज़ा करने के लिये सिर्फ़ उसकी नमाज़ और उसके रोज़े ही को ने देखो (यानी किसी के नमाज़ व रोज़े ही को देखकर उसको नेक और दीनदार न समझ लो) बल्कि यह देखो कि वह जब बात करे तो सच बोले, और जब कोई अमानत उसको सौंपी जाये तो वह उसको ठीक-ठीक वापस करे और कष्ट और दुख के समय में भी वह परहेज़गारी (संयम) पर जमा रहे''।

भाईयो ! अगर हम अल्लाह के नज़दीक सच्चे मोमिन और उसकी रहमतों

के मुस्तहिक़ (अधिकारी) होना चाहते हैं, तो ज़रूरी है कि हर मामले और हर हालत में ईमानदारी से काम लें और वादा और अहद की पाबन्दी को अपनी ज़िन्दगी का नियम बना लें। याद रखो कि हममें से जिस किसी में यह ख़ूबियां नहीं वह अल्लाह व रसूल की नज़र में सच्चा मोमिन और पूरा मुसलमान नहीं है।

इन्साफ़:-

इस्लाम ने हर मामले में और हर हालत में अद्ल व इन्साफ़ (निष्पक्षता और न्याय) पर बहुत ज़ोर दिया है। क़ुरआन शरीफ़ में है:-

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ

इन्नला ह यामुरु बिल अदलि वल एहसान (सूरए अन्नहल रूकू-१३)

अल्लाह तआला इन्साफ़ करने का और एहसान करने का हुक्म देता है।

इस्लाम में अद्ल व इन्साफ़ पर जो ज़ोर दिया गया है वह सिर्फ़ अपनों ही के लिये नहीं है बल्कि अन्य लोगों के लिये भी हैं, यहां तक कि अपनी जान, माल और दीन धर्म के दुशमनों के लिये भी अद्ल व इन्साफ़ पर ज़ोर दिया गया है। क़ुरआन शरीफ़ का खुला हुआ आदेश है:-

وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَآنُ قَوْمٍ عَلَىٰ أَلَّا تَعْدِلُوا ۚ اعْدِلُوا هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ

वला यज रिमन नकुम श न आनु क़ौमिन अला अल्ला तादिलू एदिलू हु व अक़ रबु लित्तक़्वा (सू रए माइदा रूकू -२)

और किसी क़ौम की दुश्मनी तुमको इस गुनाह पर तैयार न कर दे कि तुम उसके साथ न्याय ना करो। तुम हर हाल में सब के साथ इन्साफ़ करो। परहेज़गारी की शान के लिये यही ज़्यादा मुनासिब है।

इस आयत से साफ़ (स्पष्ट) है कि किसी शख़्स से अथवा किसी क़ौम से अगर हमारी लड़ाई और दुशमनी हो तो भी हम उसके साथ कोई अन्याय नहीं कर सकते और अगर करेंगे तो अल्लाह की नज़र में हम बहुत बड़े मुजरिम और पापी होंगे।

एक हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:-

"क़यामत के दिन अल्लाह से सबसे ज़्यादा क़रीब और अल्लाह को सबसे ज़्यादा प्यारा इमाम-ए-आदिल होगा (यानी अल्लाह के आदेशानुसार न्याय पूर्वक राज्य करने वाला) और अल्लाह से सबसे ज़्यादा दूर और सबसे बड़े अज़ाब में फंसा हुआ क़यामत के दिन इमाम-ए-जायर (ज़ुल्म और बेइन्साफ़ी करने वाला राज्याधिकारी) होगा" ।

एक दूसरी हदीस में है कि रसूल (स०) ने एक दिन सहाबा (रज़ि०) से फ़रमाया:-

"क्या तुम जानते हो कि क़यामत के दिन अल्लाह की रहमत की छाया में कौन लोग सबसे पहले आयेंगे ? निवेदन किया गया कि अल्लाह और उनके रसूल ही को ज़्यादा मालूम है (इसलिये हुज़ूर (स०) ही हमको बतायें कि कौन ख़ुशनसीब बन्दे क़यामत के दिन सबसे पहले रहमत के साये में लिये जायेंगे) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, यह वह बन्दे होंगे जिनका हाल (दुनिया में) यह रहा होगा कि जब उनको उनका हक़ दिया जाये तो वह क़ुबूल कर लें और जब कोई उनसे अपना हक़ मांगे तो वह (बिना टाल मटोल के) उसका हक़ उसको अदा कर दें, और दूसरे लोगों के लिये उसी तरह फ़ैसला करें जिस तरह ख़ुद अपने लिये करें (यानी अपने और पराये के मामले में कोई फ़र्क़ न करें" ।

खेद है कि हम मुसलमानों ने इस्लाम की इन साफ़ सुथरी तालीमात को बिल्कुल भुला दिया है । अगर आज मुसलमानों में यह अच्छाईयां पैदा हो जायें कि वह बात के सच्चे, वादे के पक्के, अमानतदार और हर एक के साथ इन्साफ़ करने वाले हों तो दुनियां की इज़्ज़तें भी उनके पांव चूमें और जन्नत में भी उनको बहुत ऊंचे दर्जे मिलें ।

दया करना और अपराधी को क्षमा करना:-

किसी को मुसीबत की हालत में और दुख दर्द में गिरफ़्तार देखकर उस पर दया करना और उसके साथ हमदर्दी करना और ग़लती करने वाले की ग़लती माफ़ करना भी उन अच्छे अख़लाक़ में से है जिनका इस्लाम में बड़ा महत्व है और जिनकी बड़ी फ़ज़ीलत बयान की गई है । एक हदीस में है कि रसूल (स०) ने फ़रमाया:-

"तुम अल्लाह के बन्दों पर दया करो, तो तुम पर दया की जायेगी । तुम लोगों के क़ुसूर (अपराध) माफ़ करो, तुम्हारे भी क़ुसूर माफ़ किये जायेंगे" ।

एक और हदीस में है हुज़ूर(स०) ने फ़रमाया:-

"जो रहम नहीं करता, उसपर रहम नहीं किया जायगा" ।

एक दूसरी रिवायत में है रसूलुल्लाहु (स०) ने फ़रमाया :-

"जो कोई किसी का क़ुसूर माफ़ नहीं करता तो अल्लाह तआला भी उसका क़ुसूर माफ़ नहीं करेगा" ।

एक और हदीस में है कि आप (स०) ने फ़रमाया:-

"रहम खाने वालों पर रहमान रहमत करता है । तुम धरती पर बसने वालों के साथ रहम का बर्ताव करो । आकाश वाला तुम पर रहम करेगा" ।

इस हदीस से स्पष्ट है कि इस्लाम, दोस्त और दुश्मन सबके साथ बल्कि ज़मीन पर बसने वाली सब मख़लूक़ (जीव-जन्तुओं) के साथ रहमदिली की तालीम देता है । एक हदीस में है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:-

"किसी शख़्स ने एक प्यासे कुत्ते को जो अधिक प्यास के कारण कीचड़ चाट रहा था उसपर दया करके पानी पिला दिया था तो अल्लाह तआला ने उसके इस नेक काम के बदले में उसको जन्नत अता (प्रदान) कर दी थी" ।

बड़े दुख की बात है कि अल्लाह की मख़लूक़ पर रहम खाने और सबके साथ हमदर्दी का बर्ताव करने की सिफ़त हमसे निकल गई है और इसी लिये हम ख़ुदा की रहमतों के क़ाबिल नहीं रहे ।

नरमी करना:-

लेन-देन और हर तरह के बर्ताव में नरमी और आसानी करना भी इस्लाम की ख़ास तालीमात में से है । एक हदीस में है रसूल (स०) ने फ़रमाया:-

"नर्मी और आसानी करने वालों पर दोज़ख़ की आग हराम है"

एक और हदीस में है कि :-

"अल्लाह तआला नरमी करने वाला है और नरमी को पसन्द करता है, और नरमी पर इतना देता है जितना सख़्ती पर नहीं देता" ।

बरदाश्त करना और ग़ुस्सा पी जाना:-

अच्छी न लगने वाली बातों को बरदाश्त (सहन) करना और ऐसे मौक़े पर ग़ुस्सा पी जाना भी उन अख़लाक़ में से है जिनको इस्लाम सभी इन्सानों में पैदा करना चाहता है और अल्लाह के नज़दीक उन ईमान वालों का बड़ा दर्जा है जो अपने में यह सिफ़त पैदा कर लें।

क़ुरआन शरीफ़ में जहां उन लोगों की चर्चा है जिनके लिये जन्नत सजाई गई है वहां ऐसे लोगों का ख़ास तौर से ज़िक्र किया गया है।

وَالْكَاظِمِينَ الْغَيْظَ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ

वल काज़िमी नल ग़ै ज़ वल आफ़ी न अनिन्नास (आले इमरान रूकू-१४)

जो ग़ुस्सा पी जाने वाले हैं और लोगों के कुसूर माफ़ करने वाले हैं।

ऐसे लोगों के लिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह ख़ुशख़बरी दी है कि:-

''जो शख़्स अपने ग़ुस्से को रोकेगा अल्लाह तआला उससे अपना अज़ाब रोक लेगा''।

बड़े ख़ुश नसीब हैं वह लोग जो ग़ुस्सा आने के वक़्त इन आयतों और हदीसों को याद करके अपने ग़ुस्से को रोक लें और उसके बदले में अल्लाह तआला उनसे अपने अज़ाब को रोक ले।

अच्छी बोली तथा मीठी ज़बान:-

इस्लाम की अख़लाक़ी तालीमात में से एक ख़ास तालीम यह भी है कि बातचीत अच्छे स्वभाव से और मीठी ज़बान में की जाये और कड़वी बोली से बचा जाये।

क़ुरआन मजीद में इरशाद है:-

وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا

व क़ूलू लिन्नसि हुस्ना
और लोगों से अच्छी बात कहो

इस्लाम ने अच्छी बात बोलने को नेकी ठहराया है और कड़वी बात को गुनाह बताया है। हदीस शरीफ़ में है कि हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया-

''नर्मी और अच्छे स्वभाव से बात चीत करना नेकी है और एक तरह का सदक़ा (दान) है''

एक हदीस में है आप (स०) ने फ़रमाया :-

''बदज़बानी ज़ुल्म है और ज़ुल्म का ठिकाना दोज़ख़ है''।

एक दूसरी हदीस में है।

''बदज़बानी निफ़ाक़ (मन का रोग) है (यानी मुनाफ़िक़ों की आदत है)

अल्लाह तआला बदज़बानी और कड़वी बातें ज़बान से निकलने की इस गन्दी, ज़ालिमों और मुनाफ़िक़ों वाली आदत से हमारी हिफ़ाज़त करे और मीठी बोली बोलना और नर्मी से बात करने की आदत हमको नसीब करे जो ईमान की शान है और अल्लाह के नेक बन्दों का तरीक़ा है।

आजिज़ी व इन्किसारी (नम्रता, विनय):-

इस्लाम जिन आदतों को अपने मानने वालों में आम करना चाहता है उसमें से यह भी है कि ख़ुदा के दूसरे बन्दों के मुक़ाबले में आदमी अपने आपको नीचा रखे और अपने आप को छोटा और कमतर बन्दा समझे यानी घमण्ड और तकब्बुर (अहंकार) से अपने दिल को पाक रखे।

अल्लाह के यहां इज़्ज़त एवं उत्तमता उन्हीं ख़ुशनसीबों के लिये है जो दुनिया में नीचे होकर नम्रता व विनय के साथ रहें।

क़ुरआन शरीफ़ में इरशाद है :-

وَعِبَادُ الرَّحْمَٰنِ الَّذِينَ يَمْشُونَ عَلَى الْأَرْضِ هَوْنًا

व इबादुर्रहमानिल्लज़ी न यमशू न अलल अर्ज़ि हौना (सूरए अलफ़ुर्क़ान रूकू-६)

रहमान के ख़ास बन्दे तो वही हैं जो ज़मीन पर आजिज़ी के साथ (विनय पूर्वक) चलते हैं।

दूसरी जगह फ़रमाया गया :-

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِى الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا

तिल कददारूल आख़ि रतु नज अलुहा लिल्लज़ी न ला युरीदू न उलुव्वन फ़िल अर्ज़ि वला फ़सादा (सूरए अल क़िसस रूकू - ८)

आख़िरत के इस घर (जन्नत) का वारिस हम उन्हीं को करेंगे जो नहीं चाहते दुनिया में बड़ाई हासिल करना और फ़साद करना ।

एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया:-

"जिसने विनय इख़तियार किया अल्लाह तआला उसके दर्जे इतने ऊंचे करेगा कि उसको आला इल्लियीन (जन्नत के उच्चतर स्थान) में पहुंचायगा" ।

और इसके विपरीत घमण्ड और अपने को बड़ा समझना अल्लाह तआला को इतना नापसन्द है कि एक हदीस में आया है कि हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया:-

"जिस शख़्स के दिल में राई के दाने के बराबर भी तकब्बुर (अहंकार) होगा तो अल्लाह तआला उसको औंधे मुंह दोज़ख़ में डलवायेगा" ।

एक और हदीस में है कि :-

जिस शख़्स के दिल में राई के दाने के बराबर भी तकब्बुर और ग़ुरूर होगा वह जन्नत में न जा सकेगा ।

एक और हदीस में है, आप (स०) ने फ़रमाया:-

"तकब्बुर से बचो तकब्बुर ही वह गुनाह है जिसने सबसे पहले शैतान को बरबाद किया" ।

अल्लाह तआला हम सबको इस शैतानी आदत से बचाये और हमको अपने को नीचा समझने की आदत नसीब करे जो कि उसको पसन्द है और जो कि बन्दगी की शान है । लेकिन यहां हमको यह याद रखना चाहिये कि हमारी यह दीनता और आजिज़ी अपने नफ़स (निज) के और अपनी ज़ात के मामले में होना चाहिये लेकिन हक़ के मामले में और दीन (धर्म) के बारे में हमको ताक़त, सख़्ती और पक्केपन का सुबूत देना चाहिये । ऐसे अवसर के लिये अल्लाह का और अल्लाह के रसूल का हुक्म यही है । सारांश यह है कि मोमिन की शान यही है कि वह अपने आपको तुच्छ और नीचा समझे और हक़ पर मज़बूती से जमा रहे और किसी के डर और भय से उसमें कमज़ोरी न दिखाये ।

सब्र और बहादुरी:-

इस दुनिया में आदमियों पर कष्ट और मुसीबतों के वक़्त भी आते हैं । कभी बीमारी आती है तो कभी ग़रीबी और मोहताजी की हालत हो जाती है । कभी ज़ालिम दुश्मन सताते हैं । कभी दूसरे हालात साथ नहीं देते । इसलिये ऐसे मौक़ों के लिये इस्लाम ने यह बताया है कि अल्लाह के बन्दे सब्र और हिम्मत से काम लें और हज़ारों तकलीफ़ों और मुसीबतों के होने पर भी मज़बूती और बहादुरी के साथ अपने उसूल पर जमे रहें । ऐसे लोगों के लिये क़ुरआन शरीफ़ की यह ख़ुशख़बरी है कि वह अल्लाह के प्यारे हैं ।

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ

वल्लाहु यहिब्बुस्साबिरीन

और अल्लाह सब्र वालों से मुहब्बत रखता है ।

एक आयत में है:-

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ

इन्नल्ला ह मअस्साबिरीन

अल्लाह यक़ीनन सब्र वालों के साथ है ।

एक आयत में उन ईमान वालों की बड़ी तारीफ़ की गई है जो तकलीफ़ और मुसीबत की हालत में और हक़ के लिये लड़ाई में मज़बूती से जमें रहें और क़ुरबानी से न भागें ।

وَالصّٰبِرِيْنَ فِى الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ

वस्साबिरी न फ़िल बासाइ वज़्ज़री इ वहीनल बास उलाइ कल्लज़ी न स द क़ू व उलाइ क हुमुल मुत्तक़ून ।

और जो लोग सख़्ती और तकलीफ़ और लड़ाई के वक़्त मज़बूती से जमे रहने वाले हैं, वही हैं जो सच्चे हैं और मुत्तक़ी (ख़ुदा से डरने वाले)हैं ।

एक हदीस में है कि हुज़ूर(स०) ने फ़रमाया:-

"सब्र की तौफ़ीक़ से बेहतर कोई नेमत नहीं है"

एक दूसरी हदीस में है कि:-

"सब्र आधा ईमान है"[1]

और इसके विपरीत बेसब्री और बुज़दिली इस्लाम की नज़र में बहुत बुरे ऐब हैं जिससे हुज़ूर (स०) अपनी दुआवों में बार बार पनाह मांगते थे । अल्लाह तआला हम सबको भी सब्र और हिम्मत अता करे और बेसब्री व बे- हिम्मती से अपनी पनाह में रखे ।

इख़लास और सही नियत:-

इख़लास तमाम इसलामी अख़लाक़ की बल्कि पूरे इस्लाम की रूह और जान है । इख़लास का मतलब यह है कि हम जो काम भी करें वह सिर्फ़ अल्लाह के लिये और उसको राज़ी करने की नीयत से करें और इसके अलावा हमारी और कोई ग़रज़ न हो ।

इस्लाम की जड़ तौहीद है और तौहीद की पूर्ति इख़लास से ही होती है । यानी कामिल (सम्पूर्ण) तौहीद यही है कि हमारा काम सिर्फ़ अल्लाह के लिये हो और सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा व ख़ुशी और उसके सवाब पर ही हमारी नज़र हो ।

एक हदीस में है कि:-

"जिसने अल्लाह के लिये मुहब्बत की और अल्लाह के लिये दुश्मनी की और अल्लाह के लिये दिया और अल्लाह के लिये मना किया उसने अपना ईमान पूरा कर लिया" ।

मतलब यह है कि जिसने अपने ताल्लुक़ात और हर मामले को अपने मन की चाहत और किसी दूसरे मक़सद के बजाये अल्लाह की रज़ामन्दी के ताबे (अधीन) कर दिया वही अल्लाह के नज़दीक पूरा मोमिन है ।

एक दूसरी हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:-

"अल्लाह तुम्हारी शक्ल व सूरत और तुम्हारे जिस्मों को नहीं देखता बल्कि तुम्हारे दिलों को देखता है" ।

यानी अल्लाह तआला की तरफ़ से बदले और सवाब का मामला ख़ुलूस और दिलों की नीयत के अनुसार होगा ।

(१. जमउल फ़वाइद में इसको हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद से नक़ल किया गया है ।)

एक हदीस में है कि हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया:-

"लोगो ! अपने कामों में इख़लास पैदा करो । अल्लाह तआला वही अमल क़ुबूल करता है जो इख़लास से हो" ।

आख़िर में एक हदीस और लिखी जाती है जिसको सुनकर हम सबको कांप जाना चाहिये । हदीस की कुछ रिवायतों में है कि हज़रत अबू हुरैरह (अल्लाह उनसे राज़ी हो) जब इस हदीस को सुनाते थे तो कभी कभी बेहोश होकर गिर पड़ते थे वह हदीस यह है कि हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया:-

"क़यामत में सबसे पहले क़ुरआन शरीफ़ के कुछ आलिम (विद्वान) और कुछ शहीद और कुछ मालदार पेश किये जायेंगे और उन लोगों से पूछा जायगा कि तुमने अपनी ज़िन्दगी में हमारे लिये क्या किया । क़ुरआन का आलिम कहेगा कि मैं ज़िन्दगी भर तेरी किताब को पढ़ता रहा । उसको ख़ुद सीखा और दूसरों को सिखाया और यह सब तेरे वास्ते किया । कहा जायगा कि तू झूठा है, तूने तो यह सब कुछ अपने नाम के लिये किया था जो दुनिया में तुझको मिल चुका । और फिर मालदार से पूछा जायगा कि हमने तुझको माल दिया था तूने उससे हमारे लिये क्या किया । वह कहेगा कि नेकी के कामों में और भलाई के सब तरीक़ों में तेरी रज़ा (प्रसन्नता) के लिये ख़र्च किया । कहा जायगा तू झूठा है तूने दुनिया में यह सख़ावत (उदारता) इस लिये की थी कि तेरी सख़ावत और फ़य्याज़ी की चर्चा हो और लोग तारीफ़ करें, सो दुनिया में यह सब कुछ तुझे मिल चुका । फिर इसी तरह शहीद से भी पूछा जायगा । वह कहेगा तेरी दी हुई सबसे प्यारी चीज़ जान थी मैंने उसको भी तेरे लिये क़ुर्बान कर दिया । कहा जायगा कि तू झूठा है । तूने तो जंग में इसलिये हिस्सा लिया था कि तेरी बहादुरी की तारीफ़ हो और तेरा नाम हो । सो वह नाम और शोहरत तुझे दुनिया में मिल चुकी । फिर इन तीनों के लिये हुक्म होगा कि इनको औंधे मुंह घसीट के दोज़ख़ में डाल दिया जाये तो यह सब दोज़ख़ में डाल दिये जायेंगे" ।

भाईयो ! हमें चाहिये कि अपने आमाल (कर्मों) को इस हदीस की रोशनी में देखें और अपने दिल में और अपनी नियतों में ख़ुलूस पैदा करने की कोशिश करें ।

ऐ अल्लाह हम सबको इख़लास नसीब फ़रमा और हमारे इरादों और नियतों को अपने फ़ज़्ल व करम (दया) से सुधार दे, और हमको अपने इख़लास वाले बन्दों में से कर दे । आमीन

दसवां सबक़

हर चीज़ से ज़्यादा
अल्लाह व रसूल और दीन की मुहब्बत

भाईयो ! इस्लाम जिस तरह हमको अल्लाह व रसूल पर ईमान लाने और नमाज़, रोज़ा, हज और ज़कात की तालीम देता है और ईमानदारी व परहेज़गारी और अच्छे अख़लाक़ व बरताव को अपनाने की हिदायत देता है और इसपर ज़ोर देता है, उसी तरह उसकी एक ख़ास तालीम व हिदायत यह भी है कि हम दुनिया की हर चीज़ से ज़्यादा यहां तक कि अपने मां बाप और बीवी बच्चों और जान व माल और इज़्ज़त व आबरू से भी ज़्यादा ख़ुदा और उसके रसूल से और उसके दीन से मुहब्बत करें ।

यानी अगर कभी कोई ऐसा सख़्त और नाज़ुक वक़्त आये कि दीन पर जमे रहने और अल्लाह व रसूल के हुक्मों पर चलने की वजह से हमको जान व माल और मान मर्यादा का डर हो तो उस वक़्त भी हम अल्लाह व रसूल को और दीन को न छोड़ें और जान- माल या मान मर्यादा पर जो कुछ गुज़रे उसे गुज़र जाने दें ।

क़ुरआन शरीफ़ और हदीस में जगह जगह पर आया है कि जो लोग अपने को मुसलमान बतायें लेकिन उनको अल्लाह व रसूल के साथ और उसके दीन के साथ ऐसी मुहब्बत और ऐसा लगाव न हो तो वह असली मुसलमान नहीं हैं बल्कि अल्लाह की तरफ़ से कड़ी सज़ा और अज़ाब के लायक़ हैं । सूरए तौबह में है :-

قُلْ إِنْ كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝

क़ुल इन का न आबाउकुम व अबनाउकुम व इख़वानुकुम

वअज़वाजुकुम व अशी रतुकुम व अम्वालु निक़ तरफ़ तुमूहा व तिजा रतुन तख़शौ न कसा दहा व मसाकिनु तरज़ौ नहा अहब ब इलैकुम मिनल्लाहि व रसूलिही व जिहादिन फ़ी सबीलिही फ़तरब्बसू हत्ता यातियल्लाहु बिअमरिहि । वल्लाहु ला यह दिल क़ौमल फ़ासिक़ीन । (सूरए तौबह रूकू -३)

(ऐ रसूल) तुम इन लोगों को बतला दो कि अगर तुम्हारे मां बाप, तुम्हारी औलाद, तुम्हारे भाई, तुम्हारी बीबियां और तुम्हारा कुनबा क़बीला और तुम्हारा माल दौलत, जिसे तुमने कमाया है और तुम्हारा कारोबार जिसके उतार चढ़ाव से तुम डरते हो और तुम्हारे रहने के मकान जिनको तुम पसन्द करते हो (तो अगर ये चीज़ें) तुमको ज़्यादा प्यारी हैं अल्लाह से और उसके रसूल से और उसके दीन के लिये कोशिश करने से, तो अल्लाह के फ़ैसले का इन्तेज़ार करो (और याद रखो कि) अल्लाह सीधी राह नहीं दिखाता है नाफ़रमानों को'' ।

इस आयत से मालुम हुआ कि जो लोग अल्लाह व रसूल के और दीन के मुकाबले में अपने मां बाप बीबी बच्चों और माल दौलत से ज़्यादा प्रेम रखते हों और जिनको अल्लाह व रसूल की ख़ुशी और दीन की सेवा **और** तरक़्क़ी से ज़्यादा इन चीजों की चिन्ता हो वह अल्लाह के नाफ़रमान हैं और उसके ग़ुस्से के मुस्तहिक़ (पात्र) हैं । एक मशहूर हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :-

''ईमान की मिठास और दीन का स्वाद उसी शख़्स को नसीब होगा जिसमें तीन बातें इकट्ठी हों- एक यह कि अल्लाह व **रसूल** की मुहब्बत उसको हर चीज़ से ज़्यादा हो । दूसरे यह कि जिससे भी मुहब्बत करे सिर्फ़ अल्लाह के लिये करे (यानी वास्तविक और सच्चा प्रेम केवल अल्लाह ही से हो) तीसरे यह कि ईमान के बाद कुफ़्र की ओर लौटना और दीन को छोड़ना उसके लिये ऐसा नागवार और उसपर ऐसा भारी हो जैसा आग में डाला जाना'' ।

इससे मालूम हुआ कि अल्लाह व रसूल की नज़र में असली और सच्चे मुसलमान वही हैं जिनमें अल्लाह व रसूल की और इस्लाम की मुहब्बत दुनिया के सब लोगों और सब चीज़ों से ज़्यादा हो, यहां तक कि अगर वह किसी आदमी से भी मुहब्बत करें तो अल्लाह ही के लिये करें और दीन से उनको ऐसा लगाव हो कि उसको छोड़कर कुफ़्र का तरीक़ा अपनाना उनके लिये इतना कठिन व कष्टदायक हो जैसा कि आग के अलाव में डाला जाना ।

एक और हदीस में है कि हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया :-

"तुममें से कोई शख़्स उस वक़्त तक पूरा मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि उसको मेरे साथ मुहब्बत अपने मां बाप से और अपनी औलाद से और दुनिया के सब लोगों से ज़्यादा न हो" ।

भाईयो ! ईमान असल में इसी का नाम है कि आदमी बिल्कुल अल्लाह व रसूल का हो जाये और अपने सारे ताल्लुक़ात और ख़्वाहिशात (इच्छाओं) को अल्लाह व रसूल के ताल्लुक़ पर और दीन के रास्ते में क़ुरबान कर सके, जिस तरह सहाब-ए-किराम ने कर दिखाया और आज भी अल्लाह के सच्चे व नेक बन्दों का यही हाल है । हालांकि इनकी संख्या बहुत कम है, अल्लाह तआला हम सबको उन्हीं के साथ और उन्हीं में से कर दे ।

ग्यारहवां सबक़

दीन की ख़िदमत व दावत

भाईयो ! जिस तरह हमारे लिये यह ज़रूरी है कि अल्लाह और रसूल पर ईमान लायें और उनके बतलाये हुये नेकी और परहेज़गारी के उस सीधे और रौशन रास्ते पर चलें जिसका नाम "इस्लाम" है, इसी तरह हमारे लिये यह भी ज़रूरी है कि अल्लाह के जो बन्दे उस रास्ते से अन्जान हैं या अपनी तबियत की बुराई की वजह से उस पर नहीं चल रहे हैं, उनको भी उसका जानकार बनाने और उस पर चलाने की कोशिश करें । यानी जिस तरह अल्लाह ने हमारे लिये यह ज़रूरी किया है कि हम उसके हुक्मों को मानने वाले, उसकी इबादत करने वाले और परहेज़गार बन्दे बनें उसी तरह उसने यह भी फ़र्ज़ किया है कि इस मक़सद के लिये हम उसके दूसरे बन्दों में भी कोशिश करें । इसी का नाम दीन की ख़िदमत (सेवा) और दीन की दावत (शिक्षा और निमन्त्रण) है ।

अल्लाह तआला की नज़र में यह काम इतना बड़ा है कि उसके हज़ारों पैग़म्बरों ने तरह तरह की मुसीबतें और कठिनायां उठाकर और दुखों को झेलकर दीन की सेवा और दावत का यह काम पूरा किया । और लोगों के सुधार के लिये और उनको सीधा रास्ता दिखाने के लिये कोशिशें कीं (अल्लाह तआला उन पर और उनका साथ देने वालों पर बेहिसाब रहमतें उतारे)

पैग़म्बरी का यह सिलसिला ख़ुदा के आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ख़त्म हो गया और अल्लाह तआला ने उन्हीं के द्वारा अपने इस ख़ास फ़ैसले का ऐलान भी करा दिया कि दीन की तालीम व दावत और लोगों के सुधार और उनकी हिदायत के लिये अब कोई नबी व पैग़म्बर नहीं भेजा जायगा बल्कि अब क़यामत तक यह काम उन्हीं लोगों को करना होगा जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लाये हुये सच्चे दीन को मान चुके हैं और उनकी हिदायत को क़ुबूल कर चुके हैं ।

सारांश यह है कि रिसालत व नबूवत (दूतता) के ख़त्म होने के बाद दीन की दावत और लोगों के सुधार और उनको सीधा रास्ता दिखाने की पूरी ज़िम्मेदारी सदा के लिये अब हुज़ूर (स०) की उम्मत को सौंप दी गई है । वास्तव में यह इस उम्मत की बहुत बड़ी फ़ज़ीलत है बल्कि क़ुरआन शरीफ़ में इसी काम और

इसी ख़िदमत और दावत को इस उम्मत का मक़सद बताया गया है यानी यह उम्मत पैदा ही इसी काम के लिये की गई है ।

क़ुरआन शरीफ़ में कहा गया है कि :-

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ تَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

कुन्तुम ख़ै र उम मतिन उख़रिजत लिन्नासि तामुरू न बिल मारूफ़ि वतन हौ न अनिल मुन करि व तूमिनू न बिल्लाह ।

(आले इमरान रूकू-१२)

(ऐ मुहम्मद की उम्मत) तुम हो वह सबसे अच्छी जमाअत जो इस संसार में लाई गई है । लोगों को सुधारने के लिये । तुम कहते हो नेकी को और रोकते हो बुराई से और सच्चा ईमान रखते हो अल्लाह पर ।

इस आयत से मालूम हुआ कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत दुनिया की दूसरी उम्मतों और जमाअतों में इसी वजह से मुम्ताज़ व अफ़ज़ल (विशिष्ट और उत्तम) थी कि ख़ुद ईमान और नेकी के रास्ते पर चलने के साथ-साथ दूसरों को भी नेकी के रास्ते पर चलाने और बुराईयों से बचाने की कोशिश करना उसकी विशेष सेवा और ख़ास ड्यूटी थी और इसीलिये इसको ख़ैरो उम्मतिन (सर्वोत्तम उम्मत) ठहराया गया था । इसी से यह भी मालूम हो गया कि यह उम्मत यदि दीन की दावत देने और लोगों को सुधारने और उनको रास्ता दिखाने का फ़र्ज़ पूरा न करे तो वह इस फ़ज़ीलत की मुस्तहिक़ नहीं, बल्कि क़ुसूरवार और मुजरिम है कि अल्लाह तआला ने इतने बड़े काम की ज़िम्मेदारी उसको सौंपी और उसने उसको पूरा नहीं किया । इसकी मिसाल बिल्कुल ऐसी है कि कोई राजा सिपाहियों के किसी दल को शहर में इस काम पर लगाये कि वह बुराईयों और बदमाशियों को रोकें लेकिन वह सिपाही ऐसा न करें बल्कि ख़ुद भी वह सब बुराईयां और अपराध करने लगें जिनकी रोक -थाम के लिये बादशाह ने उनकी डियूटी लगाई थी तो ज़ाहिर है कि यह अपराधी सिपाही इनाम या नौकरी में तरक़्क़ी के मुस्तहिक़ तो क्या होते सख़्त सज़ा के योग्य होंगे, बल्कि उनको दूसरे अपराधियों से ज़्यादा सख़्त सज़ा दी जाये तो ग़लत न होगा ।

अफ़सोस की बात यह है कि इस समय इस्लामी उम्मत का यही हाल है कि दीन की ख़िदमत और उसकी तरफ़ बुलाने और दुनिया के सुधार और सही रास्ता दिखाने का तो नाम ही लेना बेकार है, ख़ुद उनमें दस-पांच प्रतिशत से ज़्यादा ऐसे नहीं रहे हैं जो सही माने में मुसलमान और ईमान वाले हों, नेकियां

करते हों और बुराईयों से बचते हों । ऐसी हालत में हमारा सबसे पहला कर्तव्य यह है कि दीन की तरफ़ दावत और सही रास्ते पर लाने का काम पहले इस उम्मत के ही लोगों में किया जाये जो दीन व ईमान और नेकी तथा परहेज़गारी के रास्ते से दूर हो गये हैं ।

इसकी एक वजह तो यह है कि जो लोग अपने को मुसलमान कहते हैं और कहलाते हैं, चाहे उनकी अमली (क्रियात्मक) हालत कैसी ही हो वह इतना तो है ही कि ईमान व इस्लाम का इक़रार करके ख़ुदा व रसूल और उनके दीन के साथ एक क़िस्म का नाता और संबंध और एक तरह की ख़ुसूसियत पैदा कर चुके हैं और इस्लामी सोसायटी और ब्रादरी के एक सदस्य बन चुके हैं इस लिये हमको उनके सुधार और उनको दीन सिखाने और उस पर चलाने की फ़िक्र सबसे पहले करना चाहिये, जिस तरह क़ुदरती तौर से हर व्यक्ति पर उसकी औलाद और उसके क़रीबी नातेदारों की देखभाल की ज़िम्मदारी दूसरे लोगों के मुक़ाबले में ज़्यादा होती है ।

एक दूसरी वजह यह भी है कि दुनिया के आम लोग मुसलमानों की आजकल की आम हालत को देखकर इस्लाम की ख़ूबी और उसकी बेहतरी को कभी समझ नहीं सकते, बल्कि उल्टे उससे नफ़रत करने लगते हैं । हमेशा से आम लोगों का यही तरीक़ा रहा है और अब भी यही तरीक़ा है कि किसी धर्म के मानने वालों की हालत और उनके आमाल (कर्मों) और बर्ताव को देखकर उस धर्म के बारे में अच्छी या बुरी राय क़ायम की जाती है ।

जिस ज़माने तक मुसलमान आम तौर से सच्चे मुसलमान होते थे और पूरी तरह से इस्लाम के आदेशों पर चलते थे तो दुनिया के लोग उनको देखकर इस्लाम की तरफ़ आकर्षित होते थे और इलाक़े के इलाक़े और पूरी पूरी क़ौमें इस्लाम क़ुबूल कर लेती थीं, लेकिन जबसे मुसलमानों में ज़्यादा तादाद ऐसे लोगों की हो गई जो अपने को मुसलमान तो कहते हैं लेकिन उनके आमाल और अख़लाक़ इस्लामी नहीं हैं और उनके दिल ईमान और तक़्वे के नूर (ज्योति) से ख़ाली हैं उस वक़्त से दुनिया इस्लाम ही के बारे में बुरे विचार रखने लगी है ।

बहर हाल हमें इस हक़ीक़त को अच्छी तरह से समझ लेना चाहिये कि मुसलमान उम्मत का ज़िन्दगी गुज़ारने का ढंग और मुसलमान क़ौम की अमली हालत (क्रियात्मक दशा) ही इस्लाम के हक़ में सबसे बड़ी गवाही है । अगर वह अच्छी होगी तो दुनिया इस्लाम के बारे में अच्छी राय क़ायम करेगी और आप उसकी तरफ़ आयगी और अगर वह बुरी होगी तो फिर दुनिया इस्लाम ही को बुरा जानेगी, और फिर अगर उनको इस्लाम की ओर आने की दावत दी भी जायगी तो उसका कोई

असर न पड़ेगा। इसलिए दूसरों को इस्लाम की तरफ़ बुलाने का काम जब ही किया जा सकता है जबकि मुसलमान उम्मत में इस्लामी ज़िन्दगी हो यानी उनमें ईमान हो और आम तौर से लोग दीन के हुक्मों पर चलते हों। तो मालूम हुआ कि इस लिहाज़ से भी यही ज़रूरी है कि पहले मुसलमानों ही के सुधार और उनकी हिदायत की फ़िक्र व कोशिश की जाये और उनमें इस्लामी ज़िन्दगी को आम किया जाये। क़ुरआन शरीफ़ में इस काम को यानी दीन की ख़िदमत, उसकी तरफ़ बुलाने और लोगों के सुधार व हिदायत की कोशिश को जिहाद भी कहा गया है। बल्कि जिहाद - ए- कबीर (बड़ा जिहाद) बतलाया गया है[1]। और इसमें कोई शक नहीं कि यदि यह काम मन लगाकर और अच्छी नीयत व इरादे के साथ सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करने के लिये किया जाये तो अल्लाह की नज़र में यह बहुत बड़ा जिहाद है।

बहुत से लोग समझते हैं कि जिहाद सिर्फ़ उस जंग का नाम है जो दीनी उसूल व अहकाम (धार्मिक सिद्धान्तों और निर्देशों) पर चलते हुये अल्लाह के रास्ते में लड़ी जाये लेकिन सही बात यह है कि दीन की तरफ़ बुलाने और ख़ुदा के बन्दों के सुधार और उनकी हिदायत के लिये जिस वक़्त जो कोशिश की जाये वही उस वक़्त का ख़ास जिहाद है।

रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नबी होने के बाद बारह तेरह साल मक्का शरीफ़ में रहे इस पूरी मुद्दत में आपका और आपके साथियों का जिहाद यही था कि रुकावटों और तरह-तरह की मुसीबतों के होते हुये भी दीन पर ख़ुद भी मज़बूती से जमे रहे और दूसरों को सुधारने और उनको सीधे रास्ते पर चलाने की कोशिश करते रहे और ख़ुदा के बन्दों को खुले छिपे अल्लाह के दीन की तरफ़ बुलाते रहे। सारांश यह है कि अल्लाह को भूले हुये और रास्ते से भटके हुये बन्दों को अल्लाह से मिलाने की और सीधे रास्ते पर चलाने की कोशिश करना और इस रास्ते में अपना तन, मन, धन लगाना और चैन व आराम क़ुर्बान करना यह सब अल्लाह की नज़र में जिहाद ही में गिना जाता है बल्कि इस वक़्त का ख़ास जिहाद यही है।

इस काम के करने वालों को आख़िरत में जो बदला और सवाब मिलने वाला है और न करने वालों के लिये अल्लाह की फटकार व ग़ुस्से का जो डर व ख़तरा है, उसका कुछ अन्दाज़ा नीचे लिखी हदीसों से हो सकता है।

(१. सूरए फ़ुर्क़ान की आयत "वजाहिद हुम बिही जिहादन कबीरा" के बारे में तफ़सीर लिखने वालों की आम राय यही है कि इससे तबलीग़ व दावत ही मुराद है।)

हज़रत अबू हुरैरह (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से रवायत (वृतांत) है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:-

"जो शख़्स लोगों को सीधे रास्ते की दावत दे और नेकी की तरफ़ बुलाये तो जो लोग उसकी बात मानकर जितनी नेकियां और भलाईयां करेंगे और उन नेकियों का जितना सवाब उन करने वालों को मिलेगा उतना ही सवाब उस शख़्स को भी मिलेगा जिसने उनको नेकी की तरफ़ बुलाया और इसकी वजह से ख़ुद नेकी करने वालों के बदले और सवाब में कोई कमी न होगी"।

इस हदीस से मालूम हुआ कि अगर आपके बुलाने और कोशिश करने से दस-बीस आदमियों का भी सुधार हो गया और वह ख़ुदा व रसूल को पहचानने लगे और दीन के हुक्मों पर चलने लगे, नमाज़ें पढ़ने लगे और इसी तरह दूसरे फ़राइज़ अदा करने लगे और गुनाहों व बुरी बातों से बचने लगे तो इनका जितना सवाब उन सबको मिलेगा उस सबके योग के बराबर अकेले आपको मिलेगा। यदि आप सोचें तो आप को मालुम होगा कि इतना सवाब कमाने का कोई दूसरा रास्ता है ही नहीं कि एक आदमी को सैकड़ों आदमियों की नेकियां और इबादतों का सवाब मिल जाये। एक दूसरी रिवायत में है कि रसूलुल्लाह (स०) ने हज़रत अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से फ़रमाया:-

"ऐ अली! क़सम अल्लाह की अगर तुम्हारे ज़रिये एक शख़्स को भी सीधा रास्ता मिल जाये तो तुम्हारे लिये यह इससे बेहतर है कि बहुत से लाल ऊंट तुमको मिल जायें। (अरब के लोग लाल ऊंट को बहुत बड़ी दौलत समझते थे)।

असल में अल्लाह के बन्दों का सुधार और उनको सीधे रास्ते पर लगाने की कोशिश जैसे कि पहले कहा गया है बहुत ऊंचे दर्जे की ख़िदमत और नेकी है और पैग़म्बरों का ख़ास काम है फिर दुनिया की बड़ी से बड़ी दौलत की भी इसके सामने क्या हैसियत हो सकती है।

रसूल्लाह (स०) ने एक और हदीस में लोगों के सुधार और हिदायत के काम की अहमियत को एक आसान मिसाल के ज़रिये समझाया है। आपके इरशाद का सारांश यह है कि:-

"मान लो एक नाव है जिसमें नीचे ऊपर दो दर्जे हैं और नीचे दर्जे वालों को पानी ऊपर के दर्जे से लाना पड़ता है जिससे ऊपर वाले मुसाफ़िरों को तकलीफ़ होती है और वह उन पर नाराज़ होते हैं तो अगर नीचे वाले मुसाफ़िर अपनी बेवक़ूफ़ी और ग़लती से नीचे से ही पानी लेने

के लिये नाव के निचले हिस्से में छेद करने लगें और ऊपर के दर्जे वाले उनको इस ग़लती से रोकने की कोशिश न करें तो नतीजा यह होगा कि नाव सब ही को लेकर डूब जायेगी और अगर ऊपर वाले मुसाफ़िरों ने समझा बुझाकर नीचे के दर्जे वालों को इस काम से रोक दिया तो वह उनको भी बचा लेंगे, और ख़ुद भी बच जायेंगे। हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया "बिल्कुल इसी तरह गुनाहों और बुराईयों का भी हाल है। अगर किसी जगह के लोग बेवकूफ़ी की बातों और गुनाहों में फंसे हुये हों और वहां के समझदार और भले लोग उनके सुधार और उनकी हिदायत की कोशिश न करें तो नतीजा यह होगा कि इन पापियों और गुनाहगारों की वजह से ख़ुदा का अज़ाब उतरेगा और फिर सब ही उसकी लपेट में आ जायेंगे और अगर उनको पापों और बुराईयों से रोकने की कोशिश कर ली गई तो फिर सब ही अज़ाब से बच जायेंगे"।

एक और हदीस में है कि रसूलुल्लाह (स०) ने बड़ी ताकीद के साथ क़सम खाके फ़रमाया:-

"उस अल्लाह की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, तुम अच्छी बातों और नेकियों को लोगों से कहते रहो और बुराईयों से उनको रोकते रहो। याद रखो यदि तुमने ऐसा न किया तो बहुत मुमकिन है कि अल्लाह तुम पर कोई सख़्त अज़ाब लाद दे और फिर तुम उससे दुआयें करो और तुम्हारी दुआयें भी उस वक़्त न सुनी जायें"।

भाईयो ! इस ज़माने के कुछ ख़ुदा तक पहुंचे हुये बुज़ुर्गों का विचार है कि मुसलमानों पर एक मुद्दत से जो कठिनाईयां, कष्ट और रुसवाइयां आ रही हैं और जिन उलझनों में वह फंसे हुये हैं जो हज़ारों दुआओं, ख़तमों, वज़ीफ़ों से भी नहीं टल रही हैं इसकी बड़ी वजह यही है कि हम दीन की ख़िदमत और उसकी दावत और लोगों के सुधार और उनकी हिदायत के काम को छोड़े हुये हैं जिसके लिये हम पैदा किये गये थे और नबूवत ख़त्म हो जाने के बाद जिसके हम पूरे ज़िम्मेदार बनाये गये थे और दुनिया का भी ऐसा ही क़ानून है कि जो सिपाही अपनी ड्यूटी पूरी न करे उसको अलग कर दिया जाता है और बादशाह जो सज़ा उसके लिये सही समझता है देता है।

आओ आगे के लिये इस फ़र्ज़ और इस ड्यूटी को पूरा करने का हम सब ऐहद (प्रण) करें अल्लाह हमारी मदद करे। उसका वादा है कि:-

व ल यबसुरन्नल्ला ह मन यनसुरुहू।

(अल्लाह उन लोगों की ज़रूर मदद करेगा जो उसके दीन की मदद करेंगे)।

बारहवां सबक़

दीन पर इसतिक़ामत

ईमान लाने के बाद बन्दे पर अल्लाह की तरफ़ से जो ख़ास ज़िम्मेदारियां लागू हो जाती हैं उनमें से एक बड़ी ज़िम्मेदारी यह है कि बन्दा पूरी मज़बूती और हिम्मत के साथ दीन पर जमा रहे, चाहे वक़्त उसके लिये कैसा ही नासाज़गार (प्रतिकूल) हो वह किसी हालत में दीन की रस्सी को हाथ से छोड़ने के लिये तैयार न हो, इसी का नाम "इसतिक़ामत" है। क़ुरआन शरीफ़ में ऐसे लोगों के लिये बड़े इनामात और ऊंचे दर्जों का ज़िक्र किया गया है। एक जगह इरशाद है:-

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ
أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ۝ نَحْنُ
أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي أَنفُسُكُمْ
وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ۝ نُزُلًا مِّنْ غَفُورٍ رَّحِيمٍ ۝

इन्नल लज़ी न क़ालू रब्बु नल्लाहु सुम मस्तक़ा मू त तनज़्ज़लु अलैहिमुल मलाइ क तु अल्ला तख़ाफ़ू व ला तहज़न व अबशिरू बिलजन्नतिल लती कुन्तुम तूअदून। नहनू औलियाउकुम फ़िल हयातिद्दुनया व फ़िल आख़िरति व लकुम फ़ीहा मा तशतही अन फ़ुसुकुम व लकुम फ़ीहा मा तद्दऊन। नुज़ु लम मिन ग़फ़ूरिं रहीम। [हा मीम सजदह रूकू-४]

जिन लोगों ने इक़रार कर लिया (और दिल से क़ुबूल कर लिया) कि हमारा रब सिर्फ़ अल्लाह है (और हम उसके मुस्लिम बन्दे हैं) फिर वह इस पर जमे रहे (यानी इस इक़रार का हक़ अदा करते रहे और कभी उससे न हटे) उन पर अल्लाह की तरफ़ से फ़रिश्ते यह पैग़ाम लेकर उतरेंगे कि कुछ चिन्ता न करो और किसी बात का ग़म न करो

और उस जन्नत के मिलने से ख़ुश रहो जिसका तुमसे वादा किया जाता था हम तुम्हारे मददगार हैं दुनिया वाली ज़िन्दगी में और आख़िरत में और तुम्हारे लिये उस जन्नत में वह सब कुछ होगा जो तुम्हारा जी चाहेगा और तुम्हें वह सब कुछ मिलेगा जो तुम मांगोगे, यह इज़्ज़त वाली महमानी होगी तुम्हारे रब की तरफ़ से जो माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है ।

सुबहानल्लाह ! दीन पर मज़बूती से जमे रहने वालों और बन्दगी (भक्ति) का हक़ अदा करने वालों के लिये इस आयत में कितनी बड़ी ख़ुशख़बरी है । सच तो यह है कि अगर जान माल सब कुछ क़ुरबान करके भी किसी को यह दर्जा प्राप्त हो जाये तो वह बड़ा ख़ुशनसीब है ।

एक हदीस में है:-

रसूलुल्लाह (स०) से एक सहाबी ने निवेदन किया कि हज़रत ! मुझे कोई ऐसी नसीहत दीजिये कि आपके बाद फिर किसी से कुछ पूछने की ज़रूरत न पड़े । आपने फ़रमाया कि कहो "बस अल्लाह मेरा रब है और फिर इसपर मज़बूती से जमे रहो (और उसके मुताबिक़ बन्दगी की ज़िन्दगी गुज़ारते रहो") ।

क़ुरआन शरीफ़ में हमारी हिदायत के लिये अल्लाह तआला ने अपने कई सच्चे बन्दों के ऐसे सबक़ सिखाने वाले वाक़ेआत बयान किये हैं जो सख़्त परिस्थितियों में भी दीन पर जमे रहे और बड़े से बड़ा लालच और कड़े से कड़ा दुख और तकलीफ़ का डर भी उनको दीन से नहीं हटा सका । इनमें से एक घटना तो उन जादूगरों की है जिन्हें फ़िरऔन ने हज़रत मूसा (उन पर सलाम हो) से मुक़ाबला करने के लिये बुलाया था, और बड़े इनाम और सम्मान का उनसे वादा किया था । लेकिन ठीक मुक़ाबले के वक़्त जब हज़रत मूसा (उन पर सलाम हो) के दीन की सच्चाई उन पर खुल गई तो न तो उन्होंने इसकी परवाह की कि फ़िरऔन ने जिस इनाम और सम्मान का और जिन बड़े बड़े पदों का वादा हमसे किया है उनसे हम महरूम (वंचित) हो जायेंगे और न इसकी परवाह की कि फ़िरऔन हमें कितनी बड़ी सज़ा देगा । बल्कि उन्होंने ख़तरों से बेपरवाह होकर भरे मजमे में पुकार कर कह दिया कि :-

آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ وَمُوسَىٰ

आमन्ना बिरब्बि हारू न व मूसा
(हारून और मूसा जिस परवरदिगार की बन्दगी की दावत देते हैं हम

उसपर ईमान ले आये)

फिर जब ख़ुदा के दुश्मन फ़िरऔन ने उनको धमकी दी कि मैं तुम्हारे हाथ पांव कटवा के सूली पर लटका दूंगा तो उन्होंने पूरी ईमानी हिम्मत से जवाब दिया ।

فَاقْضِ مَا أَنتَ قَاضٍ ۖ إِنَّمَا تَقْضِي هَٰذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝ إِنَّا آمَنَّا بِرَبِّنَا
لِيَغْفِرَ لَنَا خَطَايَانَا

फ़क़ज़ि मा अन त क़ाज़ । इन्नमा तक़ज़ी हाज़िहिल हयातददुनया । इन्ना आमन्ना बिरब्बिना लियग़फ़ि र लना ख़तायाना (सूरए ताहा रूकू-३)

तुझको जो हुक्म देना हो दे डाल । तू अपना हुक्म सिर्फ़ इसी कुछ दिन की दुनिया वाली ज़िन्दगी ही में तो चला सकता है और हम तो अपने सच्चे रब पर ईमान इसलिये लाये हैं कि वह (आख़िरत की न ख़त्म होने वाली ज़िन्दगी में) हमारे गुनाह माफ़ कर दे ।

और इससे भी ज़्यादा सबक़ देने वाला वाक़ेआ ख़ुद फ़िरऔन की पत्नी का है । आप जानते हैं कि फ़िरऔन मिस्र देश का अकेला बादशाह और स्वामी था और उसकी यह पत्नी मिस्र देश की रानी होने के साथ फ़िरऔन के दिल की भी मालिक थी । बस इससे अन्दाज़ा कीजये कि इसको दुनिया की कितनी इज़्ज़त और कैसा ऐश व आराम हासिल होगा, लेकिन हज़रत मूसा(उन पर सलाम हो) के दीन की सच्चाई अल्लाह की उस बन्दी पर खुल गयी तो उसने बिल्कुल इसकी परवाह न की कि फ़िरऔन नाराज़ हो जायेगा और मुझ पर कैसे कैसे अत्याचार करेगा, और दुनिया की इस आनन्द और आराम की जगह मुझे कितनी कठिनाइयां और कैसी तकलीफ़ें झेलनी पड़ेंगी । बल्कि इन सब बातों से बिल्कुल बेपरवाह होकर उसने अपने ईमान का ऐलान कर दिया, और फिर हक़ (सत्य) के रास्ते में अल्लाह की उस बन्दी ने ऐसे दुख और ऐसी तकलीफ़ें झेलीं जिनको सोचकर भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं और कलेजा मुंह को आता है । फिर अल्लाह तआला की तरफ़ से उनको यह दर्जा मिला कि क़ुरआन शरीफ़ में बड़े सम्मान के साथ उनका ज़िक्र किया गया है और मुसलमानों के लिये उनके सब्र (सहनशीलता) और उनकी क़ुरबानी को नमूना और आदर्श बताया गया ।

क़ुरआन शरीफ़ में है :-

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۙ

व ज़ र बल्लाहु म स लन लिल्लज़ी न आ मनुम र अ त फ़िर औ न इज़ क़ालत रब्बिब नि ली इन द क बैतन फ़िल जन्नति व नजिनी मिन फ़िर औ न व अ म लिही व नज्जिनी मिनल क़ौमिज़ ज़ा लिमीन (सूरए तहरीम रूकू-२)

और ईमान वालों के लिये अल्लाह तआला मिसाल बयान करता है फ़िरऔन की पत्नी (आसिया) की, जबकि उसने दुआ की कि ऐ मेरे परवरदिगार तू मेरे वास्ते जन्नत में अपने क़रीब एक घर बना दे, और मुझे फ़िरऔन की बुराईयों और उसके बुरे आमाल (कर्मों) से निजात दे, और इस ज़ालिम क़ौम से मुझे छुटकारा देदे ।

सुबहानल्लाह ! क्या ऊंचा दर्जा और क्या शान है कि सारी उम्मत के लिये यानी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (उनसे ख़ुदा राज़ी हो) से लेकर क़यामत तक के सब मुसलमानों के लिये अल्लाह तआला ने अपनी इस बन्दी के **ईमान पर मज़बूती से जमे रहने** को मिसाल और नमूना ठहराया है ।

हदीस शरीफ़ में है कि मक्का शरीफ़ में जब मुशिरकों ने मुसलमानों को बहुत सताया और उनके ज़ुल्म व अत्याचार हद से बढ़ गये तो कुछ सहाबा ने रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निवेदन किया कि "हुज़ूर ! अब इन ज़ालिमों के ज़ुल्म हद से बढ़ रहे हैं, इसलिये आप अल्लाह तआला से दुआ करें तो हुज़ूर ने जवाब दिया कि तुम अभी से घबरा गये ! तुमसे पहले हक़वालों के साथ यहां तक हुआ कि लोहे की तेज़ कंघियां उनके सिरों में चुभोकर खींच दी जाती थीं और किसी के सर पर आरा चलाकर बीच से दो टुकड़े कर दिये जाते थे लेकिन ऐसे सख़्त ज़ुल्म भी उनको अपने सच्चे दीन से नहीं फेर सकते थे" । और वह अपना दीन नहीं छोड़ते थे"।

अल्लाह तआला हम कमज़ोरों को भी अपने इन सच्चे बन्दों की हिम्मत और साहस तथा इनकी दृढ़ता का कोई अंश प्रदान करे और अगर ऐसा कोई वक़्त आ ही जाये तो अपने इन बन्दों के रास्ते पर चलने के लिये हमें हिम्मत और तौफ़ीक़ दे ।

तेरहवां सबक़

दीन के लिये कोशिश और उसकी मदद व हिमायत

ईमान वालों से अल्लाह की ख़ास मांग और उनको बड़ा ताकीदी हुक्म एक यह भी है कि जिस सच्चे दीन को और अल्लाह की बन्दगी वाले जिस अच्छे तरीक़े को उन्होंने अच्छा और सच्चा समझकर अपनाया है वह उसको जीवित और हरा भरा रखने के लिये और उसको ज़्यादा से ज़्यादा रिवाज देने के लिये जो कोशिश कर सकते हों ज़रूर करें । दीन की ख़ास भाषा में इसका नाम जिहाद है । और परिस्थितियों के मुताबिक़ इसका रूप बदलता रहता है । जैसे अगर कभी ऐसी परिस्थितियां हों कि ख़ुद अपना और अपने घरवालों का और अपनी क़ौम व जमाअत का दीन पर जमे रहना कठिन हो और इसकी वजह से दुख और कष्ट उठाने पड़ते हों तो ऐसी परिस्थितियों में ख़ुद अपने को और घरवालों को और अपनी क़ौम को दीन पर जमाये रखने की कोशिश करना और मज़बूती से दीन पर जमे रहना बहुत बड़ा "जिहाद" है । इसी तरह अगर किसी वक़्त मुसलमान कहलाने वाली क़ौम जिहालत और लापरवाही की वजह से अपने दीन से दूर होती चली जा रही हो तो उसके सुधार और उसकी दीनी तरबियत (धार्मिक दीक्षा) की कोशिश करना और इसमें अपने जान व माल का खपाना "जिहाद" ही का एक रूप है । इसी तरह अल्लाह के जो बन्दे अल्लाह के सच्चे दीन से और अल्लाह के उतारे हुये आदेशों से अन्जान हैं उनको अक़्लमन्दी और प्यार और सच्ची सहानुभूति के साथ दीन का पैग़ाम पहुंचाने और अल्लाह के आदेशों से वाक़िफ़ कराने में दौड़ धूप करना भी जिहाद का एक स्वरूप है ।

और अगर कोई ऐसा वक़्त हो कि अल्लाह व रसूल पर यक़ीन व ईमान रखने वाली जमाअत के हाथ में इज्तमाई (एकत्रित) ताक़त हो और अल्लाह के दीन की हिफ़ाज़त के लिये ज़रूरी हो कि उसके लिये ताक़त और शक्ति का प्रयोग किया जाये तो उस वक़्त अल्लाह के बताये हुये क़ानून के अनुसार दीन की हिफ़ाज़त और उसकी मदद के लिये ताक़त का इस्तेमाल करना जिहाद है । लेकिन उसके जिहाद और इबादत होने की दो विशेष शर्तें हैं । एक यह कि ताक़त का इस्तेमाल किसी निजी या क़ौमी फ़ायदे के लिये या क़ौमी दुश्मनी की वजह से न हो बल्कि असल मक़सद सिर्फ़ अल्लाह का हुक्म मानना और उसके दीन की ख़िदमत करना

हो । दूसरे यह कि उसके नियमों की पूरी पाबन्दी हो । इन दो शर्तों के बिना अगर ताक़त का इस्तेमाल होगा तो दीन की नज़र में वह जिहाद नहीं फ़साद (उपद्रव) होगा ।

इसी तरह ज़ालिम और अन्यायी राज्याधिकारियों के सामने (चाहे वे मुसलमानों में से हों या दूसरे लोगों में से) सच बात कहना भी जिहाद का एक ख़ास रूप है जिसको हदीस शरीफ़ में अफ़ ज़लुल जिहाद (जिहादों में सर्वोच्च) फ़रमाया गया है ।

दीन के लिये कोशिश करने और उसकी सहायता तथा रक्षा करने की यह सब सूरतें जो ऊपर बयान की गई हैं अपने अपने अवसर पर यह सब इस्लाम के फ़राइज़ (अनिवार्य कर्तव्य) हैं और जिहाद का शब्द जैसा कि ऊपर हमने बतलाया इन सब पर लागू है । अब इसकी ताकीद और फ़ज़ीलत के बारे में कुछ आयतें और हदीसें सुन लीजिये ।

وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ هُوَ اجْتَبَاكُمْ

व जाहिदू फ़िल्लाहि हक़ क़ जिहादि ही हुवज तबाकुम (सूरए अलहज रूकू-१०)

और कोशिश करो अल्लाह के रास्ते में जैसा कि उसका हक़ है । उसने (अपने दीन के लिये) तुमको चुना है ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ تِجَارَةٍ تُنجِيكُم مِّنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ
تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ
وَأَنفُسِكُمْ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ يَغْفِرْ لَكُمْ
ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسَاكِنَ
طَيِّبَةً فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

या अय्युहल लज़ी न आ मनू हल अदुल्लु कुम अला तिजा रतिन तुनजीकुम मिन अज़ाबिन अलीम । तू मिनु न बिल्लाहि व रसूलिही व तुजाहिदू न फ़ी सबीलिल्लाहि बिअम वालिकुम व अन फ़ुसिकुम ज़ालिकुम ख़ैरूल लकुम इन कुन्तुम ता लमून । यग़ फ़िर लकुम ज़ुनू बकुम व युद ख़िलकुम जन्नातिन तजरी

मिन तहतिहल अन्हारू व मसाकि न तय्यि बतन फ़ी जन्नाति अद्न । ज़ालिकल फ़ौज़ुल अज़ीम । (सूरए सफ़ रूकू-२)

ऐ ईमान वालो ! क्या मैं तुम्हें एक ऐसे व्यापार और ऐसे सौदे का पता दे दूं जो सख़्त अज़ाब से तुमको निजात दिला दे (वह यह है कि) अल्लाह और उसके रसूल पर तुम अपने विश्वास को पक्का करो और उसके रास्ते में (यानी उसके दीन के लिये) अपने धन और अपने जी जान से कोशिश करो । यह बहुत ही अच्छा सौदा है । तुम्हारे लिये यदि तुम्हें समझ बूझ हो (अगर तुमने अल्लाह व रसूल पर ईमान वाली शर्त पूरी कर दी तो) वह तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और तुमको (जन्नत के) उन बग़ीचों में जगह देगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी और सदा बहार रहने वाली जन्नत के सुन्दर घरों में तुमको बसायेगा । यह (तुम्हारी) बड़ी सफ़लता है ।

हदीस शरीफ़ में है कि हुज़ूर (स०) ने एक ख़ुतबा दिया और उसमें फ़रमाया:-

"अल्लाह पर सच्चा ईमान लाना और दीन के लिये कोशिश करना सब आमाल में अफ़ज़ल है" ।

एक हदीस में है कि आप (स०) ने फ़रमाया:-

"जिस बन्दे के पांव पर ख़ुदा के रास्ते में चलने की वजह से धूल लगी, यह नहीं हो सकता कि दोज़ख़ की आग फिर उसको छू सके" ।

एक हदीस में है कि:-

"तुम में से किसी शख़्स का ख़ुदा की राह में (अर्थात अल्लाह के दीन की कोशिश और उसकी सहायता व रक्षा में) खड़ा होना और कुछ हिस्सा लेना अपने घर के कोने में रहकर सत्तर साल नमाज़ पढ़ने से अच्छा है"

अल्लाह तआला हम सबको इस लायक़ बनाये कि हम भी दीन की कोशिश और सहायता और उसकी हिफ़ाज़त का यह सवाब हासिल कर सकें ।

चौदहवां सबक़

शहादत की फ़ज़ीलत और शहीदों का दर्जा

सच्चे दीन यानी इस्लाम पर जमे रहने की वजह से अगर अल्लाह के किसी बन्दे या बन्दी को मार डाला जाय या दीन की कोशिश और उसकी हिमायत में किसी ख़ुशनसीब की जान चली जाये तो दीन की विशेष भाषा में उसको "शहीद" कहते हैं, और अल्लाह के यहां ऐसे लोगों का बहुत बड़ा दर्जा है। ऐसे लोगों के बारे में कुरआन शरीफ़ में कहा गया है कि उनको कभी भी मरा हुआ न समझा जाये बल्कि शहीद हो जाने के बाद अल्लाह की तरफ़ से उनको एक ख़ास ज़िन्दगी मिलती है, और उनपर तरह तरह की नेमतों की बारिश होती रहती है।

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ

वला तहसबन नल लज़ी न क़ुतिलू फ़ी सबीलिल्लाहि अमवातन बल अहयाउन इन द रब्बिहिम युर ज़क़ून (सूरए आले इमरान रूकू-१७)

जो लोग अल्लाह की राह में (अर्थात उसके दीन के रास्ते में) मारे जायें उनको कभी मरा हुआ न समझो बल्कि वह जीवित हैं अपने परवरदिगार के पास, उनको तरह-२ की नेमतें दी जाती हैं।

शहीदों पर अल्लाह तआला का कैसा कैसा प्यार होगा और उनको कैसे कैसे इनाम मिलेंगे, इसका अन्दाज़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस हदीस से किया जा सकता है।

हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया:-

"जन्नतियों में से कोई भी व्यक्ति यह न चाहेगा कि उसको फिर दुनिया में लौटाया जाये, चाहे उनसे कहा जाये कि तुमको सारी दुनिया दे दी जायेगी, लेकिन शहीद इसकी आरज़ू करेंगे कि एक बार नहीं उनको दस बार फिर दुनिया में भेजा जाये ताकि वह हर बार अल्लाह के रास्ते में शहीद होकर आयें। उन्हें यह आरज़ू शहादत के ऊंचे दर्जे और

उसके ख़ास इनाम को देखकर होगी"।

शहादत की इच्छा और उसके शौक़ में ख़ुद रसूलुल्लाह (स०) का यह हाल था कि एक हदीस में इरशाद फ़रमाया:-

"क़सम है उसकी जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, मेरा जी चाहता है कि मैं अल्लाह की राह में क़त्ल किया जाऊं, फिर मुझे ज़िन्दा कर दिया जाय, और फिर मैं क़त्ल किया जाऊं, फिर मुझे ज़िन्दगी दी जाये, और फिर मैं क़त्ल किया जाऊं"।

एक हदीस में है कि :-

"शहीद को अल्लाह तआला की तरफ़ से छः इनाम मिलते हैं। एक यह कि वह क़त्ल होते ही बख़्श दिया जाता है, और उसको जन्नत में मिलने वाली जगह और उसका महल व मकान दिखा दिया जाता है। दूसरे यह कि क़ब्र के अज़ाब से उसको बचा दिया जाता है। तीसरे यह कि क़यामत के दिन की बहुत ज़्यादा घबराहट और बेचैनी से उसको अमन (शान्ति) दी जायगी जिससे वहां सब परेशान होंगे (उसके अलावा जिसको अल्लाह चाहे) चौथे यह कि क़यामत में उसके सिर पर इज़्ज़त व वक़ार (सम्मान) का एक ऐसा ताज रखा जायेगा जिसका एक हीरा संसार और संसार की सारी चीज़ों से बेहतर होगा। पांचवें यह कि जन्नत की हूरों(ख़ूबसूरत कुंआरी जवान लड़कियां) में से ७२ उसके निकाह में दी जायेंगी। छटे यह कि उसके नातेदारों में से ७० के बारे में उसकी सिफ़ारिश क़ुबूल की जायेगी"।

एक हदीस में है:-

"शहीद होने वाले के सारे गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं। अलबत्ता अगर किसी का क़र्ज़ा उसके ऊपर होगा तो उसका बोझ लदा रहेगा"।

और याद रहे कि सवाब और फ़ज़ीलत इसी पर निर्भर नहीं है कि दीन की राह में आदमी मार ही डाला जाये बल्कि अगर दीन की वजह से किसी ईमान वाले को सताया गया, बेइज़्ज़त किया गया, मारा पीटा गया या उसका माल लूटा गया या किसी प्रकार का नुक़सान उसको पहुंचाया गया तो इस सबका भी अल्लाह तआला के यहां बड़ा सवाब मिलेगा और अल्लाह तआला ऐसे लोगों को इतने बड़े मरतबे देगा कि बड़े बड़े इबादत-गुज़ार व ज़ाहिद (संयमी व तपस्वी) इन पर रश्क (ईर्ष्या) करेंगे। जिस तरह संसार की हुकूमतों में उन सिपाहियों की बड़ी इज़्ज़त होती है और उन्हें बड़े बड़े इनाम और ख़िताब दिये जाते हैं जो अपनी सरकारों की सेवा और समर्थन में चोटें खायें और मारे पीटे जायें, ज़ख़्मी

किये जायें या बेइज़्ज़त किये जायें या दूसरी तरह के नुक़सान उठायें और फिर भी उस हुकूमत के वफ़ादार रहें, इसी तरह अल्लाह के यहां उन बन्दों की ख़ास इज़्ज़त है जो अल्लाह के दीन (धर्म) पर चलने और उसपर क़ायम रहने के जुर्म (अपराध) या दीन की तरक़्क़ी और उसे हरा भरा रखने की कोशिश में मारे पीटे जायें या बेइज़्ज़त किये जायें। क़यामत के दिन जब ऐसे लोगों को ख़ास इनाम बंटेंगे और अल्लाह तआला ख़ास सवाब और इज़्ज़त उन्हें देगा तो दूसरे लोग पछतायेंगे कि क्या अच्छा होता कि दुनिया में हमारे साथ भी ऐसा ही किया गया होता, दीन के लिये हम बेइज़्ज़त किये गये होते, मारे पीटे गये होते, हमारे जिस्मों को घायल किया गया होता, ताकि इस वक़्त यही इनाम हमको भी मिलते।

ऐ अल्लाह अगर हमारे लिये कभी ऐसी आज़माइशें (परीक्षायें) लिखी हों तो हमारे पैर जमाये रखना, और अपनी रहमत और मदद से महरूम (वंचित) न फ़रमाना।

पन्द्रहवां सबक़

मरने के बाद

बरज़ख़, क़यामत, आख़िरत :-

इतनी बात तो सब जानते व मानते हैं कि जो इस दुनिया में आया है उसको किसी न किसी दिन अवश्य मरना है, लेकिन अपने आप यह बात किसी को भी मालुम नहीं, और न कोई इसको जान सकता है कि मरने के बाद क्या होता है और क्या होगा। यह बात सिर्फ़ अल्लाह ही को मालुम है और उसके बतलाने से उसके पैग़म्बरों को मालूम होती है। अल्लाह के हर पैग़म्बर ने अपने अपने वक़्त में अपनी क़ौम को और अपनी उम्मत को अच्छी तरह से बतलाया और जतलाया था कि मरने के बाद किन किन मन्ज़िलों व परिस्थितियों से तुमको गुज़रना होगा और दुनिया में किये हुये तुम्हारे आमाल (कर्मों) का बदला तुमको हर मंज़िल में किस तरह मिलेगा। अल्लाह के पैग़म्बर हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चूंकि अल्लाह के आख़िरी नबी और रसूल हैं और उनके बाद अब क़यामत तक कोई पैग़म्बर आने वाला नहीं है इसलिये आपने मरने के बाद की सब मन्ज़िलों का बयान बहुत तफ़सील से किया है। अगर उस सबको इकट्ठा किया जाये तो एक बहुत बड़ा दफ्तर (ग्रन्थ) तैयार हो सकता है। क़ुरआन शरीफ़ में और हदीसों में जो कुछ इस बारे में बयान किया गया है उसका सारांश यह है कि :-

मरने के बाद तीन मन्ज़िलें आने वाली हैं। पहली मंज़िल मरने के वक़्त से लेकर क़यामत आने तक की है उसको "आलम - ए- बरज़ख़" कहते हैं। मरने के बाद आदमी का शरीर धरती में दफ़न कर दिया जाये, चाहे नदी में बहा दिया जाये,चाहे जलाकर राख कर दिया जाये लेकिन उसकी रूह (आत्मा) किसी हालत में मिटती नहीं। सिर्फ़ इतना होता है कि वह हमारी इस दुनिया से एक दूसरी दुनिया में चली जाती है, वहां अल्लाह के फ़रिश्ते दीन के बारे में उससे कुछ सवाल पूछते हैं, अगर वह सच्चा ईमान वाला है तो वह ठीक-ठीक जवाब देता है जिस पर फ़रिश्ते उसको ख़ुशख़बरी सुना देते हैं कि तू क़यामत तक चैन और सुख से रह। और अगर वह ईमान वाला नहीं होता बल्कि काफ़िर (इस्लाम

को न मानने वाला) या नाम का मुसलमान मुनाफ़िक़ (बाहर कुछ भीतर कुछ) होता है तो उसी समय से सख़्त अज़ाब और दुख में डाल दिया जाता है जिसका सिलसिला क़यामत तक जारी रहता है, यही बरज़ख़ की मंज़िल है । जिसकी अवधि मरने के वक़्त से लेकर क़यामत तक की है । इसके बाद दूसरी मंज़िल क़यामत और हश्र की है । क़यामत का मतलब यह है कि एक समय ऐसा आयेगा कि अल्लाह के हुक्म से यह सारी दुनिया एक दम मिटा दी जायेगी । जिस तरह बड़े भूचालों से क्षेत्र के क्षेत्र समाप्त हो जाते हैं उसी तरह उस समय सारी दुनिया ख़त्म हो जायेगी और सब चीज़ें एक बारगी मिटा दी जायेंगी (फिर एक लम्बा समय गुज़र जाने के बाद) अल्लाह तआला जब चाहेगा सब आदमियों को फिर से ज़िन्दा करेगा । उस समय सारी दुनिया के अगले पिछले सब इन्सान दोबारा ज़िन्दा हो जायेंगे और उनकी दुनिया वाली ज़िन्दगी का पूरा हिसाब होगा । इस जांच और हिसाब में अल्लाह के जो बन्दे निजात और जन्नत के अधिकारी होंगे उनके लिये जन्नत का हुक्म दिया जायेगा और जो मुजरिम अल्लाह के अज़ाब और दोज़ख़ के मुस्तहिक़ होंगे उनके लिये दोज़ख़ का हुक्म सुना दिया जायेगा । यह मंज़िल मरने के बाद की दूसरी मंज़िल है जिसका नाम क़यामत और हश्र है ।

इसके बाद जन्नती हमेशा के लिये जन्नत में चले जायेंगे, जहां सिर्फ़ सुख और चैन होगा, और ऐसे सुख व आनन्द होंगे जो दुनिया में किसी ने नहीं देखे होंगे । और दोज़ख़ी दोज़ख़ में डाल दिये जायेंगे जहां इनको बड़े सख़्त अज़ाब और दुख होंगे । अल्लाह हम सब को उससे अपनी पनाह (शरण) में रखे । यह दोज़ख़ और जन्नत मरने के बाद तीसरी और आख़िरी मंज़िल होगी । और फिर लोग हमेशा हमेशा अपने आमाल के मुताबिक़ जन्नत या दोज़ख़ ही में रहेंगे । इस तीसरी और आख़िरी मंज़िल का नाम आख़िरत है ।

मरने के बाद के बारे में अल्लाह के पैग़म्बरों ने और ख़ास तौर से आख़री पैग़म्बर हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो कुछ बतलाया है और क़ुरआन शरीफ़ और हदीस में जो कुछ फ़रमाया गया है उसका ख़ुलासा यही है जो ऊपर लिखा गया है । अब कुछ आयतें और हदीसें भी सुन लीजिये ।

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

कुल्लु नफ़सिन ज़ाय क़तुल मौति व इन्नमा तु वफ़्फ़ौ न उजू रकुम यउ मल क़िया मह (सूरए आले इमरान रूकू-१८)

हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है और तुम्हारे कर्मों के फल क़यामत के दिन पूरे दिये जायेंगे ।

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ۝

कुल्लु नफ़सिन ज़ाई क़तुल मौति सुम्म इलइ ना तुर जऊन (सूरए अनकबूत रूकू-६)

हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है, फिर तुम सब हमारी तरफ़ लौटोगे ।

क़यामत और उसके भयंकर होने का बयान क़ुरआन शरीफ़ में सैकड़ों स्थानों पर किया गया है । कुछ आयतें हम यहां भी नक़ल करते हैं ।

يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ ۚ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ۝ يَوْمَ تَرَوْنَهَا
تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّا أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَ
تَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيدٌ ۝

या अइयु हन्नासुत्तक़ू रब बकुम इन न ज़ल ज़ ल तस्साअति शइ उन अज़ीम । यौ म तरौ नहा तज़हलु कुल्लु मुर ज़िअतिन अम्मा अर ज़अत व त ज़उ कुल्लु ज़ाति हमलिन हमलहा व तरन्ना स सुकारा व मा हुम बिसुकारा व लाकिन न अज़ा बल्लाहि शदीद । (सूरए अल हज्ज रूकू-१) ।

ऐ लोगो अपने परवरदिगार से डरो, क़यामत का भूचाल बड़ी (भयंकर) चीज़ है । जिस दिन तुम उसे देखोगे उस दिन हर दूध पिलाने वाली मां अपने दूध पीते प्यारे बच्चे को भूल जायेगी । और गर्भवालियों के गर्भ गिर जायेंगे, और तुम देखोगे सब लोगों को नशे की सी हालत में और वास्तव में वह नशे में नहीं होंगे, बल्कि अल्लाह का अज़ाब बड़ा सख़्त है (बस उसके डर से लोग बेहोश हो जायेंगे) ।

और सूरए मुज़म्मिल में क़यामत ही के बारे में फ़रमाया गया है कि:-

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ﴿١٤﴾

यउ म तरज़ुफ़ुल अरज़ु वल जिबालु व का नतिल जिबालू कसीबम
महीला ।

जब धरतियों और पहाड़ों पर कपकपाहट होगी, और पहाड़ बहती हुई रेत की तरह हो जायेंगे

और इसी सूरए मुज़म्मिल में क़यामत ही के बारे में कहा गया है :-

يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا

यौ मइं यज अलुल विलदा न शीबा
वह दिन बच्चों को बूढ़ा बना देगा

और सूरए अबस में कहा गया है :-

فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاخَّةُ ﴿٣٣﴾ يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ﴿٣٤﴾ وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ﴿٣٥﴾ وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ ﴿٣٦﴾ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ﴿٣٧﴾ وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾ وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾

फ़इज़ा जा अतिससाख़ ख़ह । यौ म यफ़िर रूल मरउ मिन अख़िहि व उम्मिही व अबीहि व साहिबतिही व बनीहि लिकुल्लिम रिइम मिनहुम यौ मइज़िन शानुइं युग़ नीह । वुजहुइं यउमइज़िन मुसफ़ि रतुन ज़ाहि कतुम मुसतबशिरह । व वजहुइं यउमइज़िन अलैहा ग़ ब रतुन तर हक़ु हा क़ त रह ।(सूरए अबस)

जब आयेगी कानों के परदे फ़ाड़ने वाली वह आवाज़ (यानी जिस वक़्त क़यामत का सूर फूंका जायगा) उस दिन भागेगा आदमी अपने भाई से, और अपनी माता और अपने पिता से, और अपनी पत्नी और अपनी सन्तान से । उनमें से हर एक के लिये उस दिन एक चिन्ता होगी जो उसको दूसरों से बेपरवाह बना देगी (यानी हर शख़्स अपनी फ़िक्र में ऐसा डूबा होगा कि माता पिता, आल औलाद और बहन भाई की बिल्कुल परवाह नहीं करेगा बल्कि उनसे भागेगा) बहुत से चेहरे उस दिन चमकते **होंगे,** हंसते हुये ख़ुशी से खिले हुये, और बहुत से चेहरे उस दिन धूल

में अटे होंगे और उन पर सियाही छाई होगी ।

क़यामत के दिन ख़ुदा के सामने सब इन्सान हाज़िर होंगे कोई भी कहीं छुप नहीं सकेगा । सूरए "अलहाक़्क़ह" में कहा गया है :-

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾

यौ म इज़िन तू रज़ू न ला तख़ फ़ा मिन कुम ख़ाफ़ियह ।

उस दिन तुम सब खुदा के सामने पेश किये जाओगे तुममें से कोई छुपने वाला छुप नहीं सकेगा ।

और सूरए "कहफ़" में कहा गया है :-

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً وَحَشَرْنَاهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ﴿٤٧﴾ وَعُرِضُوا عَلَىٰ رَبِّكَ صَفًّا لَّقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّن نَّجْعَلَ لَكُم مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾ وَوُضِعَ الْكِتَابُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ وَيَقُولُونَ يَا وَيْلَتَنَا مَالِ هَٰذَا الْكِتَابِ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْصَاهَا وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا ﴿٤٩﴾

व यौ म नुसैयिरुल जिबा ल व तरल अर ज़ बारि ज़ तन व हशर नाहुम फ़लम नुग़ादिर मिनहुम अ ह दा, व उरिज़ू अला रब्बि क सफ़्फ़ा । लक़द जीतुमूना कमा ख़ लक़्नाकुम अव्व ल मर रतिन बल ज़अमतुम अल्लन नज अ ल लकुम मौ इदा । व वु ज़िअल किताबु फ़ तरल मुज रिमी न मुशफ़िक़ी न मिम्मा फ़ीहि व यक़ूलू न या वै ल तना मा लिहाज़ल किताबि ला युग़ादिरु सग़ी रतऊं वला कबीरतन इल्ला अहसाहा व व जदू मा अमिलू हाज़िरा । वला यज़लिमु रब्बु क अ ह दा । (सूरए अलकहफ़ रूकू-६)

उस दिन हम पहाड़ों को हटा देंगे (यानी वह अपनी जगह पर स्थिर न रह सकेंगे बल्कि वह गिर जायेंगे और चूर चूर हो जायेंगे) और तुम देखोगे ज़मीन को खुली हुई (यानी न उसमें नगर रहेंगे न बस्तियां, न बाग़ बग़ीचे बल्कि सारी ज़मीन एक खुला मैदान हो जायगी) और फिर हम सब आदमियों को दोबारा ज़िन्दा करेंगे और उनमें से एक को भी ना छोड़ेंगे और वह सब लाईनों में अपने परवरदिगार के सामने लाये

जायेंगे (और उनसे कहा जायेगा, देखो) तुम दोबारा ज़िन्दा होकर हमारे सामने आ गये । जैसा कि हमने पहली बार तुमको पैदा किया था लेकिन तुम यह समझ रहे थे कि हम तुम्हारे लिये कोई निर्धारित समय नहीं लायेंगे । और उनका आमालनामा (जिसमें उनके सब अच्छे बुरे आमाल की तफ़सील होगी) उनके सामने रख दिया जायगा और तुम देखोगे अपराधियों को डरते हुये उस आमालनामे से, कहते होंगे हाय हमारा दुर्भाग्य ! इस आमालनामे की अजीब हालत है, न इसने हमारा कोई छोटा अमल छोड़ा है न बड़ा, सब ही को यह बतलाता है । और जो कुछ उन्होंने दुनिया में किया था उस सबको लिखा पायेंगे और तुम्हारा परवरदिगार किसी पर ज़ुल्म नहीं करेगा ।

क़यामत में आदमी के हाथ पांव और उसके सब अंग भी उसके आमाल (कर्मों) की गवाही देंगे । सूरए ''यासीन'' में कहा गया है :-

اليوم نختم على افواههم وتكلمنا ايديهم وتشهد ارجلهم بما كانوا يكسبون

अल यौ म नख़तिमु अला अफ़वाहिहिम व तुकल्लिमुना ऐदीहिम
व तश हदु अर जुलुहुम बिमा कानू यकसिबून [यासीन रूकू-४]
आज के दिन हम उनके मुंह पर मोहर लगा देंगे, और उनके हाथ पांव बोलेंगे और गवाही देंगे उसकी जो वह किया करते थे ।

सारांश यह है कि क़यामत में जो कुछ होगा क़ुरआन शरीफ़ ने बड़े विस्तार से उस सब को बयान किया है । यानी पहले भूचालों और धमाकों का होना, फिर पूरे संसार का मिट जाना, यहां तक कि पहाड़ों का भी चूर चूर हो जाना, फिर सब मनुष्यों का ज़िन्दा किया जाना, फिर हिसाब के लिये हश्र के मैदान में हाज़िर होना, और वहां हर एक के सामने उसके आमाल नामे का आना और ख़ुद मनुष्य के अंगों तक का उसके ख़िलाफ़ गवाही देना । और फिर सवाब या अज़ाब या माफ़ी का फ़ैसला होना, और उसके बाद लोगों का जन्नत या दोज़ख़ में जाना । यह सब बातें क़ुरआन शरीफ़ की कुछ सूरतों में तो इतनी तफ़सील से बयान की गई हैं कि उनके पढ़ने से क़यामत का मन्ज़र (दृश्य) आंखों के सामने खिंच जाता है, जैसा कि एक हदीस में भी आया है कि :-

''जो व्यक्ति चाहे कि क़यामत का मन्ज़र इस तरह देखे के मानो वह उसकी आंखों के सामने है, तो वह क़ुरआन शरीफ़ की यह सूरतें पढ़े''

''इज़शशमसु कुव्विरत'' ''इज़स्समाउन फ़ त रत'' और
''इज़स्समाउनशक़्क़त''

अब हम बरज़ख़ और क़यामत के बारे में कुछ हदीसें भी लिखते हैं । हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर का बयान है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :-

''तुम में से जब कोई मर जाता है तो उसको जो स्थान क़यामत के बाद जन्नत या दोज़ख़ में (अपने कर्मों के अनुसार) मिलने वाला होता है वह हर दिन सुबह और शाम उसको दिखाया जाता है और उससे कहा जाता है कि यह है तेरा ठिकाना जहां तुझे पहुंचना है'' ।

एक और हदीस में है कि :-

''रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार वाज़ (व्याख्यान) में क़ब्र (यानी आलम-ए-बरज़ख़) की जांच और वहां के हालात को बयान किया तो सब मुसलमान जो उपस्थित थे चीख़ उठे'' ।

बहुत सी हदीसों में क़ब्र के हालात और सवाल या जबाब फिर वहां के अज़ाब का तफ़सीली ज़िक्र भी आया है । यहां हम जगह की कमी के कारण केवल यही दो हदीसें दर्ज करते हैं । अब कुछ हदीसें क़यामत के बारे में और सुन लीजिये ।

एक हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़यामत का ज़िक्र करते हुये फ़रमाया :-

''जब अल्लाह के हुक्म से क़यामत का पहला सूर फूंका जायेगा तो सब लोग बेहोश होकर गिर जायेंगे, फिर जब दूसरी बार फूंका जायेगा तो सब ज़िन्दा होकर खड़े हो जायेंगे, फिर हुक्म होगा कि तुम सब अपने रब के सामने हाज़िर होने के लिये चलो । और फिर फ़रिश्तों से कहा जायगा कि इनको ठहराकर खड़ा करो, यहां उनसे उनकी ज़िन्दगी के बारे में पूछ होगी'' ।

एक और हदीस में है कि :-

''एक सहाबी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा ऐ अल्लाह के रसूल । अल्लाह तआला अपनी मख़लूक़ (सृष्टि) को दोबारा कैसे ज़िन्दा करेगा और क्या इस दुनिया में इसकी कोई निशानी और मिसाल है । आप (स०) ने फ़रमाया, क्या कभी ऐसा नहीं हुआ कि तुम अपने देश की किसी ज़मीन पर ऐसी हालत में गुज़रे हो कि वह सूखी, हरियाली से ख़ाली हो और फिर दोबारा ऐसी हालत में उस पर तुम्हारा गुज़र हुआ हो कि वह हरी भरी लहलहा रही हो (सहाबी कहते हैं कि) मैंने अर्ज़ किया कि हां ऐसा हुआ है । आपने फ़रमाया कि बस दोबारा ज़िन्दा करने की यही निशानी और मिसाल है । ऐसे ही अल्लाह तआला मुर्दों

को दोबारा ज़िन्दा कर देगा'' ।

एक और हदीस में है कि :- रसूलुलाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ुरआन शरीफ़ की यह आयत पढ़ी

''यौ मइज़िन तुहदिदसु अख़बा रहा''

(क़यामत के दिन ज़मीन अपनी सब ख़बरें बयान करेगी)

फिर आपने फ़रमाया, तुम समझे इसका क्या मतलब है ?

सहाबा ने कहा, अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानने वाले हैं । आप (स०) ने फ़रमाया कि इसका मतलब है कि क़यामत के दिन ज़मीन अल्लाह के हर बन्दे और बन्दी पर गवाही देगी उन कर्मों की जो उन्होंने ज़मीन पर किये होंगे, यानी अल्लाह के हुक्म से ज़मीन उस दिन बोलेगी और बतलायेगी कि फ़लां बन्दे ने या फ़लां बन्दी ने फ़लां दिन मेरे ऊपर यह अमल किया था'' ।

एक और हदीस में है कि :-

''आपने क़यामत का ज़िक्र करते हुये फ़रमाया कि, अल्लाह तआला क़यामत के दिन बन्दे से फ़रमायगा कि आज तू ख़ुद ही अपने ऊपर गवाह है, और मेरे लिखने वाले फ़रिश्ते भी मौजूद हैं, और बस यही गवाहियां काफ़ी हैं फिर ऐसा होगा कि अल्लाह के हुक्म से बन्दे के मुख पर मोहर लग जायेगी, वह ज़बान से कुछ न बोल सकेगा । और उसके दूसरे अंग (हाथ पांव आदि) को हुक्म होगा कि तुम बोलो, फिर वह उसके कर्मों का सारा हाल सुनायेंगे'' ।

एक और हदीस का सारांश है कि :-

''एक व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उसने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल, मेरे पास कुछ ग़ुलाम हैं जो कभी कभी शरारतें करते हैं, कभी मुझसे झूठ बोलते हैं, कभी बेईमानी करते हैं, और मैं इन बातों पर कभी उनपर ग़ुस्सा होता हूं, बुरा भला कहता हूं और कभी मार भी देता हूं तो क़यामत में इसका क्या अंजाम (परिणाम) होगा ? आपने फ़रमाया अल्लाह तआला क़यामत में ठीक ठीक इन्साफ़ करेगा, अगर तुम्हारी सज़ा उनकी ग़लतियों और अपराधों के अनुसार होगी तो न तुम्हें कुछ मिलेगा और न देना पड़ेगा । और अगर तुम्हारी सज़ा उनकी ग़लतियों से कम होगी तो तुम्हारा बाक़ी और ज़्यादा हक़ तुमको दिलाया जायगा, और अगर तुम्हारी सज़ा उनकी ग़लतियों से ज़्यादा होगी तो तुम से उसका बदला तुम्हारे उन

ग़ुलामों को दिलाया जायगा । हदीस में है कि यह सुनकर वह पूछने वाला आदमी रोने और चिल्लाने लगा और उसने अर्ज़ किया ''ऐ अल्लाह के रसूल फिर तो मेरे लिये यही अच्छा है कि मैं उनको अलग कर दूं । मैं आपको गवाह बनाता हूं कि मैंने उन सबको आज़ाद कर दिया'' ।

इसी हदीस में यह भी है कि :-

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस आदमी को क़ुरआन शरीफ़ की यह आयत सुनाई :-

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ۚ وَاِنْ كَانَ
مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ۚ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ۝

व न ज़उल मवाज़ी नलक़िस त लियौमिल क़ियामति फ़ला
तुज़ लमु नफ़सुन शैऔं वइन का न मिसक़ा ल हब्बतिम मिन
ख़र दलिन अतैना बिहा व कफ़ा बिना हासिबीन ।

इस आयत का मतलब यह है कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :-

''हम क़यामत के दिन इन्साफ़ का तराज़ू लटकायेंगे, और किसी के साथ वहां कोई नाइन्साफ़ी न होगी, और अगर किसी का कोई अमल या हक़ राई के दाने के बराबर भी होगा तो हम उसको हाज़िर करेंगे और हम हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं'' ।

अल्लाह तआला हमको तौफ़ीक़ दे कि मरने के बाद और क़यामत के बारे में क़ुरआन शरीफ़ ने और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो बातें हमको बतलाई हैं हम उनको सदा ध्यान में रखें और उनसे बेपरवाह और ग़ाफ़िल न हों ।

सोलहवां सबक़

जन्नत और दोज़ख़

पिछले सबक़ में बताया जा चुका है कि क़यामत का दिन फ़ैसले का दिन होगा । फिर जो ईमान वाले होंगे और दुनिया में जिनके आमाल भी बहुत अच्छे रहे होंगे, और किसी सज़ा व अज़ाब के अधिकारी न होंगे वह तो क़यामत के दिन अल्लाह के अर्श की छाया में और बड़े आराम से रहेंगे और बहुत शीघ्र जन्नत में भेज दिये जायेंगे, और जो ऐसे होंगे कि कुछ सज़ा पाकर बख़्शा दिये जायें वह क़यामत और हश्र के दिन के कुछ कष्ट उठाकर ज़्यादा से ज़्यादा कुछ अवधि तक दोज़ख़ में अपने गुनाहों की सज़ा पाकर बख़्शा दिये जायेंगे । बहर हाल जिनमें कण बराबर भी ईमान होगा वह कभी न कभी जन्नत में पहुंच ही जायेंगे, और दोज़ख़ में हमेशा हमेशा के लिये सिर्फ़ वही रह जायेंगे जो दुनिया से कुफ़्र और शिर्क का गुनाह लाद कर ले गये होंगे । सारांश यह है कि जन्नत ईमान, नेक अमल और अल्लाह से वफ़ादारी का बदला है और दोज़ख़ कुफ़्र, शिर्क और अल्लाह से ग़द्दारी और उसके हुक्म न मानने की सज़ा है । जन्नत की नेमतों,सुखों और दोज़ख़ के दुखों और अज़ाबों का बयान क़ुरआन शरीफ़ और हदीसों में बड़ी तफ़सील से किया गया है । कुछ आयतें और हदीसें हम यहां भी लिखते हैं ।

क़ुरआन शरीफ़ में है :-

لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
وَأَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۝

लिल्लज़ी नत्तक़ौ इन द रब्बिहिम जन्नातुन तजरी मिन तहतिहल अनहारू खालिदी न फ़ीहा व अज़वाजुम मुतह ह र तूं वरिज वानुममिनल्लाहि वल्लाहु बसीरुम बिलइबाद । (सूरए आले इमरान रूकू-२)

परहेज़गारों (संयमी पुरूषों) के लिये उनके रब के पास वह जन्नतें (अर्थात ऐसी वाटिकायें) हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं वह उन्हीं में रहेंगे और पाक सुथरी स्त्रियां हैं और अल्लाह की रज़ामन्दी है और अल्लाह अपने

सब बन्दों को ख़ूब देखने वाला है (किसी का हाल उससे छुपा नहीं है) ।

क़ुरआन शरीफ़ में एक जगह इरशाद है कि :-

إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ فَاكِهُونَ ۝ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلَالٍ عَلَى
الْأَرَائِكِ مُتَّكِئُونَ ۝ لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُمْ مَا يَدَّعُونَ ۝ سَلَامٌ قَوْلًا
مِنْ رَبٍّ رَحِيمٍ

इन न अस्हाबल जन्नतिल यौ म फ़ी शुग़ुलिन फ़ाकिहून । हुम वअज़वा जुहुम फ़ी ज़िलालिन अलल अराइकि मुत्तकिऊन । लहुम फ़ीहा फ़ाकि हतूं व लहुम मा यद दऊन । सलामुन क़ौलम मिर रब्बिर रहीम । (सूरए यासीन रूकू-४)

जन्नत वाले उस दिन अपने अपने धंधों में ख़ुश होंगे, वह और उनकी बीवियां छाया में मसहरियों पर तकिया लगाये हुये होंगे । उनके लिये वहां तरह तरह के मेवे होंगे और जो कुछ मांगेंगे उनको मिलेगा, रहमत वाले परवरदिगार की ओर से उनको सलाम पहुंचाया जायेगा ।

और सूरए 'ज़ुख़रूफ़' में इरशाद है :-

وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ وَأَنْتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

व फ़ीहा मा तश तहीहिल अनफ़ुसु व तलज़्ज़ुल आयुनु व अन्तुम फ़ीहा ख़ालिदून । (सूरए ज़ुख़रूफ़ रूकू-१३)

और जन्नत में वह सब कुछ है जिसका लागों के जी चाहते हैं और आंखें जिससे मज़ा लेती हैं और (ऐ मेरे अच्छे बन्दो) तुम हमेशा इसी जन्नत में रहोगे ।

और सूरए ''मुहम्मद''में जन्नत का हाल इस तरह बयान किया गया है :-

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا أَنْهَارٌ مِنْ مَاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِنْ لَبَنٍ
لَمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِنْ خَمْرٍ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ ۝ وَأَنْهَارٌ مِنْ عَسَلٍ مُصَفًّى
وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ

म सलुल जन्नतिल्लती वुइदल मुत्तक़ू न फ़ीहा अन्हारूम मिम्माइन

ग़ैरि आसिनिवं वअन्हारूम मिल ल ब निल लम य त ग़य्यर तामुह व अनहारूम मिन ख़ मरिल लज़ ज़तिल लिशशरिबीन । **व अनहारूम** मिन अ स लिम मुसफ़ फ़ा व लहुम फ़ीहा मिन कुल्लिस स म राति व मग़फ़ि रतुम मिर रब्बिहिम । [सूरए ''मुहम्मद'' रूकू-२]

वह जन्नत जिसका परहेज़गारों से वादा किया गया है उसका हाल यह है कि उसमें बहुत सी नहरें हैं पानी की जिसमें ज़रा भी परिवर्तन नहीं होगा, और बहुत सी नहरें हैं दूध की जिसका मज़ा ज़रा भी बदला हुआ न होगा, और बहुत सी नहरें हैं पाक और हलाल शराब की जो बड़ी मजेदार हैं पीने वालों के लिये, और बहुत सी नहरें हैं साफ़ किये हुये शहद की, और उनके वास्ते उस जन्नत में हर तरह के फल हैं, और बख़शिश है उनके परवरदिगार की ।

और सूरए हज में जन्नत की एक ख़ूबी यह बयान की गई है :-

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ

ला यमस्सुहुम फ़ीहा न सबुन

जन्नत वालों को वहां किसी तरह की कोई तकलीफ़ नहीं छू सकेगी । यानी जन्नत में सिर्फ़ आराम ही आराम और चैन ही चैन होगा । किसी तरह की कोई तकलीफ़ और ग़म की कोई बात वहां नहीं होगी ।

यह तो जन्नत और जन्नतियों का मुख़तसर बयान हुआ । अब दोज़ख़ और दोज़ख़ियों का भी कुछ हाल क़ुरआन मजीद ही की ज़बान से सुन लीजिये ।

सूरए मोमिनून में कहा गया है कि :-

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ﴿١٠٣﴾
تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ ﴿١٠٤﴾

वमन ख़फ़ फ़त मवाज़ीनुहू फ़ उलाइकललज़ी न ख़सिरू अनफ़ुसहुम फ़ी जहन्न म ख़ालिदून । तल फ़हु वुजू हहुमुन्नारु वहुम फ़ीहा कालिहून (सूरए मोमिनून रूकू-६)

और जिसका पल्ला हलका होगा सो यह वह लोग होंगे जिन्होंने (कुफ़्र और शिर्क या बुरे काम अपना कर) ख़ुद अपना घाटा किया तो यह

दोज़ख़ में रहेंगे, उनके चेहरों को आग झुलसती होगी और उनके मुंह उसमें बिगड़े हुये होंगे ।

और सूरए ''कहफ़''में फ़रमाया गया है:-

إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۚ وَإِن يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ
كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ

इन्ना आतदना लिज़्ज़ालिमी न नारन अहा त बिहिम सुरादिक़ुहा वईं यस तग़ीसू युग़ासू बिमाइन कल मुहलि यशविल वुजूह । (सूरए 'कहफ़''रूकू -४)

हमने ज़ालिमों[1] के लिये दोज़ख़ तैयार की है उसकी क़नातें (आग की) उन्हें घेरे हुये हैं, और जब वह प्यास से चिल्लायेंगे तो उसके जवाब में उनको पानी दिया जायगा तेल की गाद (तलछट) जैसा, और इतना जलता और खौलता हुआ कि भून डाले मुंह को ।

और सूरए हज में कहा गया है कि :-

فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّن نَّارٍ يُصَبُّ مِن فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ
يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ ﴿٢٠﴾ وَلَهُم مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيدٍ ﴿٢١﴾ كُلَّمَا
أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٢٢﴾

फ़ल्लज़ी न क फ़रू क़ुत्तिअत लहुम सियाबुम मिन नारीं युसब्बु मिन फ़ौक़ि रुऊसिहिमुल हमीम । युस हरू बिही माफ़ी बुतूनिहिम वल जुलूद । व लहुम मक़ामिउ मिन हदीद । कुल्लमा अराद् अईं यख़रुजू मिनहा मिन ग़म्मिन उई दू फ़ीहा व ज़ूक़ू अज़ाबल हरीक़ । (सूरए ''हज''रूकू-२)

जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनके लिये आग के कपड़े कतरे जायेंगे, और उनके सिर के ऊपर से बहुत गर्म पानी डाला जायेगा, उससे उनकी खालें और पेट के अन्दर की भी सब चीज़ें गल जायेंगी, और उनके लिये लोहे के गुर्ज (गदा) होंगे । वहां की तकलीफ़ और सख़्ती की वजह से वह जब उससे निकलने की इच्छा करेंगे तो फिर उसमें ढकेल दिये

1. क़ुरआन की घोषणा में सबसे बड़ा ज़ुल्म कुफ़्र और शिर्क है, और असली ज़ालिम कुफ़्र और शिर्क करने वाले हैं ।

जायेंगे, और कहा जायेगा कि यहीं जलने का अज़ाब चखते रहो ।

और सूरए 'दुख़ान ''में है :-

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ۝ طَعَامُ الْأَثِيمِ ۝ كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ۝ كَغَلْيِ الْحَمِيمِ ۝ خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۝ ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ۝

इन न श ज र तज़्ज़क़्क़ूमि तआमुल असीम । कल मुहलि यग़ली फ़िल बुतुन । क ग़लयिल हमीम । ख़ुज़ूहु फ़ातिलूहु इला सवाइल जहीम । सुम म सुब्बू फ़ौ क़ रासिही मिन अज़ाबिल हमीम ।(सूरए ''अद्दुख़ान''रूकू- ३)

बेशक ज़क़्क़ूम (थूहड़) का पेड़ बड़े काफ़िरों और मुशरिकों का भोजन होगा जो अपनी बुरी सूरत और घिनौनेपन में तेल की तलछट की तरह होगा, और वह पेटों में ऐसा खौलेगा जैसे तेज़ गर्म पानी खौलता है । और फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि इसको पकड़ो, फिर घसीटते हुये दोज़ख़ के बीचो बीच तक ले जाओ, फिर उसके सिर पर बहुत तकलीफ़ देने वाला जलता हुआ पानी डालो ।

और सूरए ''इब्राहीम'' में दोज़ख़ी आदमी के बारे में कहा गया है कि :-

وَيُسْقَىٰ مِن مَّاءٍ صَدِيدٍ ۝ يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِن كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۖ وَمِن وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ۝

वयुसक़ा मिम्मा इन सदीद । य त जर रउहू वला यकादु युसीग़ुहू वयाती हिल मौतु मिन कुल्लि मकानिवं वमा हु व बिमय्यित । वमिवं व राइही अज़ाबुन ग़लीज़ । (सूरए ''इब्राहीम'' रूकू-३)

उसको ऐसा पानी पीने को दिया जायगा जो कि पीप ख़ून होगा, जिसको वह घूंट घूंट करके पियेगा और गले से उसको वह आसानी से नहीं उतार सकेगा और हर तरफ़ से उसपर मौत की पहुंच होगी और वह मरेगा भी नहीं और उसको कड़े अज़ाब का सामना होगा ।

और सूरए निसा में हैं :-

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُودُهُم

بَدَّلْنَاهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ

इन्नल लज़ी न क फ़रू बि आयातिना सौ फ़ नुसलीहिम नारा । कुल्लमा नज़िजत जुलुदुहुम बद्दलनाहुम जुलूदन ग़ै रहा लि यज़ूक़ुल अज़ाब । (सूरए निसा रूकू-८)

जो लोग हमारी आयतों और हुक्मों का इन्कार करते हैं हम उनको ज़रूर दोज़ख़ की आग में डालेंगे, जब उनकी खालें जल भुन जायेंगी और पक जायेंगी तो हम उनकी जगह और खालें बलद देंगे ताकि वह अज़ाब का पूरी तरह मज़ा चखें ।

क़ुरआन मजीद की सैकड़ों आयतों में दोज़ख़ के दर्दनाक अज़ाब का इससे ज़्यादा तफ़सीली बयान किया गया है लेकिन यहां हम इन्हीं थोड़ी सी आयतों पर बस करते हैं ।

अब जन्नत और दोज़ख़ के बारे में कुछ हदीसें भी सुन लीजिये । एक हदीस में आया है कि हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :-

''मैंने अपने नेक बन्दों के लिये (जन्नत में) ऐसी ऐसी चीज़ें तैयार की हैं जिनको न किसी आंख ने देखा है और न किसी कान ने सुना है और न किसी आदमी के दिल में उनका विचार गुज़रा है'' ।

इसमें ज़रा भी शक नहीं कि जन्नतियों को जो अच्छे और मज़ेदार भोजन मिलेंगे, जो फल दिये जायेंगे, और जो बहुत सुथरी अच्छी लगने वाली और मज़ेदार चीज़ें मिलेंगी, और पहनने के लिये जो क़ीमती व सुन्दर कपड़े दिये जायेंगे, और जो शानदार ख़ूबसूरत मकान और दिल को भाने वाले बग़ीचे प्रदान किये जायेंगे और जन्नत की जो ख़ूबसूरत हूरें दी जायेंगी और इन सबके अलावा भी स्वाद व आराम तथा आनन्द और ख़ुशी के जो सामान अता (प्रदान) किये जायेंगे, जैसा कि इस हदीस में बयान किया गया है, वास्तव में केवल अल्लाह ही उसको जानता है, अलबत्ता हम इन सब पर ईमान व यक़ीन रखते हैं ।

एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया :-

''जब जन्नती जन्नत में पहुंच जायेंगे तो अल्लाह की तरफ़ से एक पुकारने वाला पुकारेगा कि अब तुम हमेशा तन्दुरूस्त (स्वस्थ्य) रहो, कोई बीमारी तुम्हारे पास नहीं आयेगी । अब तुम हमेशा ज़िन्दा रहो तुम्हारे लिये अब मौत नहीं । तुम हमेशा जवान रहो, तुम अब बूढ़े होने वाले नहीं । अब तुम हमेशा सुख में रहो । कोई रंज व ग़म अब तुम्हारे पास आने वाला नहीं'' ।

सबसे बड़ी नेमत जो जन्नत में पहुंच जाने के बाद जन्नतियों को मिलेगी वह अल्लाह तआला का दीदार (दर्शन) होगा ।

हदीस शरीफ़ में है कि हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया :-

"जब जन्नती लोग जन्नत में पहुंच जायेंगे तो अल्लाह तआला उनसे फ़रमाएगा क्या तुम चाहते हो कि जो नेमतें तुमको दी गई हैं उनसे ज़्यादा कोई और चीज़ भी मैं तुमको प्रदान करूं । वह निवेदन करेंगे कि ऐ मालिक ! आपने हमारे चेहरे रौशन किये । हमको दोज़ख़ से निजात दी और जन्नत दी (जिसमें सब कुछ है अब हम और क्या मांगें) हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि फिर पर्दा उठा दिया जायगा और उस वक़्त वह अल्लाह को बे पर्दा देखेंगे । और फिर जन्नत और उसकी सारी नेमतें जो अब तक उनको मिल चुकी थीं, उन सबसे ज़्यादा प्यारी नेमत उनके लिये अल्लाह के दीदार (दर्शन) की नेमत होगी" ।

अल्लाह तआला हमको भी यह सब नेमतें अपनी कृपा और करम व मेहरबानी से प्रदान करे । एक हदीस में है कि हुज़ूर (स०)ने जन्नत के सुख व आनन्द और दोज़ख़ के दुख व अज़ाब का ज़िक्र करते हुये फ़रमाया :-

"क़यामत के दिन एक ऐसे आदमी को लाया जायगा जो दुनिया में सबसे अधिक सुख और आनन्द और ठाट बाट से रहा होगा लेकिन अपने बुरे आमाल की वजह से दोज़ख का मुस्तहिक़ (अधिकारी) होगा, तो उसको दोज़ख़ की आग में एक बार डाल कर तुरन्त निकाल लिया जायगा, फिर उससे पूछा जायगा कि कभी तू सुख और आनन्द में भी रहा था । वह कहेगा कि ऐ परवरदिगार तेरी क़सम मैंने कभी कोई सुख नहीं देखा ।और एक दूसरे आदमी को लाया जायेगा जो दुनिया में सबसे ज़्यादा दुखों और तकलीफ़ों में रहा होगा, मगर वह जन्नत का मुस्तहिक़ होगा । फिर उसी तरह उसको भी जन्नत की ज़रा सी हवा खिलाकर तुरन्त निकाल लिया जायगा और पूछा जायगा कि तू कभी किसी दुख और तकलीफ़ में रहा था वह कहेगा नहीं ऐ मेरे परवरदिगार ! तेरी क़सम मुझे कभी कोई दुख नहीं पहुंचा और मैंने कभी कोई तकलीफ़ नहीं झेली" ।

वास्तव में जन्नत में अल्लाह तआला ने ऐसे ही सुख व आराम का प्रबंध किया है कि दुनिया में जीवन भर दुख और तकलीफ़ों में रहने वाला भी एक मिनट के लिये जन्नत में पहुंचने के बाद अपनी ज़िन्दगी भर की तकलीफ़ों को भूल जायगा, और दोज़ख़ ऐसे ही अज़ाब का घर है कि दुनिया में सारी उम्र सुख और आनन्द से रहने वाला आदमी भी एक मिनट के लिये दोज़ख़ में रहकर बल्कि सिर्फ़ उसकी गर्म बदबूदार लपट पाकर ही उसे ऐसा लगेगा कि जैसे उसने कभी सुख और आनन्द का मुंह नहीं देखा ।

दोज़ख़ के अज़ाब की सख़्ती का अन्दाज़ा सिर्फ़ इस एक हदीस से किया जा सकता है । हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया :-

"दोज़ख़ में सबसे कम अज़ाब जिस आदमी को होगा वह यह होगा कि उसके पांव की जूतियां आग की होंगी, जिनके प्रभाव से उसका दिमाग़ इस तरह खौलेगा जिस तरह चूल्हे पर रखी हांडी पका करती है" ।

दोज़ख़ियों को खाने पीने के लिये जो कुछ दिया जायगा उसका थोड़ा सा बयान अभी क़ुरआन शरीफ़ की आयतों में गुज़र चुका है । इस सिलसिले में दो हदीसें भी सुन लीजिये ।

एक हदीस में है कि हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया :-

"दोज़ख़ियों को बदबूदार पीप (ग़स्साक़) पीनी पड़ेगी, यदि उसका एक डोल भरकर दुनिया में बहा दिया जाये तो सारी दुनिया उसकी बदबूसे भर जाये" ।

एक और हदीस में है कि हुज़ूर (स०) ने उस ज़क़्क़ूम के बारे में बताते हुये (जो दोज़ख़ियों को खाना होगा) फ़रमाया :-

"अगर ज़क़्क़ूम की एक बूंद इस दुनिया में टपक जाये तो सारी दुनिया में जो खाने पीने की चीज़ें हैं सब ख़ुराब हो जायें । फिर सोचो कि उस पर क्या गुज़रेगी जिस को यही ज़क़्क़ूम खाना पड़ेगा" ।

ऐ अल्लाह तू हमको और सब ईमान वालों को दोज़ख़ के हर छोटे बड़े अज़ाब से अपनी पनाह (शरण) में रखना ।

भाईयो ! बरज़ख़, क़यामत, दोज़ख और जन्नत के बारे में अल्लाह तआला की किताब क़ुरआन शरीफ़ में और उसके रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो कुछ हमको बतलाया है (जिसमें से कुछ यहां इन दो पाठों मे हमने बयान किया है) इसमें ज़रा भी शक नहीं है । क़सम है अल्लाह पाक की यह सब बातें बिल्कुल इसी तरह हैं और मरने के बाद हम इन सब चीज़ों को अपनी आंखों से देख लेंगे ।

क़ुरआन शरीफ़ और हदीस में क़यामत और जन्नत व दोज़ख़ का ज़िक्र इतनी तफ़सील से और सैकड़ों बार इसीलिये किया गया है कि हम दोज़ख़ के दुखों और अज़ाब से बचने की और जन्नत हासिल करने की कोशिश करते रहें ।

भाईयों ! यह दुनिया सिर्फ़ कुछ दिनों की है, इसमें शक नहीं कि एक न एक दिन हम सबको मरना है, और क़यामत बिला शुबह आने वाली है और हम सब को अपने आमाल (कर्मों) का हिसाब देने के लिये अल्लाह के सामने यक़ीनन

खड़ा होना है और फिर इसके बाद हमेशा के लिये हमारा ठिकाना जन्नत या दोज़ख़ होगा ।

अभी वक़्त है कि पिछले गुनाहों से तौबा करके और आइन्दा के लिये अपनी ज़िन्दगी को सुधार कर दोज़ख़ से बचने और जन्नत हासिल करने की फ़िक्र और कोशिश कर लें ।

अगर ख़ुदा न करे ज़िन्दगी यूंही लापरवाही और ग़फ़लत में गुज़र गई तो मरने के बाद पछताने और दोज़ख़ के अज़ाब के अलावा और कुछ हासिल न हो सकेगा ।

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْأَلُكَ الْجَنَّةَ وَمَا قَرَّبَ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ وَّعَمَلٍ

وَنَعُوْذُبِكَ مِنَ النَّارِ وَمَا قَرَّبَ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ وَّعَمَلٍ

अल्लाहुम म इन्ना नसअलुकल नन्न त वमा क़र्र ब इलैहा मिन क़ौलन व अ म लिन, व नऊज़ु बि क मिनन्नारी वमा क़र्र ब इलैहा मिन क़ौलिन व अ म लिन ।

ऐ अल्लाह हम तुझ से सवाल करते हैं जन्नत का और ऐसी बात और ऐसे काम का जो उस से क़रीब कर दे । और पनाह चाहते हैं दोज़ख़ से और ऐसी बात और ऐसे काम से जो उससे क़रीब कर दे ।

सतरहवां सबक़

ज़िकरूल्लाह

चूंकि इस्लाम की तालीम और उसकी मांग यह है (बल्कि कहना चाहिये कि इस्लाम वास्तव में नाम ही इसका है) कि अल्लाह के बन्दे अपनी पूरी ज़िन्दगी अल्लाह के हुक्मों के अनुसार गुज़ारें और हर हाल और हर मामले में अल्लाह के कहने पर चलें, और चूंकि यह बात पूरी तरह जबही प्राप्त हो सकती है जब कि बन्दे को हर वक़्त अल्लाह का ध्यान रहे उसके दिल में अल्लाह की बड़ाई और उसकी मोहब्बत पूरी तरह बैठ जाये, इसलिये इस्लाम की ख़ास तालीम यह है कि बन्दे अधिकता के साथ अल्लाह का ज़िक्र[1] यानी उसके नाम का जाप किया करें और उसकी तसबीह (यानी पाकी व बड़ाई और तारीफ़ के बयान)हम्द व सना [गुण बखानना] से अपनी ज़बानें तर रखें । दिल में अल्लाह की मोहब्बत और उसकी बड़ाई पैदा करने का यह एक ख़ास ज़रिया और परखा परखाया नुसख़ा है । यह एक प्राकृतिक बात है कि आदमी जिस व्यक्ति की बड़ाई के ध्यान में डूबा रहे और जिसके हुस्न व जमाल (सौंदर्य) के गीत गाता रहेगा तो दिल में उसकी बड़ाई और उसका प्रेम ज़रूर पैदा हो जायगा और लगातार बढ़ता रहेगा ।

सारांश यह है कि यह एक हक़ीक़त है कि ज़िक्र की अधिकता इश्क़ व मोहब्बत के चिराग़ जलाती भी है और उसकी लौ को भड़काती भी है और यह भी एक हक़ीक़त है कि पूर्ण आज्ञा पालन का वह जीवन जिसका नाम इस्लाम है वह सिर्फ़ मुहब्बत ही से पैदा हो सकता है, सिर्फ़ मोहब्बत ही वह चीज़ है जो सच्चे प्रेमी को महबूब [प्रिय] का पूरी तरह फ़रमांबरदार (आज्ञाकारी) और उसकी हर बात मानने वाला बना देती है ।

प्रेम क्या है दासतां है इश्क़ की

---

१. ध्यान रहे अल्लाह का ज़िक्र ख़ुद भी अल्लाह से क़रीब करने का ख़ास ज़रिया है ।

इसलिये क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह के ज़िक्र की अधिकता पर ज़ोर दिया गया है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी इसकी बड़ी फ़ज़ीलतें बयान की हैं। जैसा कि सूरए ''अहज़ाब''में कहा गया है:-

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ۝ وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝

या अय्यु हल्लज़ी न आ मनुज़्कुरूल्ला ह ज़िकरन कसिरौं व सब्बिहुहु बुक रतौं व असीला। (सूरए अ 'हज़ाब'' रूकू-६)

ऐ ईमान वालो अल्लाह का ज़िक्र करो बहुत, और उसकी पाकी बयान करो सुबह और शाम।

और सूरए 'जुमअह''में है:-

وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

वज़्‌ कुरूल्ला ह कसीरल लअल्ल कुम तुफ़लिहून

और ज़िक्र करो अल्लाह का बहुत, ताकि तुम सफ़ल हो जाओ

ख़ास तौर पर दो चीज़ें ऐसी हैं जिनमें मशग़ूल (लीन) होकर या उनके नशे में मस्त होकर आदमी अल्लाह को भूल जाता है। एक माल दौलत, दूसरे बीवी बच्चे। इसीलिये इन दोनों चीज़ों का नाम लेकर साफ़ साफ़ मुसलमानों को ख़बरदार किया गया है।

सूरए ''मुनाफ़िक़ून''में है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝

या अय्युहल्लज़ी न आ मनू लातुलहिकुम अमवालुकुम वला औलादुकुम अन ज़िक रिल्लाहि व मैंय यफ़अल ज़ालि क फ़उलाइ क हुमुल ख़ासिरून।

ऐ ईमान वालो तुमको तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न कर दे और जो ऐसा करेंगे वही टोटे और घाटे में रहने वाले होंगे।

इस्लाम में पांच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ है। इसमें शक नहीं कि वह अल्लाह का ज़िक्र है बल्कि ऊंचे दर्जे का ज़िक्र है, लेकिन किसी ईमान वाले के लिये यह सही नहीं है कि वह केवल नमाज़ के ज़िक्र को

ही काफ़ी समझे और नमाज़ के बाहर अल्लाह के ज़िक्र और उसकी याद से बिल्कुल ग़ाफ़िल[1] रहे, बल्कि इस्लाम का साफ़ हुक्म यह है कि नमाज़ के अलावा भी हम जिस हाल में हों अल्लाह से ग़ाफ़िल न रहें। सूरए ''निसा''में है :

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلَاةَ فَاذْكُرُوا اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ

फ़इज़ा क़ज़ै तुमुस्सला त फ़ज़्‌ कुरूल ला ह क़ियामौं व क़ुउदौं व अला जुनूबिकुम।

और जब तुम पढ़ चुको नमाज़ तो याद करो अल्लाह को खड़े और बैठे और लेटे।

यहां तक कि जो लोग ख़ुदा की राह में जिहाद के लिये निकले हुये हों उन्हें भी ताकीद के साथ हुक्म दिया गया है कि वह अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न हों बल्कि अधिकता के साथ उसका ज़िक्र करते रहें।

सूरए ''अनफ़ाल'' में इरशाद है:-

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

या अयुहल्लज़ी न आ मनू इज़ा लक़ी तुम फ़िअतन फ़स बुतू वज़्‌ कुरूल्ला ह कसीरल लअल्ल कुम तुफ़लिहून।

ऐ ईमान वालो ! जब तुम्हारा सामना हो किसी सेना से तो मज़बूती से जम जाओ और अल्लाह को बहुत याद करो ताकि तुम कामयाब हो जाओ''।

इस आयत से भी मालुम हुआ और फिर ऊपर सूरए ''जुमअह'' की जो आयत लिखी जा चुकी है यानी

وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

वज़्‌ कुरूल्ला ह कसीरल लअल्लकुम तुफ़लिहून

---

1. इसका मतलब यह नहीं है कि जिस प्रकार अपने निश्चित समय पर नमाज़ फ़र्ज़ है उसी प्रकार अल्लाह की याद में रहना भी फ़र्ज़ है, बल्कि मक़सद केवल यह है कि मोमिन को अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न होना चाहिये।

उससे भी यह मालुम हो चुका है कि ईमान वालों की सफ़लता में अल्लाह के ज़िक्र और उसकी याद की अधिकता को ख़ास दख़ल है, और सूरए "मुनाफ़िकून" की जो आयत ऊपर नक़्ल की गयी उससे यह भी पता चलता है कि अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल रहने वाले असफ़ल और घाटे में रह जाने वाले हैं। और सूरए "रअद" की एक आयत में अल्लाह के ज़िक्र का एक यह ख़ास असर बयान किया गया है कि इससे सुख व शान्ति और सुकून हासिल होता है। कहा गया है कि:-

أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ

अला बिज़िक रिल्लाहि तत मइन्नुल क़ुलूब

याद रखो, अल्लाह के ज़िक्र से चैन पाते हैं दिल (यानी ईमान वाली आत्मायें)

क़ुरआन मजीद की इन आयतों के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कुछ हदीसें भी सुन लीजिये।

एक हदीस में है:-

"रसूलुल्लाह (स०) से पूछा गया कि क़यामत के दिन कौन लोग अल्लाह के बन्दों में से ज़्यादा ऊंचे दर्जे पर होंगे? आपने फ़रमाया अल्लाह का ज़िक्र करने वाले, चाहे वह मर्द हों या औरतें"।

सही मुस्लिम और सही बुख़ारी में हज़रत अबू मूसा (अल्लाह उनसे राज़ी हो) का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:-

"अल्लाह को याद करने वाले और याद न करने वाले की मिसाल ज़िन्दा और मुर्दा जैसी है (अर्थात याद करने वाला ज़िन्दा है और याद न करने वाला मुर्दा बल्कि मुरदार है")

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर की रिवायत है कि हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया:-

"हर चीज़ के लिये कोई साफ़ करने वाला होता है, और दिलों को साफ़ करने वाला अल्लाह का ज़िक्र है, और अल्लाह के अज़ाब से बचाने वाली कोई चीज़ भी अल्लाह के ज़िक्र से ज़्यादा असर वाली नहीं।

ज़िक्र की हक़ीक़त:-

यहां यह बात अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि ज़िक्र की असल हक़ीक़त यह है कि आदमी अल्लाह से ग़ाफ़िल न हो, वह जिस हाल और जिस धंधे में हो उसको अल्लाह का और उसके हुक्मों का ध्यान हो। इसके लिये अगरचे यह ज़रूरी नहीं है कि हर वक़्त और हर हाल में वह ज़बान से भी ज़िक्र करे। लेकिन यह देखा गया है कि अल्लाह के जिन बन्दों का यह हाल होता है उनकी ज़बानें भी अल्लाह के ज़िक्र से तर रहती हैं और यह हाल (कि हर समय अल्लाह का और उसके हुक्मों का ध्यान रहे और ग़फ़लत न होने पाये) आम तौर से उन्हीं नेक बन्दों का होता है जो ज़बान से बहुत ज़्यादा ज़िक्र करके दिल और दिमाग़ में याद और ध्यान को ऐसा बसा लेते हैं और अल्लाह से अपने हृदय के ताअल्लुक़ को इतना बढ़ा लेते हैं कि वह एक मिनट के लिये भी ग़ाफ़िल नहीं होते। इसलिये ज़बानी ज़िक्र भी ज़रूरी है, आज कल कुछ पढ़े लिखे लोग ज़बान से अल्लाह के ज़िक्र की ज़ियादती को बेफ़ायदा अमल (कार्य) समझते हैं, हालांकि रसूलुल्लाह (स०) की हदीसों में साफ़ साफ़ हुक्म है और हुज़ूर (स०) ने इसकी बड़ी फ़ज़ीलतें बयान की हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र (रज़ि) से रिवायत है कि एक व्यक्ति हुज़ूर (स०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि:-

"ऐ अल्लाह के रसूल! इस्लाम के अहकाम (आदेश) बहुत हैं आप मुझ को कोई बात ऐसी बता दीजिये जिसको मैं मज़बूती से पकड़ लूं। हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया, तुम्हारी ज़बान हमेशा अल्लाह के ज़िक्र से तर रहा करे"।

एक हदीस-ए-क़ुदसी[1] में है जो हज़रत अबु हुरैरह (रज़ि) से रिवायत की गई है कि,

"अल्लाह तआला का इरशाद है कि बन्दा जब मुझे याद करता है और मेरे ज़िक्र से उसके होंठ चलते हैं तो मैं उसके साथ होता हूँ"।

---

1. वह हदीस जिसके अलफ़ाज़ (शब्द) ख़ुदा के हैं (क़ुरआन के अलावा) लेकिन हुज़ूर (स०) के मुंह से बयान किये गये हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सिखाये हुये कुछ ख़ास ज़िक्र

जो आयतें और हदीसें अब तक लिखी गयीं उनसे अल्लाह के ज़िक्र की एहमियत और उसकी फ़ज़ीलत मालुम हो चुकी, और ऊपर यह भी बताया जा चुका है कि अल्लाह के ज़िक्र की कसरत (अधिकता) से अल्लाह की मोहब्बत पैदा होती और बढ़ती है । अब हमको और आपको रसूलुल्लाह (स०) के सिखाये हुये और पसन्द किये हुए ख़ास -ख़ास ज़िक्र मालूम कर लेना चाहिये ।

सबसे अच्छा ज़िक्र:-

हज़रत जाबिर (रज़ि) से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :-

"सब ज़िक्रों में अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) "ला इला ह इल्लल्लाह" का ज़िक्र है ।

एक दूसरी हदीस में है जो हज़रत अबुहुरैरह (रज़ि) से रिवायत है कि हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया;-

"जब कोई बन्दा दिल की गहराई से "ला इला ह इल्लल्लाह" कहता है तो इस कलिमे के लिये आसमानों के दरवाज़े खुल जाते हैं यहां तक कि यह सीधा अर्श तक पहुंचता है, शर्त यह है कि वह बन्दा बड़े गुनाहों से बचे" ।

और एक दूसरी हदीस में है कि हुज़ूर (स०) ने बयान फ़रमाया कि:-

" एक बार हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से अर्ज़ किया कि मुझे कोई चीज़ बतलाई जाये जिसके ज़रिये मैं आप का ज़िक्र किया करूं । अल्लाह तआला की तरफ़ से जवाब मिला कि "ला इला ह इल्लल्लाह" के ज़रिये मेरा ज़िक्र किया करो । हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि यह ज़िक्र तो सभी करते हैं मैं आपसे कोई ख़ास कलिमा मालुम करना चाहता हूं । जवाब मिला कि ऐ मूसा अगर सातों आसमान और इनमें जो कुछ है और सातों ज़मीनें तराज़ू के एक पलड़े में रखी जायें और "ला इला ह इल्लल्लाह" दूसरे पलड़े में, तो "ला इला ह इल्लल्लाह" वाला पलड़ा ही झुक जायेगा" ।

वास्तव में "ला इला ह इल्लल्लाह" की शान ऐसी ही है मगर लोग इसको सिर्फ़ एक हलका सा शब्द समझते हैं । इस लेखक ने अल्लाह के एक नेक बन्दे से सुना उन्होंने ख़ास हालत में इस सेवक ही से फ़रमाया कि :-

"यदि कोई आदमी जिसके अधिकार में दुनिया के ख़ज़ाने हों मुझ से यह कहे कि यह सारे ख़ज़ाने तुम ले लो और अपना कहा हुआ एक बार का "ला इला ह इल्लल्लाह" इसके बदले में दे दो तो यह फ़क़ीर इस पर राज़ी नहीं होगा" ।

कोई अनजान शायद इसको बढ़ा चढ़ाकर किया हुआ दावा समझे लेकिन सच्ची बात यह है कि "ला इला ह इल्लल्लाह"की अल्लाह की नज़र में जो बड़ाई और क़ीमत है, अगर अल्लाह तआला अपने किसी बन्दे को इसका यक़ीन नसीब कर दे, तो उसका हाल यही होगा कि वह सारी दुनिया के ख़ज़ानों के बदले में एक बार का भी "ला इला ह इल्लल्लाह" देने पर तय्यार न होगा ।

कलिमए-तमजीद या तीसरा कलिमा:-

हज़रत सुमरा बिन जुन्दुब (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :-

"सब बोलों में अफ़ज़ल बोल और सब कलिमों में अफ़ज़ल कलिमे यह चार हैं" ।

سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ

"सुब हानल्लाहि, वल हम्दु लिल्लाहि, वला इला ह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अकबर" ।

और हज़रत अबूहुरैरह (रज़ि०) की रिवायत में है कि रसूल (स०) ने फ़रमाया कि:-

"यह कलिमा 'सुब हानल्लाहि वल हम्दु लिल्लाहि वला इला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर' मुझको इस पूरे संसार से ज़्यादा पसन्द और प्रिय है जिस पर सूरज निकलता है" ।

इस कलिमे के अफ़ज़ल होने की वजह यह है कि इसमें बहुत सी बातें आ जाती हैं और अल्लाह की तारीफ़ के सारे रूप इसमें आ जाते हैं । कुछ हदीसों में अल्लाहु अकबर के बाद (लाहौ ल वला क़ूव्वता इल्ला बिल्लाह) भी आया है । हमारे एक बड़े बुज़ुर्ग इस कलिमे की मुख़तसर तशरीह इस तरह किया करते थे ।

सुब हानल्लाह :- पाक है अल्लाह हर ऐब और ख़राबी से और उन सब बातों से जो उसकी शान के मुनासिब नहीं ।
अलहमदु लिल्लाह :- और सारी ख़ूबियां और अच्छाईयां और कमाल की सारी सिफ़तें (गुण) उसमें पाई जाती हैं, इसीलिये सारी तारीफ़ें उसी के लिये हैं ।
लाइला ह इल्लल्लाह :- और जब उसकी शान यह है कि हर ना मुनासिब बात से वह पाक है और सारी ख़ूबियां और कमालात सब उसमें मौजूद हैं तो फिर वही हमारा माबूद (पूज्य) है ।
अल्लाहु अकबर :- हम केवल उसके और सिर्फ़ उसी के आजिज़ (तुच्छ) बन्दे हैं और वह बहुत ही बड़ा है ।
लाहौ ल वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह :- हम किसी तरह उसकी बन्दिगी का हक़ अदा नहीं कर सकते और उसकी ऊंची बारगाह तक हमारी पहुंच नहीं हो सकती मगर यह कि वही हमारी मदद फ़रमाये ।

तसबीहात-ए-फ़ातिमह (रज़ि):-

मशहूर हदीस है कि :-
"हज़रत फ़ातिमह (अल्लाह उनसे राज़ी हो) अपने घर का पूरा काम काज ख़ुद करती थीं । यहां तक कि चक्की पीसती थीं । एक बार उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि इन कामों के लिये उन्हें कोई काम करने वाली (दासी) देदी जाय तो हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें दासी से अच्छी चीज़ बताता हूं और वह यह है कि तुम हर नमाज़ के बाद और सोते समय ३३ बार सुबहानल्लाह ३३ बार अलहमदु लिल्लाह और ३४ बार अल्लाहु अकबर कह लिया करो । यह तुम्हारे लिये दासी से कई गुना अच्छा है" ।

एक दूसरी हदीस में इन कलिमों की फ़ज़ीलत और इनकी ख़ूबी यह बयान की गई है कि:-
"जो व्यक्ति हर नमाज़ के बाद ३३ बार सुबहानल्लाह ३३ बार अलहमदु लिलाह ३४ बार अल्लाहु अकबर पढ़ा करे और आख़िर में एक बार यह कलिमा पढ़ लिया करे
ला इला ह इल्लल्लाहु वह दहू ला शरी क लहू लहुल मुलकु
व लहुल हम्दु वहु व अला कुल्लि शैइन क़दीर ।
तो उसके सारे गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे । चाहे समुद्र के झाग के

बराबर क्यों न हों" ।
सुबहानल्लाहि व बिहमदिही :- हज़रत अबू हुरैरह (रज़ी) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया :-
" जो आदमी सुबह शाम सौ सौ बार "सुबहानल्लाहि व बिमदिही" पढ़ लिया करे तो क़यामत में कोई व्यक्ति भी उससे ज़्यादा सवाब का सामान लेकर नहीं आयगा अलावा उसके जिसने यही अमल किया हो या इससे भी ज़्यादा किया हो" ।

हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि०) की एक दूसरी रिवायत है कि रसूल (स०) ने फ़रमाया :-
"दो कलिमे हैं ज़बान पर बड़े हलके, पर अमल के तराज़ू में बहुत भारी और अल्लाह को बहुत प्यारे १. सुबहानल्लाहि व बिहमदिही २. सुबहानल्लाहिल अज़ीम" ।

यूं तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अल्लाह के ज़िक्र के लिये और भी बहुत से कलिमे बयान किये गये हैं लेकिन हमने जो थोड़े से कलिमे ऊपर लिखे हैं अगर अल्लाह का कोई भी बन्दा उन्हीं को या उनमें से कुछ को अपना वज़ीफ़ा और विर्द बना ले तो काफ़ी है । ज़िक्र के सिलसिले में एक बात और भी ध्यान में रखने की है कि जहां तक आख़िरत के बदले और सवाब का सम्बन्ध है उसके लिये कोई ख़ास नियम और उसूल नहीं हैं । अल्लाह के जो बन्दे ज़िक्र का जो कलिमा मन लगाकर और सवाब की नियत से जिस समय और जिस मात्रा में पढ़ेंगे ख़ुदा ने चाहा तो उनको पूरा बदला मिलेगा लेकिन दिल में कोई ख़ास केफ़ियत (दशा) पैदा करने के लिये जैसे अल्लाह तआला की मुहब्बत बढ़ाने के लिये या दिल में बेदारी (जागरण) की कैफ़ियत पैदा करने के लिये या किसी रूहानी और दिल के रोग के इलाज के लिये हमारे बुज़ुर्ग और मशायख़ (गुरूजन) जो ज़िक्र के ख़ास-ख़ास तरीक़े बताते हैं उसमें उसकी संख्या और तरीक़े की पाबन्दी ज़रूरी है जो वह बतलायें । क्योंकि जिस मक़सद से वह ज़िक्र किया जाता है, वह उसी तरीक़े से हासिल होता है, इसकी मोटी सी मिसाल यह है कि अगर कोई व्यक्ति सवाब हासिल करने के लिये अलहम्द शरीफ़ या कुरआन शरीफ़ की कोई दूसरी सूरत पढ़े तो इसमें कोई हरज और नुक़सान नहीं है कि वह एक बार सुबह पढ़ ले एक बार दोपहर और एक बार शाम को और इसी तरह से दो चार बार रात में, लेकिन अगर वह इस सूरत को याद करना भी चाहता है तो इसको लगातार बीसों बार एक ही बैठक में पढ़ना पड़ेगा, बिना इसके वह ज़बानी याद नहीं कर सकेगा । बस यही अन्तर है इस आम ज़िक्र

में जो केवल सवाब के लिये किया जाता है और उस ख़ास ज़िक्र में जो हमारे मशाइख़ (गुरूवर) अहले सुलूक (भक्ति धारण करने वाले) को इलाज और उपाय के रूप में बताते हैं। बहुत से लोगों को इन क़िस्मों का फ़र्क़ मालूम न होने की वजह से कुछ उलझनें होती हैं इस लिये यह बात संक्षिप्त रूप से यहां लिख दी गयी है।

क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत[1]:-

क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत भी अल्लाह का ज़िक्र है बल्कि ऊंचे दर्जे का ज़िक्र है।

एक हदीस में है कि हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि:-

"अल्लाह तआला के कलाम की फ़ज़ीलत दूसरे कलामों पर ऐसी है जैसे अल्लाह की फ़ज़ीलत उसकी मख़लूक़ (सृष्टि) पर"।

एक दूसरी हदीस में है जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि) से रिवायत की गई है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :-

" जो व्यक्ति अल्लाह की किताब (क़ुरआन शरीफ़) का एक हर्फ़ पढ़े उसके लिये एक नेकी है और उस एक नेकी का सवाब दस नेकियों के बराबर है। फिर फ़रमाया कि मैं यह नहीं कहता हूं कि अलिफ़ लाम मीम एक हर्फ़ है बल्कि इसका अलिफ़ एक हर्फ़ है लाम दूसरा और मीम तीसरा हर्फ़ है"।

---

१. आजकल के कुछ नई तालीम पाये हुये लोगों का ख़्याल है और जिसको वह बड़े ज़ोर से फ़ैलाते हैं कि मतलब (अर्थ) समझे बिना क़ुरआन शरीफ़ का पढ़ना बिल्कुल बेकार है। यह बेचारे शायद यह समझते हैं कि जिस तरह क़ानून या अखलाक़ की दूसरी किताबें होती हैं उसी तरह एक किताब क़ुरआन शरीफ़ भी है और जैसे किसी क़ानून की किताब को उसको न समझने वाले का पढ़ना बिल्कुल बेकार है इसी तरह ऐसे लोगों का क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत करना भी व्यर्थ है । इसलिये अदब (शिष्टाचार) और ताज़ीम के साथ इसकी सिर्फ़ तिलावत भी अल्लाह तआला के साथ मोहब्बत और बन्दगी के संबंध को ज़ाहिर करने वाला एक अमल है। इसलिए यह एक इबादत है। अगर क़ुरआन-शरीफ़ की तिलावत का मक़सद सिर्फ़ समझना ही होता तो एक एक नमाज़ में चार-चार बार सूरए फ़ातिहा पढ़ने का हुक्म न होता। क्योंकि अर्थ समझने के लिये तो एक बार का पढ़ना काफ़ी होता है। इस तरह की ग़लत फहमियां उन लोगों को होती हैं जो अल्लाह तआला को दुनिया में हुकूमत करने वाले हाकिमों की तरह सिर्फ़ एक हाकिम समझते हैं और उसके प्रिय और माबूद होने की शान से अनजान हैं या यूं कहा जाये कि जिन लोगों ने सिर्फ़ मानसिक रूप से ख़ुदा को जाना और माना है और दिल से मानना अभी इनको पूरी तरह हासिल नहीं हुआ है, इसके साथ यह भी ध्यान में रहे कि क़ुरआन शरीफ़ का जो असली मक़सद है यानी हिदायत या नसीहत वह समझे बिना पूरा नहीं होता इसलिये इसको समझकर और ध्यान देकर तिलावत करना, यह ऊंचे दर्जे की सआदत और नेकी है, यही इस बारे में पूरी संतुलित और हक़ बात है। लेकिन बहुत से लोग यह नहीं जानते।

एक दूसरी हदीस में है जो हज़रत अबू उमामह (रज़ि) से रिवायत की गई है कि रसूलुल्लाह सललाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:-

"लोगों क़ुरआन पढ़ा करो, क़यामत के दिन क़ुरआन उनकी सिफ़ारिश करेगा जो क़ुरआन पढ़ने वाले होंगे"।

ज़िक्र के बारे में कुछ बातें:-

१

ज़िक्र करते करते जिन अल्लाह के बन्दों के दिल में ज़िक्र बस गया है और उनके जीवन का एक हिस्सा बन गया है उनको तो ज़िक्र के लिये किसी ख़ास पाबन्दी तथा प्रबन्ध की ज़रूरत नहीं होती लेकिन हम जैसे आदमी अगर ज़िक्र के द्वारा अल्लाह तआला से अपना ताल्लुक़ बढ़ाना और ज़िक्र की बरकतें और उसके फल हासिल करना चाहें तो उनके लिये ज़रूरी है कि वह अपने हालात के अनुसार ज़िक्र की कुछ तादाद (संख्या) और उसका समय मुक़र्रर कर लें, और अच्छा यह है कि कलिमाते ज़िक्र चुनने में किसी साहिबे ज़िक्र से मशवरा ले लें। या ऊपर लिखे कलिमाते ज़िक्र में जिस ज़िक्र से अपनी तबीअत को मुनासिबत हो उसको मुक़र्रर कर लें। इसी तरह क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत के लिये भी वक़्त मुक़र्रर कर लें।

२

जिस कलिमें के ज़रिये अल्लाह का ज़िक्र किया जाय, जहां तक हो सके उसके अर्थ का भी ध्यान रखा जाये और अल्लाह तआला के प्रेम और उसकी बड़ाई के एहसास के साथ ज़िक्र किया जाय और इस पर यक़ीन रखा जाये कि अल्लाह तआला मेरे पास और मेरे साथ हैं और मेरे हर शब्द को सुन रहे हैं।

३

ज़िक्र के लिये वुज़ू शर्त नहीं है इस लिये वुज़ू न होने की हालत में भी बे झिझक ज़िक्र किया जा सकता है। इन्शा अल्लाह जिस सवाब का वादा है वह पूरा- पूरा मिलेगा लेकिन वुज़ू के साथ ज़िक्र की तासीर (प्रभाव) और उसकी नूरानियत बहुत बढ़ जाती है।

४

ऊपर कहा जा चुका है कि ज़िक्र के सब कलिमों में कलिम-ए- तमजीद (तीसरा कलिमा) सुबहानल्लाहि वल हम्दु लिल्लाहि वला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर, बहुत जामे (परिपूर्ण) ज़िक्र है अगर इसको अपना विर्द (जाप) बना लिया

जाये तो इसमें सब कुछ है और अपने अधिकतर बड़ों को देखा है कि वह आम लोगों को जो इसके बारे में पूछते हैं यही कलिमा और इसके साथ इस्तिग़फ़ार व दरूद शरीफ़ मुस्तक़िल पढ़ने के लिये बताते है ।

अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ दे कि उसके ज़िक्र से हमारे दिल मामूर [भरे] और हमारी ज़बानें तर रहें । उस की बरकतें और उसके फल हमें नसीब हों ।

हमारा शग़्ल हो रातों को रोना यादे दिलबर में
हमारी नींद हो महवे ख़्याले यार हो जाना ।

अठ्ठारहवां सबक़

दुआ

जब यह बात मानी हुई और यक़ीनी है कि इस दुनिया का सारा कारख़ाना अल्लाह के हुक्म से चल रहा है और सब कुछ उसी के क़ब्ज़े और क़ुदरत में है तो हर छोटी बड़ी ज़रूरत में अल्लाह से दुआ करना बिल्कुल फ़ितरी (स्वाभाविक) बात है । इसी लिये हर धर्म के मानने वाले अपनी ज़रूरतों में अल्लाह तआला से दुआ करते हैं, लेकिन इस्लाम में इसकी ख़ास तौर से तालीम दी गई है । क़ुरआन शरीफ़ में एक जगह फ़रमाया गया है :-

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ

वक़ा ल रब्बुकुमुद ऊनी अस्तजिब लकुम

और फ़रमाया तुम्हारे परवरदिगार ने कि मुझ से दुआ करो, मैं क़ुबूल करूंगा ।

दूसरी जगह इरशाद है :-

قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ

कुल मा याबउ बिकुम रब्बी लौला दुआउकुम ।

कह दो, क्या परवाह तुम्हारी मेरे रब को अगर न हों तुम्हारी दुआयें ।

फिर दुआ के हुक्म के साथ यह भी विश्वास दिलाया गया है कि अल्लाह तआला अपने बन्दों से बहुत क़रीब है, वह उनकी दुआओं को सुनता और क़ुबूल करता है, फ़रमाया गया है :-

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ

वइज़ा स अ ल क इबादी अन्नी फ़ इन्नी क़रीब । उजीबु दा वतददाइ इज़ा दआनि

और ऐ रसूल जब तुम से मेरे बन्दे मेरे बारे में पूछें (तो उन्हें बताओ

कि) मैं उनसे क़रीब हूं, पुकारने वाला जब मुझे पुकारे तो मैं उसकी पुकार सुनता हूं ।

रसूल (स०) ने हमको यह भी बतलाया है कि अपनी ज़रूरतें अल्लाह तआला से मांगना और दुआ करना ऊंचे दर्जे की इबादत है बल्कि इबादत की रूह और जान है ।

हदीस शरीफ़ में है कि :-

"दुआ इबादत है" (और एक रिवायत में है कि दुआ इबादत का मग़ज़ (सार) और जौहर है) ।

एक दूसरी हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :-

"अल्लाह के यहां दुआ से ज़्यादा किसी चीज़ का दर्जा नहीं"

और इसीलिये अल्लाह तआला उस आदमी से नाराज़ होते हैं जो अपनी ज़रूरत और हाजत उससे न मांगे । एक हदीस में है कि :-

" अल्लाह तआला उस आदमी से नाराज़ होता है जो अपनी हाजतें और ज़रूरतें उससे नहीं मांगता" ।

सुबहानल्लाह (क्या शान है अल्लाह की) दुनिया में कोई आदमी अगर अपने किसी गहरे दोस्त या अपने किसी सगे नातेदार से भी बार बार अपनी ज़रूरतों को मांगे तो वह उससे तंग आकर ख़फा हो जाता है लेकिन अल्लाह पाक अपने बन्दों पर ऐसा मेहरबान है कि वह न मांगने पर ख़फ़ा और नाराज़ होता है ।

एक हदीस में है कि :-

"जिस आदमी के लिये दुआ के दरवाज़े खुल गये (यानी अल्लाह की तरफ़ से जिसको दुआ की तौफ़ीक़ मिली और असली दुआ करना नसीब हो गया) तो उसके लिये रहमत के दरवाज़े खुल गये" ।

बहर हाल किसी ज़रूरत और मक़सद के लिये अल्लाह तआला से दुआ करना जिस तरह उससे लेने का एक तरीक़ा है इसी तरह वह एक ऊंचे दर्जे की इबादत भी है, जिससे अल्लाह तआला बहुत ख़ुश और राज़ी होता है और इसकी वजह से रहमत के दरवाज़े खोल देता है । यह शान हर दुआ की है चाहे वह किसी दीनी ज़रूरत के लिये की जाय या दुनियावी ज़रूरत के लिये । लेकिन शर्त यह है कि किसी बुरे और नाजायज़ काम के लिये न हो । नाजायज़ काम के लिये दुआ करना भी नाजायज़ और गुनाह है ।

यहां एक बात यह भी याद रखने की है कि दुआ जितनी दिल की गहराई से और अपने को जितना भी तुच्छ और बेबस समझकर और अल्लाह की क़ुदरत

और रहमत के जितने यक़ीन के साथ की जायगी उतनी ही उसके क़ुबूल होने की ज़्यादा उम्मीद होगी । जो दुआ दिल से न की जाय बल्कि सिर्फ़ ज़बान ही से कर ली जाय वह असल में दुआ ही नहीं होती ।

हदीस शरीफ़ में है कि :-

"अल्लाह तआला वह दुआ क़ुबूल नहीं करता जो दिल की ग़फ़लत के साथ की जाय" ।

अगरचे अल्लाह तआला हर समय की दुआ सुनता है लेकिन हदीसों से पता चलता है कि कुछ ख़ास समय ऐसे होते हैं जिनमें दुआ ज़्यादा क़ुबूल होती है । जैसे फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद और रात के आख़री हिस्सों में दुआ ज़्यादा क़ुबूल होती है या रोज़ह के इफ़तार के समय, या ऐसे ही किसी और नेक काम के बाद, या सफ़र के समय, ख़ास तौर से जब यात्रा दीन के लिये और अल्लाह को राज़ी करने के लिये हो ।

यह भी याद रखना चाहिये कि दुआ क़ुबूल होने के लिये आदमी का परहेज़गार होना या वली होन शर्त नहीं है, अगरचे इसमें शुबह नहीं कि अल्लाह के नेक और मक़बूल (प्रिय) बन्दों की दुआयें ज़्यादा क़ुबूल होती हैं लेकिन ऐसा नहीं है कि आम लोगों और गुनाहगारों की दुआयें सुनी ही न जाती हों, इसलिये किसी को यह ख़्याल करके दुआ छोड़नी नहीं चाहिये कि हम पापियों की दुआ से क्या होगा । अल्लाह रहीम व करीम जिस तरह अपने गुनाहगार बन्दों को खिलाता पिलाता है उसी तरह उनकी दुआयें भी सुनता है । इसलिये सबको अल्लाह से दुआ करना चाहिये । अभी बताया जा चुका है कि दुआ ख़ुद एक इबादत भी है इसलिये दुआ करने वाले को सवाब तो हर हाल में मिलेगा ।

और अगर कुछ बार दुआ करने से मक़सद हासिल न हो तो भी मायूस और निराश होकर दुआ न छोड़ना चाहिये अल्लाह तआला हमारी ख़्वाहिश (इच्छा) का पाबन्द नहीं है । कभी कभी अल्लाह पाक की हिकमत का तक़ाज़ा यही होता है कि दुआ देर से क़ुबूल की जाय और बन्दे की भलाई भी इसी में होती है । लेकिन बन्दा जानकारी न होने की वजह से उसको समझता नहीं इसलिये जल्दी मचाता है, और मायूस होकर दुआ करना छोड़ देता है । बहरहाल बन्दे को चाहिये कि अपनी ज़रूरतों और अपने मक़सद के लिये अल्लाह तआला से दुआ करता ही रहे । मालूम नहीं अल्लाह तआला किस दिन और किस घड़ी सुन ले । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ के बारे में एक बात यह भी बताई है कि :-

"दुआ बेकार और नष्ट कभी नहीं होती लेकिन उसके क़ुबूल होने

की कई सूरतें होती हैं। कभी ऐसा होता है कि बन्दा जिस चीज़ की दुआ करता है उसको वही मिल जाती है और कभी ऐसा होता है कि अल्लाह तआला उस बन्दे को वह चीज़ देना अच्छा नहीं समझते इसलिये वह तो मिलती नहीं लेकिन उसकी जगह कोई और अच्छी चीज़ उसको दे दी जाती है। या कोई आने वाली मुसीबत टाल दी जाती है। या उस दुआ को उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा (पापनाशक) बना दिया जाता है (लेकिन बन्दे को इस भेद का पता नहीं होता इसलिये वह समझता है कि मेरी दुआ बेकार हो गई) और कभी ऐसा होता है कि अल्लाह तआला दुआ को आख़िरत के लिये महफ़ूज़ कर देता है, यानी बन्दा जिस मक़सद के लिये दुआ करता है वह अल्लाह तआला उसको इस संसार में नहीं देता लेकिन उसकी उस दुआ के बदले में आख़िरत का बहुत बड़ा सवाब लिख दिया जाता है''।

एक हदीस में है कि :-

''कुछ लोग जिनकी बहुत सी दुआयें दुनिया में क़ुबूल नहीं हुई थीं जब आख़िरत में पहुंचकर अपनी उन दुआओं के बदले में मिले हुये सवाब और नेमतों के भन्डार देखेंगे तो हसरत से कहेंगे कि क्या अच्छा होता दुनिया में हमारी कोई दुआ भी क़ुबूल न हुई होती और सबका बदला हमें यहीं मिलता''।

बहर हाल अल्लाह तआला पर ईमान रखने वाले हर बन्दे को अल्लाह की क़ुदरत और उसके करीम होने पर पूरा यक़ीन रखना चाहिये, और दुआ के क़ुबूल होने की पूरी उम्मीद और भरोसे के साथ अपनी हर ज़रूरत के लिये अल्लाह तआला से दुआ करनी चाहिये, और बिल्कुल यक़ीन रखना चाहिये कि दुआ कभी बेकार नहीं होगी। जहां तक बन पड़े दुआ ऐसे अच्छे शब्दों में करनी चाहिये जिनसे अपनी आजज़ी (तुच्छता) और बेबसी और अल्लाह तआला की बड़ाई और किबरियायी ज़ाहिर हो। क़ुरआन शरीफ़ में हमको बहुत सी दुआयें बतलाई गयी हैं और उनके अलावा हदीसों में भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सैकड़ों दुआयें आयी हैं। सबसे अच्छी दुआयें क़ुरआन और हदीस की यही दुआयें हैं उनमें से चालीस छोटी और जामे (व्यापी) दुआयें इस किताब के आख़िर में भी लिख दी गई हैं।

उन्नीसवां सबक़

दुरूद शरीफ़

दुरूद शरीफ़ भी दर असल एक दुआ है। जो हम बन्दे अल्लाह तआला से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिये करते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह तआला के बाद सबसे ज़्यादा ऐहसान हमारे ऊपर रसूलुल्लाह (स०) ही का है। आपने कठिन से कठिन मुसीबत उठाकर अल्लाह की हिदायतें हमको पहुंचाईं। अगर आप अल्लाह के रास्ते में यह कष्ट नहीं उठाते तो दीन की रौशनी हम तक नहीं पहुंच सकती और हम कुफ़्र और शिर्क के अंधेरे में पड़े रह जाते, और मरने के बाद हमेशा के लिये दोज़ख़ में जाते। दीन और ईमान की दौलत चूंकि इस दुनिया की सबसे बड़ी नेमत है और यह हमको हुज़ूर (स०) से मिली है इसलिये अल्लाह तआला के बाद हुज़ूर ही हमारे सबसे बड़े मोहसिन (उपकारक) हैं। हम आपके इस उपकार का कोई बदला नहीं दे सकते। अधिक से अधिक जो कुछ हम कर सकते हैं वह यह है कि अल्लाह तआला से हम आपके लिये दुआ करें। और इस प्रकार अपने एहसानमन्द होने का सबूत दें। हमारी तरफ़ से हुज़ूर की शान के लायक़ यही दुआ हो सकती है कि अल्लाह आपको अपनी ख़ास रहमतें और बरकतें प्रदान करें और आपके दर्जे ज़्यादा से ज़्यादा ऊंचे करें। बस इसी प्रकार की दुआ को ''दुरूद शरीफ़'' कहते हैं।

क़ुरआन शरीफ़ में बहुत स्पष्ट रूप से और बड़े अजीब ढंग से हमको इसका हुक्म दिया गया है। फ़रमाया गया है :-

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا

इन्नल्ला ह व मलाइ क त हू युसल्लू न अलन्नबीयि या अय्यु हल्लज़ी न आ मनू सल्लू अलैहि व सल्लिमू तसलीमा।

अल्लाह और उसके फ़रिश्ते रहमत भेजते हैं नबी पर, ऐ ईमान वालो तुम उनपर दुरूद भेजो और सलाम अर्ज़ करो।

इस आयत में पहले तो यह बयान किया गया कि अल्लाह तआला अपने नबी का ख़ुद ऐज़ाज़ व इकराम (आदर और सम्मान) करता है और उनपर रहमत फ़रमाता है और उसके फ़रिश्तों का भी व्यवहार आपके साथ यही है कि वह आपका आदर और सम्मान करते हैं और अल्लाह तआला से आपके लिये रहमत की दुआ करते रहते हैं। इसके बाद हम ईमान लाने वालों को हुक्म दिया गया है कि तुम भी उनके लिये अल्लाह तआला से रहमतें उतारने की दुआयें मांगा करो और उन पर सलाम भेजो। यानि कि हमको हुक्म देने से पहले ही बतला दिया गया है कि जिस काम का तुमको हुक्म दिया जा रहा है वह काम अल्लाह तआला को ख़ास तौर से पसन्द है, और यह फ़रिश्तों का विशेष धंधा है। यह जानने के बाद कौन मुसलमान होगा जो इसको अपना वज़ीफ़ा (जाप) न बनाये।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत बहुत सी हदीसों में आई है जिनमें से दो चार यहां भी दर्ज की जाती हैं। रसूलल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम की बहुत मशहूर हदीस है, आपने फरमाया :-

"जो व्यक्ति मुझपर एक बार दुरूद भेजे अल्लाह तआला उसपर दस बार रहमतें भेजता है"।

एक और रिवायत में इतना और भी है कि :-

"उसके दस अपराध भी माफ़ किये जाते हैं और दस दर्जे भी ऊंचे कर दिये जाते हैं"।

एक और हदीस में है कि :-

"अल्लाह के बहुत से फ़रिश्ते हैं जिनका ख़ास काम यही है कि वह ज़मीन में फिरते रहते हैं और मेरा जो उम्मती मुझपर दुरूद और सलाम भेजे वह उसको मुझ तक पहुंचाते हैं"।

सुबहानल्लाह! कितनी बड़ी दौलत है कि हमारा दुरूद व सलाम फ़रिश्तों द्वारा हुज़ूर को पहुंचता है और इस बहाने से हमारा नाम भी वहां पहुंच जाता है।

एक और हदीस में है कि :-

"क़यामत में सबसे ज़्यादा क़रीब वही आदमी होगा जो मुझ पर दुरूद अधिक भेजता होगा"।

एक और हदीस में है :-

"वह आदमी बड़ा कंजूस है जिसके सामने मेरा ज़िक्र हो और वह उस समय भी मुझ पर दुरूद न भेजे"।

एक और हदीस में है :-

"उस व्यक्ति की नाक मिट्टी से लथड़ जाये (यानी वह ज़लील हो) जिसके सामने मेरा ज़िक्र आये और वह मुझपर दुरूद न भेजे"।

सारांश यह है कि हुज़ूर पर दुरूद भेजना हमारे ऊपर अनिवार्य है और हमारी बड़ी ख़ुश नसीबी है और दुनिया व आख़िरत में हमारे लिये बेगिनती रहमतों और बरकतों का साधन है।

दुरूद के शब्द :-

कुछ सहाबा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया था कि "हम हुज़ूर पर दुरूद किस तरह भेजें"? तो हुज़ूर ने उनको "दुरूद-ए-इब्राहीमी" बताया जो नमाज़ में पढ़ा जाता है और इस किताब के दूसरे सबक़ में नमाज़ के बयान में गुज़र भी चुका है। उसी के लगभग और उससे कुछ छोटा एक और दुरूद शरीफ़ भी हुज़ूर (स०) ने सिखाया है।

हदीस के शब्द यह हैं :-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاَزْوَاجِهٖ
اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَذُرِّيَّتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ
كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिनिन्नबीयिल अम्मियि व अज़वाजिही उम्महातिलमूमिनी न व ज़ुर्री य तिही व अहलि बैतिही कमा सल्लै त अला आलि इब्राही म इन्न क हमीदुम्मजीद।

ऐ मेरे अल्लाह! नबीऐ उम्मी[1] हज़रत मोहम्मद (स०) पर और आपकी

---

1. वह नबी जिसने किसी से पढ़ा न हो।

पाक बीबियों पर जो मुसलमानों की मातायें हैं और आपकी नस्ल पर और आपके घर वालों पर रहमतें भेज जैसे कि तूने रहमतें भेजीं हज़रत इब्राहीम (अ) के घराने पर, तू ही तारीफ़ के लायक़ और बुज़ुर्ग है ।

जब कभी हम हुज़ूर (स०) का नाम लें और आपके बारे में बोलें या दूसरे से सुनें, तो आप पर दुरूद शरीफ़ ज़रूर पढ़ना चाहिये और ऐसे अवसर के लिये "सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम" या अलैहिस्सलातु व स्सलाम" काफ़ी है ।

दुरूद शरीफ़ वज़ीफ़े के रूप में :-

कुछ ख़ास ज़ौक़ (रूचि) और हिम्मत रखने वाले बन्दे तो रोज़ाना कई हज़ार बार दुरूद शरीफ़ पढ़ने की आदत रखते हैं, लेकिन हम जैसे कम हिम्मत वाले अगर सुबह व शाम प्रेम व आदर की भावना के साथ केवल सौ सौ बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लिया करें तो इन्शा अल्लाह इतना कुछ पायेंगे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हम पर ऐसी शफ़क़तें (दया दृष्टि) होंगी कि इस दुनिया में उसका कोई अन्दाज़ा नहीं किया जा सकता । जो लोग मुख़्तसर दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहें वह यह दुरूद शरीफ़ याद कर लें ।

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदि निन्नबीयिल उम्मी व अलिही ।

ऐ ख़ुदा ! नबी-ए- उम्मी हज़रत मुहम्मद (स०) पर और उनके घर वालों पर रहमतें भेज ।

बीसवां सबक़

तौबह व इसतिग़फ़ार

अल्लाह तआला ने अपने नबियों और रसूलों को इस लिये भेजा और अपनी किताबें इसलिये उतारीं कि इन्सानों को अपना बुरा भला और गुनाह व सवाब सब मालूम हो जाये और वह बुरी बातों और गुनाह के कामों से बचें और नेकी और सवाब के रास्ते पर चलकर अल्लाह की प्रसन्नता और मरने के बाद वाली ज़िन्दगी यानी आख़िरत में निजात हासिल कर सकें । तो जिन लोगों ने अल्लाह के नबियों, रसूलों और अल्लाह की उतारी हुई किताबों को नहीं माना और ईमान नहीं लाये, उनका मामला तो यह है कि उनकी पूरी ज़िन्दगी बग़ावत और कहना न मानने वाली जिन्दगी है, और अल्लाह की उतारी हुई हिदायत से वह बिल्कुल अलग हैं इसलिये वह जब तक उसके भेजे हुये नबियों और रसूलों पर, उसकी उतारी हुई किताबों पर और ख़ास कर इस आख़िरी ज़माने के आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और उनकी लाई हुई ख़ुदा की आख़िरी किताब क़ुरआन पर ईमान न लायें, और उसकी हिदायत को क़ुबूल न करें वह अल्लाह की रज़ामन्दी और मरने के बाद वाली ज़िन्दगी में कामयाबी और निजात हासिल नहीं कर सकते, क्योंकि अल्लाह का, उसके नबियों का और उसकी किताबों का इनकार ऐसा अपराध नहीं जो माफ़ किया जा सके । अल्लाह के हर पैग़म्बर ने अपने अपने समय में इस बात का बहुत साफ़-साफ़ एलान किया है । कुफ़्र और शिर्क वालों की निजात के लिये यह आवश्यक है कि वह सबसे पहले कुफ़्र और शिर्क से तौबह करें । और ईमान व तौहीद (अल्लाह को एक मानना) को अपना उसूल बनायें, इसके बिना निजात नही । लेकिन जो लोग नबियों और रसूलों पर ईमान ले आते हैं और उनके बतलाये हुये रास्ते पर चलने का इक़रार और इरादा कर लेते हैं वह भी कभी कभी शैतान के बहकावे से या अपने मन की बुरी ख़ुआहिश (इच्छा) से गुनाह के काम कर बैठते हैं ऐसे सब पापियों के लिये अल्लाह तआला ने तौबह व इसतिग़फ़ार का दरवाज़ा खुला रखा है । तौबह व इसतिग़फ़ार का मतलब यह है कि जब बन्दे से अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ कोई काम या कोई पाप हो तो वह उस पर शर्मिन्दा और दुखी हो, और भविष्य में उस पाप से बचने का इरादा कर ले, और अल्लाह से अपने किये हुये पाप के लिये माफ़ी चाहे । क़ुरआन और हदीस में बताया गया है कि बस इतना करने से अल्लाह उस बन्दे से राज़ी हो जाता

है और उसका पाप माफ़ कर दिया जाता है ।

याद रखना चाहिये कि तौबह केवल ज़बान से नहीं होती बल्कि किये हुये गुनाह पर दिल से शर्मिन्दा और दुखी होना ज़रूरी है और आइन्दा फिर कभी उस पाप के न करने का इरादा भी दिल से होना ज़रूरी है ।

तौबह की मिसाल बिल्कुल ऐसी है कि कोई आदमी ग़ुस्से या रन्ज की हालत में आत्महत्या की इच्छा से ज़हर (विष) खाले और जब उसके असर से आंतें कटने लगें और बहुत तकलीफ़ होने लगे तो उसे अपनी इस ग़लती पर दुख और पछतावा हो और वह दवा के लिये तड़पे, और वैद्य, हकीम और डाक्टर जो दवा बताये वही पिये, उस वक़्त उसके दिल का फ़ैसला निश्चित रूप से यही होगा कि अगर मैं ज़िन्दा बच गया तो अब कभी ऐसी बेवक़ूफ़ी नहीं करूंगा । बस पाप से तौबह करने वाले के दिल की हालत ऐसी ही होनी चाहिये, यानी अल्लाह तआला की नाराज़ी और आख़िरत के अज़ाब का ख़्याल करके उसको अपने पाप करने पर बहुत रन्ज और दुख हो, और आइन्दा के लिये उस समय उसके दिल का फ़ैसला यही हो कि अब कभी ऐसा नहीं करूंगा, और जो कुछ हो चुका है उसके लिये अल्लाह तआला से माफ़ी की दुआ हो ।

यदि अल्लाह तआला किसी दर्जे में यह बात नसीब फ़रमादे तो यक़ीन रखना चाहिये कि गुनाह का असर बिल्कुल मिट गया और अल्लाह की रहमत का दरवाज़ा खुल गया । ऐसी तौबह के बाद गुनाह करने वाला गुनाह के असर से बिल्कुल पाक साफ़ हो जाता है, बल्कि अल्लाह तआला को पहले से ज़्यादह प्यारा हो जाता है, और कभी कभी तो गुनाह के बाद सच्ची तौबह के ज़रिये बन्दा उस दर्जे पर पहुंच जाता है जिस पर सैकड़ों साल की इबादत और रियाज़त (तपस्या) से भी पहुंचना कठिन होता है ।

यहां तक जो कुछ लिखा गया है वह सब आयतों और हदीसों का मज़्मून है । अब कुछ आयतें और हदीसें भी तौबह व इस्तिग़फ़ार के बारे में लिखी जाती हैं । सूरए "तहरीम" में है :-

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تُوبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَصُوحًا عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يُكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ

याअय्युहल लज़ी न आमनू तूबू इलल्लाहि तौ बतन नसूहा असा रब्बुकुम अँयुकफ़्फ़ि र अन्कुम सय्यिआ तिकुम वयुद ख़ि ल कुम जन्नातिन तजरी मिन तहतिहल अनहार (तहरीम रूकू -२)

ऐ ईमान वालो ! तौबह करो अल्लाह से सच्ची तौबह, उम्मीद है कि तुम्हारा मालिक (इस तौबह के बाद) मिटा देगा तुम्हारे गुनाह और दाख़िल कर देगा तुमको जन्नत के उन बाग़ीचों में जिनके नीचे नहरें बहती हैं ।

और सूरए "माइदह" में गुनाहगार और अपराधी बन्दों के बारे में फ़रमाया गया है ।

أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَهُ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ

अ फ़ला यतूबू न इलल्लाहि व यसतग़फ़िरू नहू वल्लाहु ग़फ़ूरुर रहीम (सूरए माइदह रूकू-१०)

वह अल्लाह से तौबह क्यों नहीं करते और माफ़ी क्यों नहीं मांगते और अल्लाह तो बड़ा माफ़ करने वाला, बड़ा मेहरबान है ।

और सूरए अनआम में कैसा प्यारा इरशाद है :-

وَإِذَا جَاءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِنَا فَقُلْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ ۖ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۖ أَنَّهُ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَصْلَحَ فَأَنَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ

वइज़ा जाअकल्लज़ी न यूमिनू न बिआयातिना फ़क़ुल सलामुन अलैकुम क त ब रब्बुकुम अला नफ़सिहिर रह म त अन्नहू मन अमि ल मिनकुम सूअम बिजहा लतिन सुम्म ता ब मिम्बादिही व अस ल ह फ़अन्नहू ग़फ़ूर्रुहीम । (सूरए अनआम रूकू-६)

और ऐ नबी ! जब तुम्हारे पास आयें हमारे वह बन्दे जो ईमान रखते हैं हमारी आयतों पर तो तुम कहो उनसे कि सलाम हो तुम पर, तुम्हारे रब ने मुक़र्रर किया है अपने आप पर दया करना । जो कोई तुम में से गुनाह का काम करे भूल कर, फिर तौबह करले उसके बाद और सुधार ले अपने अमल (जीवन व्यवस्था) तो अल्लाह माफ़ करने वाला बड़ा मेहरबान है ।

अल्लाह पाक की शाने रहमत पर क़ुर्बान जाइये कि उन्होंने तौबह का दरवाज़ा खोल कर हम जैसे गुनाहगारों का मसअला आसान कर दिया नहीं तो हमारा कहां ठिकाना था । इन आयतों के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

की कुछ हदीसें भी सुन लीजिये । मुस्लिम शरीफ़ में एक लम्बी हदीस ए- क़ुदसी है उसका एक टुकड़ा यह है:-

"अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि ऐ मेरे बन्दो ! तुम दिन रात ख़तायें (अपराध) करते हो और मैं सब गुनाह माफ़ कर सकता हूं, इस लिये तुम मुझ से माफ़ी और बख़्शीश मांगो, मैं तुम्हें माफ़ कर दूंगा" ।

एक हदीस में है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :-

"अल्लाह तआला हर रात को अपनी रहमत और मग़फ़िरत का हाथ बढ़ाता है कि दिन के गुनाहगार तौबह कर लें, और हर दिन को हाथ बढ़ाता है कि रात के गुनाह करने वाले तौबह कर लें, और अल्लाह का यह मामला उस वक़्त तक जारी रहेगा जब तक कि क़यामत के क़रीब सूरज पश्चिम की तरफ़ से निकले" ।

एक हदीस में है कि हुज़ूर (स०) ने बयान फ़रमाया कि :-

"अल्लाह के एक बन्दे ने कोई गुनाह किया, फिर अल्लाह से अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब ! मैंने गुनाह किया मुझे माफ़ कर दे, तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मेरा बन्दा जानता है कि उसका कोई रब है जो गुनाहों पर पकड़ भी कर सकता है और माफ़ भी कर सकता है । मैंने अपने बन्दे का गुनाह बख़्श दिया, फिर जब तक अल्लाह ने चाहा वह गुनाह से रुका रहा और फिर किसी वक़्त गुनाह कर बैठा और फिर अल्लाह से अर्ज़ किया मेरे मालिक मुझसे गुनाह हो गया तू उसको माफ़ कर दे, तो अल्लाह तआला ने फिर फ़रमाया, मेरा बन्दा जानता है कि उसका कोई मालिक है जो गुनाह माफ़ करता है और पकड़ भी सकता है, मैंने अपने बन्दे का गुनाह माफ़ कर दिया, फिर जब तक अल्लाह ने चाहा बन्दा रूका रहा और किसी वक़्त फिर कोई गुनाह कर बैठा और फिर अल्लाह से अर्ज़ किया कि ऐ मेरे मालिक मुझसे फिर गुनाह हो गया आप मुझे माफ़ कर दीजिये, तो अल्लाह ने फिर फ़रमाया कि मेरे बन्दे को यक़ीन है कि उसका कोई मालिक व मौला है, जो गुनाह माफ़ भी करता है और सज़ा भी दे सकता है, मैंने अपने बन्दे को माफ़ कर दिया वह जो चाहे करे" ।

एक हदीस में है :-

"गुनाह से तौबह करने वाला बिल्कुल उस आदमी की तरह हो जाता है जिसने वह गुनाह किया ही न हो" ।

इन हदीसों में अल्लाह की माफ़ करने की शान और उसकी रहमत का बयान

है । ऐसी हदीसों को सुनकर गुनाहों पर ढीठ हो जाना यानी तौबह और मग़फ़िरत के भरोसे पर और ज़्यादा गुनाह करने लगना मोमिन का काम नहीं है । मग़फ़िरत और रहमत की इन आयतों और हदीसों से तो अल्लाह की मुहब्बत बढ़ना चाहिये और यह सबक़ लेना चाहिये कि ऐसे रहीम और रहमान आक़ा का कहना नहीं मान्ना तो बड़ा ही कमीनापन है । ज़रा सोचो कि अगर किसी नौकर का मालिक उसके साथ बहुत ही शफ़क़त और नर्मी का बरताव करे तो क्या उस नौकर को और भी ज़्यादा ढीठ होकर नाफ़रमानी करनी चाहिये ?

असल में इन आयतों और हदीसों का मक़सद तो सिर्फ़ यह है कि किसी मोमिन बन्दे से अगर गुनाह हो जाये तो वह अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद और मायूस न हो बल्कि तौबह करके उस गुनाह के धब्बे धो डाले और अल्लाह से माफ़ी मांगे, अल्लाह तआला अपनी मेहरबानी से उसको माफ़ कर देंगे और बजाए नाराज़ी और ग़ुस्से के और ज़्यादा ख़ुश होंगे ।

एक हदीस में है, रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया :-

"बन्दा जब गुनाह करने के बाद अल्लाह तआला की तरफ़ लौटता है और सच्चे दिल से तौबह करता है तो अल्लाह उसकी तौबह से उस आदमी से भी कहीं ज़्यादा ख़ुश होता है जिसकी सवारी का जानवर किसी लम्बे चौड़े मैदान में उससे छूटकर भाग जाये और उसी पर उसके खाने पीने का सामान लदा हुआ हो, और वह अपने भागे हुये जानवर से निराश होकर मौत के इन्तेज़ार में किसी पेड़ के साये में लेट जाये फिर उसी हालत में वह अचानक देखे कि उसका वह जानवर अपने पूरे सामान के साथ सामने खड़ा है और वह उसको पकड़ ले और फिर बेहद ख़ुशी और मस्ती में उसकी ज़बान से निकल जाये कि ऐ अल्लाह बस तू मेरा बन्दा और मैं तेरा रब[1] हूं, तो हुज़ूर फ़रमाते हैं कि जितनी ख़ुशी उसको अपनी सवारी के जानवर को फिर से पाकर होगी, अल्लाह तआला को अपने गुनाहगार बन्दे की तौबह से उससे भी ज़्यादा ख़ुशी होती है" ।

इन आयतों और हदीसों के मालूम होजाने के बाद भी जो आदमी गुनाहों से तौबह करके अल्लाह की रज़ामन्दी और रहमत हासिल न करे वह बिला शुबह बड़ा बदनसीब और महरूम है ।

---

1. अर्थ यह है कि उस बन्दे को इतनी ज़्यादा ख़ुशी हो कि ज़्यादा ख़ुशी में उसकी ज़बान बहक जाये और जो बात कहना चाहे उसका उलटा निकल जाये ।

बहुत से लोग इस ख़्याल से तौबह में जल्दी नहीं करते कि अभी क्या है अभी तो हमारी आयु कोई ज़्यादा नहीं है और अभी तो हम तन्दुरूस्त हैं, मरने से पहले कभी तौबह कर लेंगे । भाईयो ! हमारे तुम्हारे दुश्मन शैतान का यह बहुत बड़ा धोखा है, वह जिस तरह ख़ुद अल्लाह की रहमत से दूर और जहन्नमी हो गया उसी तरह हमको भी अपने साथ रखना चाहता है । किसी को मालूम नहीं कि उसकी मौत कब आ पहुंचेगी, इसलिये हर दिन को यह समझो कि शायद आज ही का दिन हमारी ज़िन्दगी का आख़िरी दिन हो, इसलिये जब कोई गुनाह हो जाय तो जल्दी से जल्दी तौबह कर लेना ही अक़लमन्दी है ।

क़ुरआन पाक में साफ़ साफ़ फ़रमाया गया है :-

إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِن قَرِيبٍ فَأُولَٰئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ حَتَّىٰ إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي تُبْتُ الْآنَ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كُفَّارٌ ۚ أُولَٰئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا

इन्नमत्तौ बतु अलल्लाहि लिल्लज़ी न या मलू नस्सू अ बिजहा लतिन सुम्म यतूबू न मिन क़रीबिन फ़उलाई क यतूबुल्लाहु अलैहिम व कानल्लाहु अलीमन हकीमा । वलै सतित तौबतु लिल्लज़ी न या मलू नस्सय्यि आति हत्ता इज़ा ह ज़ र अ ह दहुमुल मौतु क़ा ल इन्नी तुबतुलआ न वलल्लज़ी न यमूतू न वहुम कुफ़्फ़ार । उलाइ क आतदना लहुम अज़ाबन अलीमा ।

केवल उन लोगों की तौबह क़ुबूल करना अल्लाह ने अपने ज़िम्मे लिया है जो अनजाने में या भूल से गुनाह कर बैठते हैं और फिर जल्दी ही तौबह कर लेते हैं तो उनको अल्लाह माफ़ करता है और उनकी तौबह क़ुबूल करता है, और अल्लाह सब जानने वाला है और हिकमत वाला है । उन लोगों की कुछ तौबह नहीं जो (ढिठाई से) लगातार गुनाह के काम करते रहते हैं, यहां तक कि जब उनमें से किसी के बिल्कुल सामने मौत आ जाती है तो वह कहता है कि अब मैंने तौबह की (तो ऐसों की तौबह क़ुबूल नहीं) और न उनकी तौबह क़ुबूल होगी जो कुफ़्र की हालत में मरते हैं, उन सब के लिये हमने तैयार किया है दर्दनाक अज़ाब ।

इसलिये जो सांस चलती है उसको हम ग़नीमत (दिव्य) समझें और तौबह करने में, और अपनी हालत ठीक करने में बिल्कुल देर न करें, मालूम नहीं मौत किस वक़्त आ पहुंचे और उस समय हमको तौबह की तौफ़ीक़ भी मिले या न मिले ।

भाईयो ! हमने और आपने अपनी उम्र में सैकड़ों को मरते देखा है, और हमारा आपका आम तजुरबा भी यही है कि जो जिस हालत में ज़िन्दगी गुज़ारता है उसी हालत में उसकी मौत भी होती है, यानी ऐसा नहीं होता कि एक व्यक्ति ज़िन्दगी भर अल्लाह को भूला हुआ रहे, उसकी नाफ़रमानी करता रहे, लेकिन मरने से एक दो दिन पहले वह तौबह करके नेक और वली हो जाये, इसलिये जो आदमी चाहता है कि नेकी की हालत में मरे उसके लिये ज़रूरी है कि वह ज़िन्दगी ही में नेक बन जाये, अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी कृपा से उम्मीद है कि उसका ख़ात्मा (अन्त) अवश्य अच्छा होगा और क़यामत में नेकों के साथ उसका हिसाब होगा ।

तौबह के बारे मे एक ज़रूरी बात :-

बंदा अगर किसी गुनाह से तौबह कर ले और फिर उससे वही गुनाह हो जाय तो भी अल्लाह की रहमत से कभी निराश न हो बल्कि फिर तौबह कर ले, और फिर टूटे तो फिर तौबह कर ले, इस तरह अगर सैकड़ों हज़ारों बार भी उसकी तौबह टूटे तो भी नाउम्मीद न हो, जब भी वह सच्चे दिल से तौबह करेगा अल्लाह तआला का वादा है कि वह उसकी तौबह क़ुबूल कर लेंगे और उसको माफ़ करते रहेंगे । अल्लाह तआला की रहमत और जन्नत बड़ी वसी (विस्तृत) है ।

तौबह व इसतिग़फ़ार के कलिमात :-

तौबह और इसतिग़फ़ार की जो हक़ीक़त ऊपर बयान की गई है, यह तो आपने उसी से समझ लिया होगा कि बन्दा जिस भाषा में और जिन शब्दों में भी अल्लाह तआला से तौबह करे और माफ़ी चाहे अल्लाह तआला उसका सुनने वाला और क़ुबूल करने वाला है लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने साहब-ए-किराम को तौबह व इसतिग़फ़ार के कुछ ख़ास कलिमात की भी तालीम दी थी और हुज़ूर (स०) ख़ुद भी उनको पढ़ा करते थे । कोई सन्देह नहीं कि वह कलिमात बहुत ही बरकत वाले और बहुत क़ुबूल होने वाले और अल्लाह

को बहुत ही प्यारे हैं । उनमें से कुछ हम यहां भी दर्ज करते है । आप इनको याद कर लीजिये और इनके द्वारा तौबह व इसतिग़फ़ार किया कीजिये :-

१

أَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ -

असतग़ फ़िरुल्लाहिल्लज़ी ला इला ह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूमु व अतूबु इलैहि

मै माफ़ी और बख़शिश मांगता हूँ उस अल्लाह से जिसके अलावा कोई माबूद नही, वह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला और सृष्टि को थामने वाला है और मैं तौबह करता हूँ उसकी तरफ़

हदीस शरीफ़ में है कि :-

"जो शख़्स अल्लाह से इस कलिमे के द्वारा तौबह व इसतिग़फ़ार करेगा अल्लाह तआला उसके गुनाह माफ़ कर देगा, यदि उसने जिहाद (धार्मिक युद्ध) के मैदान में से भागने का ही गुनाह किया हो, जो अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ा गुनाह है" ।

एक और हदीस में है कि :-

"जो व्यक्ति रात के सोते वक़्त तीन बार इस कलिमे के द्वारा अल्लाह से तौबह व इसतिग़फ़ार करे तो अल्लाह तआला उसके सब गुनाह माफ़ कर देगा चाहे वह समुद्र के झाग के बराबर क्यों न हों"

२

हुज़ूर (स०) कभी कभी केवल अस तग़फ़िरुल्लाह (मैं अल्लाह से माफ़ी मांगता हूं) असतग़ फ़िरुल्लाह (मैं अल्लाह से मुक्ति मांगता हूं) भी पढ़ा करते थे । यह बहुत मुख़्तसर (संक्षिप्त) इसतिग़फ़ार है । इसको हर वक़्त ज़बान पर जारी रहने की आदत डाल लेनी चाहिये ।

सय्यदुल इसतिग़फ़ार :-

हदीस शरीफ़ में है रसूल (स०) ने फ़रमाया कि सय्यदुल इसतिग़फ़ार यह है :-

اَللّٰهُمَّ أَنْتَ رَبِّيْ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَأَنَا عَبْدُكَ وَأَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَ
وَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ أَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ

عَلَيَّ وَأَبُوْءُ بِذَنْبِيْ فَاغْفِرْ لِيْ فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلَّا أَنْتَ

अल्ला हुम्मा अन त रब्बी ला इला ह इल्ला अन त ख़लक़ तनी व अना अब्दु क व अना अला अह दि क ववादि क मस तताातु अऊज़ु बि क मिन शर्रिमा सनातु अबूउ ल क बिनी मति क अलै य व अबूउ बिज़म्बी फ़ग़फ़िरली इन्नहू ला यग़ फ़िरुज़्ज़ुनू ब इल्ला अन त ।

ऐ अल्लाह ! तू मेरा रब है । तेरे सिवा कोई माबूद नहीं । तूने मुझे पैदा किया और मैं तेरा ही बन्दा हूं, और जहां तक मुझ से हो सका मैं तेरे एहद (प्रण) और वादे पर जमा हुआ हूं, मैंने जो बुरे काम किये मैं उनकी बुराई से तेरी पनाह (शरण) चाहता हूं, मैं अपने ऊपर तेरे उपकारों का इक़रार करता हूं और अपने गुनाहों को क़ुबूल करता हूं (अत :) तू मुझे माफ़ कर दे, गुनाहों को तेरे सिवा कोई माफ़ नहीं कर सकता" ।

हुज़ूर सल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि :-

"जो बन्दा इस कलिमे के द्वारा इसके विषय के ध्यान और यक़ीन के साथ दिन में अल्लाह तआला से माफ़ी मांगे, और उस दिन वह रात के शुरू होने से पहले मर जाये तो वह जन्नत ही में जायेगा, और जो बन्दा इसी तरह इस कलिमे के विषय के ध्यान और यक़ीन के साथ रात में इस कलिमें के द्वारा अपने गुनाहों की माफ़ी मांगे और सवेरा होने से पहले उसी रात में मर जाय तो वह जन्नती होगा" ।

यहां इसतिग़फ़ार के सिर्फ़ यह तीन कलिमे नक़ल किये गये हैं जिनको याद कर लेना कुछ भी कठिन नहीं है । हदीस शरीफ़ में है कि :-

"ख़ुश ख़बरी हो और मुबारक हो उस आदमी को जिसके आमालनामे में इसतिग़फ़ार ज़्यादा दर्ज हो" ।

एक दूसरी हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :-

"जो बन्दा इसतिग़फ़ार को अपनाले (अर्थात अल्लाह तआला से अपने गुनाहों की माफ़ी मांगता रहे) उसको अल्लाह तआला हर मुशकिल से निजात देंगे और उसकी हर परेशानी और हर कष्ट दूर कर देंगे और उसको (अपने ग़ैब के ख़ज़ाने से) इस तरह रोज़ी देंगे जिसका ख़ुद उसको गुमान और अनुमान भी न होगा" ।

ख़ातिमह

अल्लाह को ख़ुश करने और जन्नत पाने का आसान निसाब (पाठ्यक्रम)

इस छोटी सी किताब के बीस पाठों में जो कुछ आ गया है उसपर अमल करना अल्लाह को राज़ी करने और जन्नत पाने के लिये इनशा अल्लाह बिलकुल काफ़ी है। अन्त में उचित मालूम होता है कि उसका ख़ुलासा एक बार फिर लिख दिया जाये।

इस्लाम की सबसे पहली शिक्षा और अल्लाह की ख़ुशनूदी (प्रसन्नता) और जन्नत हासिल होने की पहली शर्त यह है कि कलिम-ए- लाइला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि पर आदमी ईमान लाये (जिसकी तफ़सील पहले सबक़ में आ चुकी है) फिर ज़रूरत के मुताबिक़ दीन के हुक्मों को जानने और सीखने की फ़िक्र करे, फिर कोशिश करे कि अल्लाह के फ़राइज़ और बन्दों के हुक़ूक़ और अदाब व अख़लाक़ के बारे में इस्लाम की जो तालीमात और अल्लाह तआला के जो एहकाम (आदेश) हैं उनको माने और उन पर चले और जब कभी छूट जाये या उसके ख़िलाफ़ बात हो जाये तो सच्चे दिल से अल्लाह से तौबह करे और माफ़ी मांगे और आइन्दा के लिये अपने सुधार की कोशिश करे और अगर किसी बन्दे का कोई क़ुसूर हो जाये और उसपर कोई ज़्यादती हो जाये तो उससे माफ़ी मांगे, या उसका बदला देकर हिसाब चुकता करे।

इसी तरह कोशिश करे कि दुनिया की हर चीज़ से ज़्यादा मुहब्बत अल्लाह की, अल्लाह के रसूल की और उसके दीन की हो, और हर हालत में पूरी मज़बूती के साथ दीन पर जमा रहे और दीन की तरफ़ बुलाने और दीन की सेवा करने में ज़रूर कुछ हिस्सा ले। यह बहुत बड़ी ख़ुशक़िस्मती और पैग़म्बरों की ख़ास विरासत है, और खास तौर पर इस ज़माने में इसका दर्जा दूसरी नफ़्ली इबादतों से कहीं ऊंचा है, इसकी बरकत से ख़ुद अपना ताल्लुक़ भी दीन और अल्लाह व रसूल से बढ़ता है।

नवाफ़िल में अगर हो सके तो तहज्जुद की नमाज़ की आदत डालने की कोशिश करे (तहज्जुद की नमाज़ आधी रात के बाद से सुबह सादिक़ तक दो से बारह

रकात तक पढ़ी जाती है) तहज्जुद की बरकतें बहुत और असीम हैं।

सारे गुनाहों और ख़ासकर गुनाहे कबीरा (महापापों) से बचता रहे, जैसे बलात्कार, चोरी, झूठ, शराबख़ोरी, व्यवहार में बेईमानी आदि। रोज़ाना कुछ ज़िक्र की भी आदत डाल ले। अगर ज़्यादा समय नहीं मिलता हो तो कम से कम इतना ही करे कि सुबह और शाम को सौ बार कलिम-ए- तमजीद

سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ

सुबहानल्लाहि वल हम्दु लिल्लाहि वलाइलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर। या सिर्फ़

سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ

सुबहानल्लाहि व बिहमदिही

और इसतिग़फ़ार

اَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ

(असतग़फिरुल्ला हल्लज़ी ला ईला ह इल्ला हुवल हय्युल कययूमु व अतूबू इलाहि या सिर्फ़ असतग़फ़िरूल्लाह असतग़फ़िरुल्लाह)

اَسْتَغْفِرُ اللهَ ، اَسْتَغْفِرُ اللهَ -

और दुरूद शरीफ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِ نِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ وَاٰلِهٖ -

अल्लहुम्म सल्लि अला सय्यिदना मुहम्मदि निन्नबीयिल उम्मीय व आलिही

सौ सौ बार पढ़ लिया करे

कुछ क़ुरआन शरीफ़ रोज़ाना पढ़ने की भी आदत डाल ले और पूरे अदब और अल्लाह की बड़ाई को ध्यान में रखकर पढ़ा करे। हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद और सोते वक़्त तसबीहात ए- फ़ातिमह[1] पढ़ा करे।

---

१. तसबीहात -ए- फ़ातिमह:- सुबहानल्लाह ३३ बार, अलहम्दु लिल्लाह ३३ बार और अल्लाहु अकबर ३४ बार।

जो लोग इससे अधिक करना चाहें वह अल्लाह के किसी ऐसे बन्दे से सलाह लें जो इस बारे में ज़्यादा जानकारी रखता हो, और इसके योग्य हो। आख़िरी बात इस सम्बन्ध में यह है कि अल्लाह के ''सालेह'' (नेक तथा प्रिय) बन्दों से ताल्लुक़ और मुहब्बत और उनका साथ इस राह में अकसीर (पारस) है। यदि यह मिल जाये तो बाक़ी चीज़ें आपसे आप पैदा हो जाती हैं। अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे और सहायता करे।

रोज़ाना पढ़ने के लिये क़ुरआन शरीफ़ व हदीस की चालीस दुआयें।

यह वही चालीस दुआयें हैं जिनका संकेत अठारहवें सबक़ के आख़िर में दिया गया है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिसमिल्ला हिर रहमा निर रहीम

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला है।

[१]

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۝ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝ اٰمِيْن

अल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ लमीन। अर रहमा निर रहीम।
मालिकि यौमिद्दीन। ईयूया क नाबुदु वईयूया क नस तईन।
इह दिनस्सिरातल मुस तक़ीम। सिरा तल्लज़ी न अन अम
त अलैहिम ग़ैरिल मग़ ज़ूबि अलैहिम वलज़ ज़ाल लीन।
(आमीन)।

सारी तारीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं- जो सारे संसार का रब (पालनहार) है। बहुत रहमत वाला बड़ा मेहरबान है। क़यामत के दिन का मालिक है। ऐ अल्लाह हम तेरी ही इबादत करते हैं और केवल तुझसे ही सहायता चाहते हैं। तू हम को सीधे रास्ते पर चला। उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने इनाम किया। उनका नहीं जिनपर तेरा ग़ज़ब (क्रोध) हुआ। न उनका जो रास्ते से भटक गये (ऐ अल्लाह हमारी यह दुआ क़ुबूल फ़रमा)

[२]

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

रब्बना आतिना फ़िद् दुनया ह स नतौं वफ़िल आख़िरति ह स नतौं व क़िना अज़ाबन्नर ।

ऐ हमारे रब ! हमको दुनिया में भी भलाई दे और आख़िरत में भी भलाई दे और दोज़ख़ के अज़ाब से हमको बचा ।

[३]

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

रब्बना इन्न ना आमन्ना फ़ग़फ़िर लना ज़ुनूबना व क़िना अज़ाबन्नार ।

ऐ हमारे रब हम ईमान लाये, इसलिये तू हमारे सब गुनाह माफ़ कर दे और दोज़ख़ के अज़ाब से हमको बचा ।

[४]

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ اِسْرَافَنَا فِىْٓ اَمْرِنَا وَ ثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ

रब्बनग़ फ़िर लना ज़ुनूबना व इसराफ़ना फ़ी अमरिना व सब्बित अक़दा मना वनसुरना अलल क़ौमिल काफ़िरीन ।

ऐ हमारे रब ! हमारे गुनाह माफ़ कर दे, और हमसे हमारे कामों में जो ग़लतियां और ज़्यादतियां हुईं उन्हें माफ़ कर दे, और हक़ (सत्य) पर हमारे पांव जमा दे, और कुफ़्र करने वालों के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा ।

[५]

رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِىْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَ كَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ۚ رَبَّنَا وَ اٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ

रब्बना इन्नना समेना मुना दियैं युनादी लिल ईमानि अन आमिनू बिरब्बिकुम फ़ आमन्ना रब्बना फ़ाफ़िर लना ज़ुनूबना व कफ़्फ़िर अन्ना सय्यिआतिना व तवफ़्फ़ना मअल अबरार । रब्बना व आतिना मा व अत्तना अला रुसुलि क वला तुख़ज़िना यौमल क़ियामह । इन्न क ला तुखलिफ़ुल मीआद ।

ऐ हमारे रब ! हमने एक पुकारने वाले को ईमान का बुलावा देते हुये सुना (कि लोगो अपने परवरदिगार पर ईमान लाओ) तो हम ईमान ले आये । तो ऐ हमारे रब ! हमारे गुनाह माफ़ कर दे, और हमारी बुराइयां मिटा दे, और अपने सच्चे बन्दों के साथ हमारा अंत कर । ऐ ख़ुदा ! हमको वह सब कुछ दे जिसका अपने पैग़म्बरों द्वारा तूने वादा किया, और क़यामत के दिन हमको रुस्वा (अपमानित) न कर, तेरा वादा ख़िलाफ़ नहीं होता ।

[६]

رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ۚ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ

रब्बना ज़लम्ना अनफ़ुसना व इल्लम तग़फ़िर लना व तरहमना ल न कूनन न मिनल ख़ासिरीन ।

ऐ हमारे रब ! (तेरी नाफ़रमानी करके) हमने अपने ही ऊपर बड़ा ज़ुल्म किया है, यदि तूने हमको माफ़ न किया तो हम असफ़ल और बरबाद ही हो जायेंगे ।

[७]

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۙ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ

रब्बना ला तजअलना फ़ित नतल लिल क़ौमिज़्ज़ालिमीन व नज्जिना बि रह मति क मिनल क़ौमिल काफ़िरीन ।

ऐ हमारे रब ! तू हमको ज़ालिम क़ौम के ज़ुल्म का निशाना न बना, और अपनी रहमत से हमको काफ़िरों के ज़ुल्म से बचाये रख ।

[८]

فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۟ اَنْتَ وَلِىّٖ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِىْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِىْ بِالصّٰلِحِيْنَ

फ़ातिरस्समा वाते वल अर्ज़ी अन त वलीयी फ़िद्दुनया वल आख़िरति तवफ़्फ़नी मुसलिमौं व अल हिक़्नी बिस्सालिहीन ।

ऐ ज़मीन व आसमान के पैदा करने वाले ! दुनिया और आख़िरत में सिर्फ़ तू ही मेरा वाली (नाथ) है । इस्लाम पर मुझे मौत दे, और अपने सच्चे बन्दों के साथ मुझे शामिल फ़रमा ।

[९]

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ۝
رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ۝

रब्बिज अल नी मुक़ीमस्सलाति व मिन ज़ुर्री यती रब्बना व तक़ब्बल दुआ । रब्बनग़ फ़िरली वलि वालिदैय्या वलिल मोमिनी न यौ म यक़ूमुल हिसाब ।

ऐ मेरे रब ! मुझको और मेरी संतान को नमाज़ का क़ायम (स्थापित) करने वाला बना दे । ऐ ख़ुदा हमारी दुआ क़ुबूल कर ले । मेरे मालिक ! मुझे और मेरे माता पिता को और सब ईमान वालों को बख़्श दे, जिस दिन कि हिसाब किताब हो ।

[१०]

رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِي صَغِيرًا ط

रब्बिर्हम हुमा कमा रब्बयानी सग़ीरा ।

मेरे रब ! मेरे माता पिता पर रहम कर जैसा कि उन्होंने मुझे प्यार से पाला जब कि मैं नन्हा सा था ।

[११]

رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا

रब्बि ज़िदनी इलमा ।

मेरे रब ! मेरे इल्म में इज़ाफ़ा (ज्ञान में वृद्धि) कर और बरकत फ़रमा ।

[१२]

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِينَ

रब्बिग़फ़िर वरहम व अन त ख़ैरुर्राहिमीन ।

ऐ मेरे रब ! माफ़ कर, और रहम कर तू सबसे अच्छा रहम करने वाला है ।

[१३]

رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَأَنْ
أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي
مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝

रब्बि औज़ेनी अन अश कु र ने मति क ल्लती अनअम त अलै य व अला वालि दई य व अन आ म ल सालिहन तर ज़ाहु व अस लिह ली फ़ी ज़ुर्रीयति इन्नी तुब्तु इलै क व इन्नी मिनल मुसलिमीन ।

ऐ मेरे परवरदिगार ! तू मुझ को तौफ़ीक़ दे कि मैं उन नेमतों पर तेरा शुक्र अदा करूं जो तूने मुझको और मेरे माता पिता को प्रदान कीं और ऐसे काम करूं जिनसे तू ख़ुश हो, और मेरे वास्ते मेरी संतान में भी योग्यता और नेकी दे, मैं ने तेरे हुज़ूर में तौबह की और मैं तेरे हुक्म मानने वालों में से हूं ।

[१४]

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ
فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ

रब्बनग़ फ़िर लना वलि इख़वा निनल्लज़ी न स ब क़ूना बिल ईमानि वला तजअल फ़ी क़ुलूबिना ग़िल्लल लिल्लज़ी न आमनू रब्बना इन्न क रऊफ़ुर्रहीम ।

ऐ हमारे रब ! हमको और हमारे उन भाईयों को भी बख़्श दे जो ईमान के साथ हमसे आगे गये, और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिये कोई खोट न पैदा कर । ऐ मेरे परवरदिगार ! तू बड़ा मेहरबान और बड़ी रहमत वाला है ।

[१५]

رَبَّنَا أَتْمِمْ لَنَا نُورَنَا وَاغْفِرْ لَنَا إِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

रब्बना अतमिम लना नू रना वग़फ़िर लना इन्न क अला कुल्लि शैइन क़दीर ।
ऐ हमारे परवरदिगार ! हमारे लिये नूर (ज्योति) की तकमील फ़रमा और हमको बख़्श दे, तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है ।

यहां तक तो क़ुरआन मजीद की दुआयें थीं । अब आगे हदीसों **से ली गई** दुआयें दर्ज की जा रही हैं ।

[१६]

يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ اَصْلِحْ لِي شَانِيْ كُلَّهُ

या हय्यु या क़य्यूमु बिरह मति क अस तग़ीसु असलिह ली शानी कुल्लह ।
ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले और सबको थामने वाले ! तेरी रहमत से मेरी फ़र्याद (प्रार्थना) है, तू मेरा सब हाल सुधार दे ।

[१७]

اَللّٰهُمَّ اَصْلِحْ لِي دِيْنِيَ الَّذِيْ هُوَ عِصْمَةُ اَمْرِيْ وَاَصْلِحْ لِي دُنْيَايَ الَّتِيْ فِيْهَا مَعَاشِيْ وَاَصْلِحْ لِي آخِرَتِيَ الَّتِيْ فِيْهَا مَعَادِيْ وَاجْعَلِ الْحَيَاةَ زِيَادَةً لِّيْ فِيْ كُلِّ خَيْرٍ وَاجْعَلِ الْمَوْتَ رَاحَةً لِّيْ مِنْ كُلِّ شَرٍّ۔

अल्ला हुम्म असलिह ली दीनि यललज़ी हुव इस्मतु अमरी व असलिह ली दुनया यल्लती फ़ीहा मआशी व असलिह ली आख़िरति यल्लती फ़ीहा मआदी वज अलिल हया त ज़ियादतन ली फ़ी कुल्लि ख़ैरिन वजअलिल मौ त राहतन ली मिन कुल्लि शर्रिन ।।
ऐ अल्लाह ! मेरे दीन का सुधार कर दे जिससे मेरा सब कुछ है । और मेरी दुनिया का सुधार कर दे जिसमें मेरे जीवन का ठाठ है । और मेरी आख़िरत संवार दे, जहां मुझे लौट कर जाना है और जहां मुझे हमेशा रहना है । और मेरे जीवन को हर भलाई और बेहतरी में तरक़्क़ी का ज़रिया (साधन) बनादे, और मौत को हर बुराई और ख़राबी से निजात

(मुक्ति) का ज़रिया बनादे ।

[१८]

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ

अल्लाहुम्म इन्नी अस अलु कल अफ़ व वल आफ़ि य त फ़िद्दुनया वल आख़िरह ।
ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से गुनाहों की माफ़ी मांगता हूं और दुनिया और आख़िरत में आराम और शान्ति मांगता हूं ।

[१९]

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ الْهُدٰى وَالتُّقٰى وَالْعَفَافَ وَالْغِنٰى

अल्लाहुम्म इन्नी अस अलु कल हुदा वत्तुक़ा वल अफ़ा फ़ वल ग़िना ।
ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे सवाल करता हूं हिदायत और परहेज़गारी का, और शर्म की बातों से बचे रहने का और ग़रीब व मोहताज न होने का ।

[२०]

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا وَرِزْقًا طَيِّبًا وَعَمَلًا مُتَقَبَّلًا

अल्लाहुम्म इन्नी अस अलु क रिज़क़न तय्येबन व इल मन नाफ़िअन व अ म लम मुतक़ब्बलन
ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे सवाल करता हूं पाक रोज़ी का, और फ़ायदा पहुंचाने वाले इल्म (ज्ञान) का और क़ुबूल होने वाले कार्य का ।

[२१]

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لَنَا اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ وَسَهِّلْ لَنَا اَبْوَابَ رِزْقِكَ

अल्लाहुम्मफ़ तह लना अबवा ब रह मति क व सहहिल लना अबवा ब रिज़्क़ि क ।
ऐ अल्लाह ! हमारे लिये अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे, और हमारे

लिये हमारी रोज़ी के रास्ते आसान कर दे ।

[२२]

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِي بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِي بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ

अल्लाहुम्मक फ़िनी बि हलालि क अन हरामि क व आ निनी बिफ़ज़्लि क अम्मन क सिवा क ।

ऐ अल्लाह ! अपनी जायज़ की हुई चीज़ों को मेरे लिये काफ़ी कर, और हराम (अवैध) से मुझे बचा, और अपनी मेहरबानी से अपने अलावा मुझको हर एक से बेनियाज़ (निःस्पृह) रख ।

[२३]

اَللّٰهُمَّ وَفِّقْنِي لِمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى وَاجْعَلْ اٰخِرَتِي خَيْرًا مِّنَ الْاُوْلٰى

अल्लाहुम्म वफ़् फ़िक् नी लिमा तुहिब्बु व तरज़ा वजअल आख़िरती ख़ैरम मिनल ऊला ।

ऐ अल्लाह ! मुझको उन बातों की तौफ़ीक़ दे जो तुझको प्रिय और पसन्द हैं, और आख़िरत को मेरे लिये दुनिया के मुक़ाबले में अच्छा बना ।

[२४]

اَللّٰهُمَّ اَلْهِمْنِي رُشْدِي وَقِنِي شَرَّ نَفْسِي

अल्लाहुम्म अलहिमनी रुशदी व क़िनी शर र नफ़सी

ऐ अल्लाह ! भलाई और नेकी की बातें मेरे दिल में डाल दे, और मन की शरारतों से मुझे बचा ।

[२५]

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّي عَلٰى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ

अल्लाहुम्म अ इन्नी अला ज़िकरि क व शुकरि क व हुसनि इबा दतिक ।

ऐ अल्लाह ! मेरी मदद कर अपने ज़िक्र अपने शुक्र और अपनी अच्छी इबादत पर, और मुझे अपना ज़िक्र और शुक्र करने वाला और अच्छा

इबादत करने वाला बन्दा बना दे ।

[२६]

يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِي عَلٰى دِيْنِكَ

या मुक़ल्लिबल क़ुलूबि सब्बित क़लबी अला दीनिक ।

ऐ दिलों के फेरने वाले ! मेरे दिल को अपने दीन (धर्म) पर मज़बूती से जमा दे ।

[२७]

اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِي مُسْلِمًا وَّ اَمِتْنِي مُسْلِمًا

अल्लाहुम्म अहयिनी मुसलिमन व अमितनी मुसलिमा ।

ऐ अल्लाह ! मुझे मुसलमान जीवित रख और इस्लाम ही पर मुझे मौत दे ।

[२८]

اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَسْئَلُكَ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يُّحِبُّكَ وَالْعَمَلَ الَّذِي يُبَلِّغُنِي حُبَّكَ

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ حُبَّكَ اَحَبَّ اِلَيَّ مِنْ اَهْلِي وَمِنْ نَفْسِي وَمِنَ الْمَاءِ الْبَارِدِ

अल्लाहुम्म इन्नी अस अलु क हुब्ब क व हुब्ब मन युहिब्बु क व हुब्ब अमलिं युक़र्रिबु इला हुब्बि क अल्लाहुम्मज अल हुब्ब क अहब्ब इलय्य मिन नफ़सी वमिन अहली व मिनल माइल बारिद ।

ऐ अल्लाह ! मुझको अपनी मुहब्बत दे, और तेरे जो बन्दे तुझसे मुहब्बत रखते हैं उनकी मुहब्बत दे, और जो काम तेरी मुहब्बत से मुझे क़रीब करें उनकी मुहब्बत दे । ऐ मेरे अल्लाह ! अपनी मुहब्बत मेरे लिये अपनी जान और अपने बाल बच्चों और ठन्डे पानी सब चीज़ों से ज़्यादा प्यारी कर दे ।

[२९]

اَللّٰهُمَّ غَشِّنِي بِرَحْمَتِكَ وَجَنِّبْنِي عَذَابَكَ

अल्लाहुम्म ग़शशिनी बिरह मति क व जन्निब्नी अज़ाबक ।

ऐ अल्लाह ! मुझ को अपनी रहमत से ढांक ले और अपने अज़ाब से बचा दे ।

[३०]

اَللّٰهُمَّ ثَبِّتْ قَدَمَىَّ يَوْمَ تَزِلُّ فِيْهِ الْاَقْدَامُ

अल्लाहुम्म सब्बित क़ द मैय्य यौ म तज़िल्लु फ़ीहिल अक़दाम ।

ऐ अल्लाह ! जमाये रख मेरे पांव को उस दिन जबकि लोगों के पांव डगमगाने लगें ।

[३१]

اَللّٰهُمَّ حَاسِبْنِىْ حِسَابًا يَّسِيْرًا

अल्ला हुम्म हासिबनी हिसाबईं यसीरा ।

ऐ अल्लाह ! क़यामत के दिन मेरा हिसाब आसानी से हो ।

[३२]

رَبِّ اغْفِرْ لِىْ خَطِيْئَتِىْ يَوْمَ الدِّيْنِ

रब्बिग़ फ़िरली ख़तीअती यौमद्दीन ।

ऐ मेरे अल्लाह ! क़यामत के दिन मेरी ग़लतियां माफ़ कर दे ।

[३३]

اَللّٰهُمَّ قِنِىْ عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ

अल्लाहुम्म क़िनी अज़ाब क यौ म तबअसु इबादक ।

ऐ अल्लाह ! मुझे अपने अज़ाब से बचा उस दिन जबकि तेरे बन्दे उठाये जायेंगे (यानी हश्र के दिन) ।

[३४]

اَللّٰهُمَّ اِنَّ مَغْفِرَتَكَ اَوْسَعُ مِنْ ذُنُوْبِىْ وَرَحْمَتَكَ اَرْجٰى عِنْدِىْ مِنْ عَمَلِىْ

अल्लाहुम्म इन्न मग़फ़ि र त क औसउ मिन ज़ुनूबी व रह म त क अर्जा इन्दी मिन अ मली ।

ऐ अल्लाह ! तेरी रहमत मेरे गुनाहों से बहुत ज़्यादा वसी (विस्तृत) है और तेरी रहमत का आसरा मुझे अपने आमाल से कहीं ज़्यादा है ।

[३५]

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ رِضَاكَ وَالْجَنَّةَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ غَضَبِكَ وَالنَّارِ

अल्लाहुम्म इन्नी असअलु क रिज़ा क वल जन्न त व अऊज़ु बि क मिन ग़ ज़ बि क वन्नार ।

ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे तेरी रज़ामन्दी और जन्नत मांगता हूं, और तेरी नाराज़ी और दोज़ख़ के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूं ।

[३६]

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ
وَاَعُوْذُبِكَ مِنْكَ لَا اُحْصِىْ ثَنَاءً عَلَيْكَ اَنْتَ كَمَا اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिरिज़ा क मिन स ख़ ति क व बि मुआफ़ाति क मिन उक़ूबति क व अऊज़ु बि क मिन क ला उहसी सनाअन अलै क अन त कमा असनै त अला नफ़सिक ।

ऐ अल्लाह ! मैं तेरी नाराज़गी से तेरी रज़ामन्दी की पनाह लेता हूं, और तेरी सज़ा से ते.ा माफ़ी की पनाह चाहता हूं, और तेरी पकड़ से तेरी ही पनाह लेता हूं । ऐ ख़ुदा ! मैं तेरी तारीफ़ बयान नहीं कर सकता, बस तू वैसा ही है जैसा तूने अपने को बताया है ।

[३७]

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِىْ وَارْحَمْنِىْ وَتُبْ عَلَىَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ

अल्लाहुम्मग़ फ़िरली वर हमनी वतुब अलइ य इन्न क अन्तत तव्वाबुर रहीम ।

ऐ मेरे अल्लाह ! मुझे बख़्श दे, मुझ पर रहम फ़रमा, और मुझ पर कृपा कर, तू बढ़ा ही कृपा करने वाला और मेहरबान है ।

[३८]

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰى عَهْدِكَ
وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ
عَلَيَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِيْ فَاغْفِرْ لِيْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ ٥

अल्लाहुम्म अन त रब्बी लाइला ह इल्ला अन त ख़लक़ तनी व अना अबदु क व अना अला अहदि क व वादि क मस ततातु अऊज़ु बि क मिन शर्रि मा सनात् अबूउ ल क बिनेमति क अलइ य व अबूउ बिज़म्बी फ़ाफ़िर ली ज़ुनूबी इन्नहू ला या फ़िरुज़्ज़ुनू ब इल्ला अन त ।

ऐ अल्लाह ! तू ही मेरा परवरदिगार है, तेरे सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, तूने ही मुझको पैदा किया और मैं तेरा ही बन्दा हूं, और जहां तक मुझ से बन पड़ा तेरे साथ इक़रार और वादे पर मैं जमा रहा। मेरे मालिक ! मैं अपने बुरे करतूतों से तेरी पनाह चाहता हूं और मैं इक़रार करता हूं तेरी नेमतों का, और क़ुबूल करता हूं अपने गुनाहों को,

ऐ मेरे अल्लाह ! मेरे गुनाह माफ़ कर दे, गुनाहों का माफ़ करने वाला तेरे सिवा कोई नहीं ।

[३९]

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ سَمْعِيْ وَمِنْ شَرِّ بَصَرِيْ وَمِنْ شَرِّ
لِسَانِيْ وَمِنْ شَرِّ قَلْبِيْ وَمِنْ شَرِّ مَنِيَّتِيْ ــــ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ
عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ
وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ

अल्लाहुम्म इन्नी आऊज़ु बि क मिन शर्रि समई वमिन शर्रि ब स री वमिन शर्रि लिसानी वमिन शर्रि क़लबी वमिन शर्रि मनीय्ययी व अऊज़ु बि क मिन अज़ाबि जहन्न म वमिन अज़ाबिल क़बीर वमिन फ़ित नतिल मसीहिद्दज्जालि व अऊज़ु बि क मिन फ़ितनतिल मह या वल ममात ।

ऐ अल्लाह !मैं तुझसे पनाह चाहता हूं अपने कानों की बुराई से, अपनी आंखों की बुराई से, अपनी ज़बान की बुराई से, अपने दिल की बुराई से, और अपनी कामुकता की बुराई से, और मैं तेरी पनाह चाहता हूं दोज़ख़ के अज़ाब से, और क़ब्र के अज़ाब से, और दज्जाल के

फ़ितने (उपद्रव) से, और तेरी पनाह चाहता हूं ज़िन्दगी और मौत के सब फ़ितनों से ।

[४०]

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَاَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)
وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)

अल्लाहुम्म इन्नी अस अलु क मिन ख़ैरि मा स अ ल क मिनहु नबीयु क मुहम्मदुन (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) वअऊज़ु बि क मिन शर्रि मस्तआ ज़ मिनहु नबीयु क मुहम्मदुन (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे वह सब भलाइयां मांगता हूं जो तुझसे तेरे नबी (स०) ने मांगीं और मैं उन बुराइयों और बुरी बातों से तेरी पनाह मांगता हूं जिनसे तेरे नबी मुहम्मद (स०) ने पनाह मांगी ।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ
وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ، اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى
اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ
حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ، اَللّٰهُمَّ اَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
وَاَبْلِغْهُ الْوَسِيْلَةَ وَالدَّرَجَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَ نِ الَّذِيْ وَعَدْتَّهٗ

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै त अला इबराही म व अला आलि इबराही म इन्न क हमीदुम मजीद । अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारक त अला इबराही म व अला आलि इबराही म इन्न कै हमीदुम मजीद । अल्लाहुम्म अनज़िलहुल मक़ अदल मुक़र्र ब इन द क यौमल क़ियामति व अबलिग़हुल वसी ल त वद द र ज त वब अस्हु मुक़ामम महमूदा निल्लज़ी वअत्तहू ।

ऐ अल्लाह ! हज़रत मुहम्मद पर और उनकी आल (सन्तान) पर रहमतें उतार जैसे कि तूने हज़रत इबराहीम पर और उनकी सन्तान पर उतारीं । ऐ अल्लाह ! हज़रत मुहम्मद पर और उनकी सन्तान पर बरकतें नाज़िल कर जैसे कि तूने हज़रत इब्राहीम पर और उनकी सन्तान पर बरकतें नाज़िल कीं, तू ही तारीफ़ के लायक़ है, बड़ाई वाला है । ऐ अल्लाह ! क़्यामत के दिन उनको अपने क़रीब ख़ास जगह में उतार, उनको "वसीलह" और "दरजह" के ऊंचे मुक़ाम (पद) तक पहुंचा, और उनको वह "महमूद" स्थान अता फ़रमा जिसका तूने उनके लिये वादा किया है ।

अल्लाह के जो बन्दे इस किताब से फ़ायदा उठायें और कभी यह दुआएं पढ़ें, उनसे इस पापी की यह प्रार्थना है कि वह अन्त में यह शब्द भी कह दिया करें:-

ऐ अल्लाह ! इस किताब के लेखक मुहम्मद मंज़ूर नोमानी और उसके माता पिता और घरवालों के लिये तथा उसके दोस्तों और उसपर एहसान करने वालों के लिये मग़फ़िरत और रहमत का फ़ैसला फ़रमा, और यह सब दुआएं उनके लिये भी क़ुबूल करले ।

आपका इस आजिज़ (तुच्छ) पर बड़ा एहसान होगा और अल्लाह तआला आपको इस एहसान का बहुत बड़ा बदला देगा, और यह बन्दा भी आपके लिये अल्लाह तआला से दुआ करेगा ।

आजिज़ व गुनाहगार बन्दा
मुहम्मद मंज़ूर नोमानी
रजब १३६८ हिजरी

ख़ास वक़्तों की ख़ास दुआयें

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बहुत सी दुआयें ख़ास वक़्तों और ख़ास अवसरों के लिये भी सिखाई हैं । उनमें से जो सरल और रोज़ाना की हैं वह यहां भी लिखी जाती हैं । ख़ुदा तौफ़ीक़ दे तो इनको याद करके मौक़े पर पढ़ने की आदत डाल लेनी चाहिये ।

१. जब सुबह हो तो कहे :-

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَصْبَحْنَا وَبِكَ اَمْسَيْنَا وَبِكَ نَحْيٰى وَبِكَ نَمُوْتُ وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ

अल्लाहुम्म बि क अस बहना व बि क अमसैना व बि क नहया व बि क नमूतु व इलैकल मसीर ।

ऐ अल्लाह ! तेरे हुक्म से हमने सुबह की, और तेरे हुक्म से शाम की, और तेरे हुक्म से हम ज़िन्दा हैं और तेरे हुक्म से मरेंगे, और तेरी ही ओर हमें लौटना है ।

२. इसी प्रकार जब शाम हो तो कहे :-

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَمْسَيْنَا وَبِكَ اَصْبَحْنَا وَبِكَ نَحْيٰى وَبِكَ نَمُوْتُ وَاِلَيْكَ النُّشُوْرُ

अल्लाहुम्म बि क अमसैना व बि क असबहना व बि क नहया व बि क नमूतु व इलैकन नुशूर ।

ऐ अल्लाह ! तेरे हुक्म से हमने सुबह की, और तेरे हुक्म से शाम की, और तेरे हुक्म से हम ज़िन्दा हैं, और तेरे हुक्म से हम मरेंगे और फिर तेरी ओर उठकर जाना है ।

३. जब सोने के लिये बिस्तर पर लेट जाये तो कहे :-

اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰى

अल्लाहुम्म बिइस्मि क अमूतु व अहया ।

ऐ अल्लाह ! मैं तेरे नाम के साथ जीना और मरना चाहता हूं ।

४. जब सोकर उठे तो कहे :-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْیَانِیْ بَعْدَ مَا اَمَاتَنِیْ وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अहयानी बा द मा अमा तनी व इलैहिन्नुशूर ।

शुक्र है अल्लाह का जिसने मुझे मौत के बाद ज़िन्दा किया और उसी की ओर उठकर जाना है ।

५. जब शौचालय जाये तो कहे :-

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَآئِثِ

बिस्मिल्लाहि अल्लहुम्म इन्नी अउज़ु बि क मिनल ख़ुबुसि वल ख़बाइस

अल्लाह के नाम से, ऐ अल्लाह ! मैं तेरी शरण लेता हूं ख़बीस (दुष्ट) पुरूषों और स्त्रियों से ।

६. जब शौचालय से निकले तो कहे :-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ

अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़्ह ह ब अन्निल अज़ा व आफ़ानी ।

शुक्र है उस अल्लाह का जिसने दूर कर दी मुझसे गंदगी और मुझे शान्ति दी ।

७. फिर वुज़ू करे तो आरम्भ में बिस्मिल्लाह पढ़े और वुज़ु के बीच में यह दुआ पढ़ता रहे :-

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ وَوَسِّعْ لِیْ فِیْ دَارِیْ وَبَارِكْ لِیْ فِیْ رِزْقِیْ

अल्लाहुम्मग़ फ़िरली ज़म्बी व वस्से ली फी दारी व बारिकली फ़ी रिज़्क़ी ।

ऐ अल्लाह ! मेरे गुनाह बख़्श दे और मेरे लियें मेरे घर में वुसअत (विस्तार) दे, और मेरी रोज़ी में बरकत दे ।

८. जब पूरा वुज़ू हो जाये तो कहे :-

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنَ التَّوَّابِیْنَ وَاجْعَلْنِیْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِیْنَ

अश हदु अल्लाइला ह इलल्लाहु वहदहू ला शरी क लहू व अश हदू अन्न मुहम्मदन अबदुहू व रसूलुह, अल्लाहुम्मज अलनी मिनत तव्वाबी न वजअलनी मिनल मु त तह हिरीन ।

मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसके बन्दे और उसके रसूल हैं । ऐ अल्लाह ! मुझ को कर दीजिये तौबह करने वालों में से और पवित्र रहने वालों में से ।

९. फिर जब मस्जिद आये तो प्रवेश करते समय पहले अपना दाहिना पांव अन्दर रखे और कहे :-

رَبِّ اغْفِرْلِیْ وَافْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

रब्बिग़ फ़िरली वफ़ तहली अबवा ब रह मतिक ।

ऐ मेरे रब ! मुझको बख़्श दे और मेरे लिये अपनी रहमत के द्वार खोल दे ।

१०. जब मस्जिद से निकले तो बांया पांव पहले निकाले और कहे :-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ وَرَحْمَتِكَ

अल्लाहुम इन्नी अस अलु क मिन फ़ज़्लि क व रहमति क ।

ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे मांगता हूं (दुनिया में) तेरा फ़ज़्ल व करम और (आख़िरत में) तेरी रहमत ।

११. जब खाना शुरू करे तो कहे :-

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰی بَرَكَةِ اللّٰهِ

बिस्मिल्लाहि व अला ब र कतिल्लाह

शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से और उसकी बरकत के साथ ।

१२. जब खाना खा चुके तो कहे :-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत अ म ना व सक़ाना व ज अ ल ना मिनल मुस्लिमीन ।

शुक्र है अल्लाह का जिसने हमको खिलाया और पिलाया, और हमको मुसलमानों में किया ।

१३. यदि किसी के यहां दावत का खाना खाये तो कहे :-

اَللّٰهُمَّ اَطْعِمْ مَنْ اَطْعَمَنِیْ وَاسْقِ مَنْ سَقَانِیْ

अल्लाहुम्म अत इम मन अत अ म नी वस्क़ि मन सक़ानी ।

ऐ अल्लाह ! जिसने मुझको खिलाया तू उसको खिला, और जिसने मुझको पिलाया तू उसको पिला ।

१४. जब सवारी पर सवार हो तो कहे:-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ سُبْحَانَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ
وَاِنَّا اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ

अलहम्दु लिल्लाहि सुबहानल्लज़ी सख़ ख़ र लना हाज़ा वमा कुन्ना लहू मुक़रिनीन व इन्ना इला रब्बिना लमुन क़लिबून ।

अल्लाह का शुक्र है । पाक है वह जिसने सवारी को हमारे वश में कर दिया और हम ख़ुद उसको अपने वश में नहीं कर सकते थे और एक दिन हम लौटकर अपने परवरदिगार के पास जाने वाले हैं ।

१५. जब यात्रा पर निकले तो अल्लाह तआला से यह दुआ करे:-

اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَیْنَا هٰذَا السَّفَرَ وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهٗ، اَللّٰهُمَّ اَنْتَ
الصَّاحِبُ فِی السَّفَرِ وَالْخَلِیْفَةُ فِی الْاَهْلِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ
وَعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَاٰبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِی الْمَالِ وَ
الْاَهْلِ وَالْوَلَدِ

अल्लाहुम्म हव्विन अलैना हाज़स स फ़ र वत्वि अन्ना बोदुहू । अल्लाहुम्म अन्तस्साहिबु फ़िस सं फ़ रि वल ख़ली फ़तु फ़िल अहलि । अल्लाहुमा इन्नी अऊज़ु बि क मिन वासाइस स फ़ रि व कआ बतिल मन ज़रि व सूइल मुन क़ ल बि फ़िल मालि वल अहलि वल व ल दि ।

ऐ अल्लाह ! हमारे लिये इस यात्रा को सरल करदे और इसकी दूरी को समेट दे । ऐ अल्लाह ! सफ़र में तू ही मेरा साथी है और मेरे पीछे तू ही मेरे घर वालों का देखने वाला है । मैं तेरी पनाह लेता हूं । यात्रा के कष्ट से और बुरी हालत देखने से और वापस लौटकर ख़राब दशा में पाने से अपने धन को, घर को और बच्चों को ।

१६. जब सफ़र से घर लौटे तो कहे :-

آئِبُوْنَ تَائِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ

आइबू न ताइबू न आबिदू न लिरब्बिना हामिदून ।

हम सफ़र से आने वाले हैं । तौबह करने वाले हैं । इबादत करने वाले हैं । अपने रब की हम्द (प्रशंसा) करने वाले हैं ।

१७. जब किसी दूसरे को विदा करे तो कहे :-

اَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِیْنَكَ وَاَمَانَتَكَ وَخَوَاتِیْمَ عَمَلِكَ

अस्तौदिउल्ला ह दी न क व अमा न त क व ख़वाती म आमालि क ।

मैं अल्लाह को सौंपता हूं तेरा दीन और तेरी हिफ़ाज़त के योग्य चीज़ें, और तेरे आमाल (कर्मों) के ख़ातमे ।

१८. जब किसी दुखी को देखे तो कहे :-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ عَافَانِىْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهٖ وَفَضَّلَنِىْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيْلًا

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आफ़ानी मिम्मब तला क बिही व फ़ज़्ज़ ल नी अला कसीरिम मिम्मन ख़ ल क तफ़ज़ीला ।

शुक्र उस ख़ुदा का जिसने मुझे दूर रखा है उस कष्ट से जिसमें तुझको डाला है, और अपनी बहुत सी मख़लूक़ (सृष्टि) पर उसने मुझे फ़ज़ीलत दी है (यह सब उसी की दया है इसमें मेरा कोई कमाल नहीं)

१९. जब किसी शहर में प्रवेश करे तो कहे :-

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهَا

अल्लाहुम्म बारिक लना फ़ीहा

ऐ अल्लाह ! हमारे लिये इस नगर में बरकत दे, और इसको हमारे लिये बरकत वाला बना दे ।

२०. जब किसी सभा से उठे तो कहे :-

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ

सुबहानकल्लाहुम्म व बिहम्दि क लाइला ह इल्ला अन त अस तग़फ़िरु क व अतूबु इलैक ।

ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पाकी बयान करता हूं और तेरी हम्द (प्रशंसा) करता हूं, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, मैं तुझ से बख़शिश चाहता हूं और तौबह करता हूं ।

एक फ़ायदे वाली बात

बहुत से लोगों को अरबी दुआयें याद करना कठिन होता है । ऐसे लोगों को चाहिये कि हर समय की दुआ का मज़मून (आशय) याद रखें और इस अवसर पर अपने शब्दों में और अपनी भाषा में उसी को अदा कर लिया करें । ख़ुदा ने चाहा तो इससे भी दुआ की पूरी बरकत और पूरा स्वाब उनको प्राप्त होगा ।